जनसत्ता सरोकार | इंडियन एक्सप्रेस समूह | सम-सामयिक | एक
जनसत्ता | 28 दिसंबर, 2025

शुक्ल पक्ष

खेमेबंदी की मजबूत दीवार में एक खुली खिड़की

भुनाना हिंदी की सबसे सक्रिय क्रिया है। अमिताभ बच्चन मार्का फिल्म की तरह हर साहित्यकार इस तरह के सवाल का सामना करता है कि तुम्हारे पास राजनीति में भुनाने के लिए क्या है? यही सवाल 'लगभग जयहिंद' के कवि से पूछा गया था। शिल्प, भाव, शब्द को लेकर लग रहा था कि यह रचानाकार नए औजारों से लैस है। या तो इधर या उधर वाली साहित्यिक सत्ता ने पूछा कि राजनीतिक प्रतिबद्धता कहां है? विनोद कुमार शुक्ल का साहित्यिक किरदार पूछ बैठा, क्या जिंदगी जीते रहना काफी नहीं है? शुक्ल ने साहित्य में ऐसे मध्य-वर्ग को चुना, जो राजनीतिक चश्मे के हिसाब से सबसे निष्क्रिय व बेकार था। जब प्रतिबद्धताओं का प्रदर्शन न हो तो साहित्य कैसा! साहित्य में हताश इस आम आदमी की तरफ शुक्ल ने हाथ बढ़ाया। हताश आदमी जब इस धीरे बोलने, धीरे चलने वाले लेखक के साथ आगे बढ़ा तो साहित्य के शुक्ल-पक्ष में एक जादुई यथार्थ का जन्म हुआ। विनोद कुमार शुक्ल के निधन के बाद हिंदी साहित्य में शुक्ल-पक्ष की अमरता को समझने की कोशिश करता सरोकार।

जनसत्ता सरोकार

बीसवीं सदी में प्रेमचंद ने साहित्य के बारे में जो कहा, उसे आगे के लिए साहित्य की शास्त्रीय परिभाषा माना गया। प्रेमचंद ने कहा था कि साहित्य राजनीति के आगे चलने वाली मशाल है। इस खांचे के तहत मुखर राजनीतिक स्वर वाले नायक के बिना साहित्य अधूरा था। दुनिया भर के साहित्य की यही खासियत रही है कि उसने खुद को किसी एक सांचे में समाने से इनकार कर दिया। हिंदी साहित्य में भी ऐसा कई बार हुआ। इस कई में एक नाम विनोद कुमार शुक्ल का भी है। उनके पक्ष पर बात करने से पहले हिंदी फिल्म का एक गीत याद आ रहा है। तेरे गिरने में भी तेरी हार नहीं/ कि तू आदमी है अवतार नहीं...। ' साहित्यिक अवतारों की भीड़ में विनोद कुमार शुक्ल आम आदमी की बात कर रहे थे।

विनोद कुमार शुक्ल गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित रहे थे। मोहनदास करमचंद गांधी की राजनीति की एक शैली थी। वैसी शैली, जिसमें बच्चे, युवा, औरत, मर्द सब राजनीतिक हो सकें। खादी के कपड़े पहनना भी राजनीतिक है, तो चरखा कातना भी। शुक्ल का साहित्य भी ऐसे ही खामोशी से आम आदमी को रच रहा था। इस साहित्य का किरदार आपको राजनीतिक नारे लगाते, किसी तरह की मशाल जलाते हुए नहीं दिखेगा। वह एक सामान्य जीवन जी रहा है। इतना सामान्य कि न तो कहीं पर उसका विरोध रेखांकित होगा, न तो उसकी जय या पराजय।

साहित्य का शुक्ल-पक्ष कहता है, 'खुश रहने के लिए बहाने ढूंढ़ने चाहिए और खुश रहना चाहिए। बाद में यही बहाने कारण बन जाते हैं।' वे कहते हैं, 'बहुत से लोग दुख का अभ्यास बचपन से करते हैं। उन्हें इस अभ्यास के लिए मैदान की आवश्यकता नहीं होती है।' शुक्ल के साहित्यिक किरदार किसी तरह के प्रशिक्षण का हिस्सा नहीं रहे हैं। क्या जीवन को जीते जाना भी किसी तरह का प्रशिक्षण हो सकता है? वह जब मनुष्य को एक इकाई की तरह देखते हैं, उसके हृदय यानी अंदरूनी जेब को टटोलते हैं, तो कहते हैं-'झुकने से जैसे जेब से/सिक्का गिर जाता है/हृदय से मनुष्यता गिर जाती है।'

साहित्य में शुक्ल पक्ष मध्य-पक्ष है। वह मध्य व्यवस्था के खिलाफ सकल संग्रामी नहीं दिखता है। बिना किसी उत्तेजना के उसका खामोश बैठा रहना बीसवीं सदी की शास्त्रीय परंपरा में अराजनीतिक होना दिख जाता है। अस्मितावाद के चरम काल में वे अपने साथ किसी भी तरह की अस्मिता नहीं ओढ़ते। उनका आम आदमी सोना, उठना, घर के कामकाज, 'बाजार का एक दिन ' जैसी गतिविधियां बिना किसी राजनीतिक उद्घोष के करता है। बेफरियादी साहित्यिक किरदारों को देख कर एकबारगी अचरज होता है कि लेखक ने इन्हें किसी तरह की फरियाद से वंचित क्यों रखा है? शुक्ल तो शिकायत को लेकर इतने निर्मोही हैं कि शोर मचाती उपेक्षा के बीच धीमे-धीमे कहते हैं-

जो मेरे घर कभी नहीं आएंगे
मैं उनसे मिलने
उनके पास चला जाऊंगा ।
एक उफनती नदी कभी नहीं आएगी
मेरे घर
नदी जैसे लोगों से मिलने
नदी किनारे जाऊंगा।

साहित्य का शुक्ल-पक्ष कहता है, 'खुश रहने के लिए बहाने ढूंढ़ने चाहिए और खुश रहना चाहिए। बाद में यही बहाने कारण बन जाते हैं।' वे कहते हैं, 'बहुत से लोग दुख का अभ्यास बचपन से करते हैं। उन्हें इस अभ्यास के लिए मैदान की आवश्यकता नहीं होती'

शुक्ल-पक्ष में पाठक साहित्य की सामान्य सी दिखती चीजों के साथ इतने सामान्य तरीके से आगे बढ़ता है कि थोड़ी देर बाद उसकी आम जिंदगी भी उसमें घुल-मिल जाती है। शुक्ल के किरदार अपनी आम जिंदगी को सफल या असफल के खांचे में रखते ही नहीं हैं, तो फिर शर्मिंदा कहां से होंगे। न तो इनकी जिंदगी में प्रतिबद्धताओं के प्रदर्शन का वैसा कोई गर्वोक्ति भरा क्षण आता है कि देखो, यहां से चला था तो यहां पहुंच गया। प्रतिबद्धताओं के चरम की अनुपस्थिति की वजह से पाठक इनके शब्दों से निकल नहीं पाता है, जब निकलता है, तो उसके ऊपर भी एक खामोशी तारी होती है। पाठकों को भी वहां अपने लिए एक ओट दिखता है, कि उसे अब वहां कोई नहीं देखेगा। अपने हिस्से का एकांत पाकर वह निश्चिंत सा हो जाता है।

शुक्ल-पक्ष के साहित्य की सबसे बड़ी खासियत यह है कि जो एक बार शुक्ल का पाठक हुआ, वह उन्हें कभी छोड़ कर नहीं गया। साहित्यकार की तरह उनका पाठक भी बार-बार लौट आता व्यक्ति है। हताशा में बैठे हुए उनके किरदार पाठकों का हाथ पकड़ कर मानो कहते हैं-थोड़ा बैठ जाओ। हताश होना भी एक साहित्यिक क्रिया हो सकती है, यह शुक्ल संभव कर दिखाते हैं। वे कहते हैं-

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था
व्यक्ति को मैं नहीं जानता था
हताशा को जानता था
इसलिए मैं उस व्यक्ति के पास गया
मैंने हाथ बढ़ाया
मेरा हाथ पकड़कर वह खड़ा हुआ
मुझे वह नहीं जानता था
मेरे हाथ बढ़ाने को जानता था
हम दोनों साथ चले
दोनों एक दूसरे को नहीं जानते थे
साथ चलने को जानते थे।

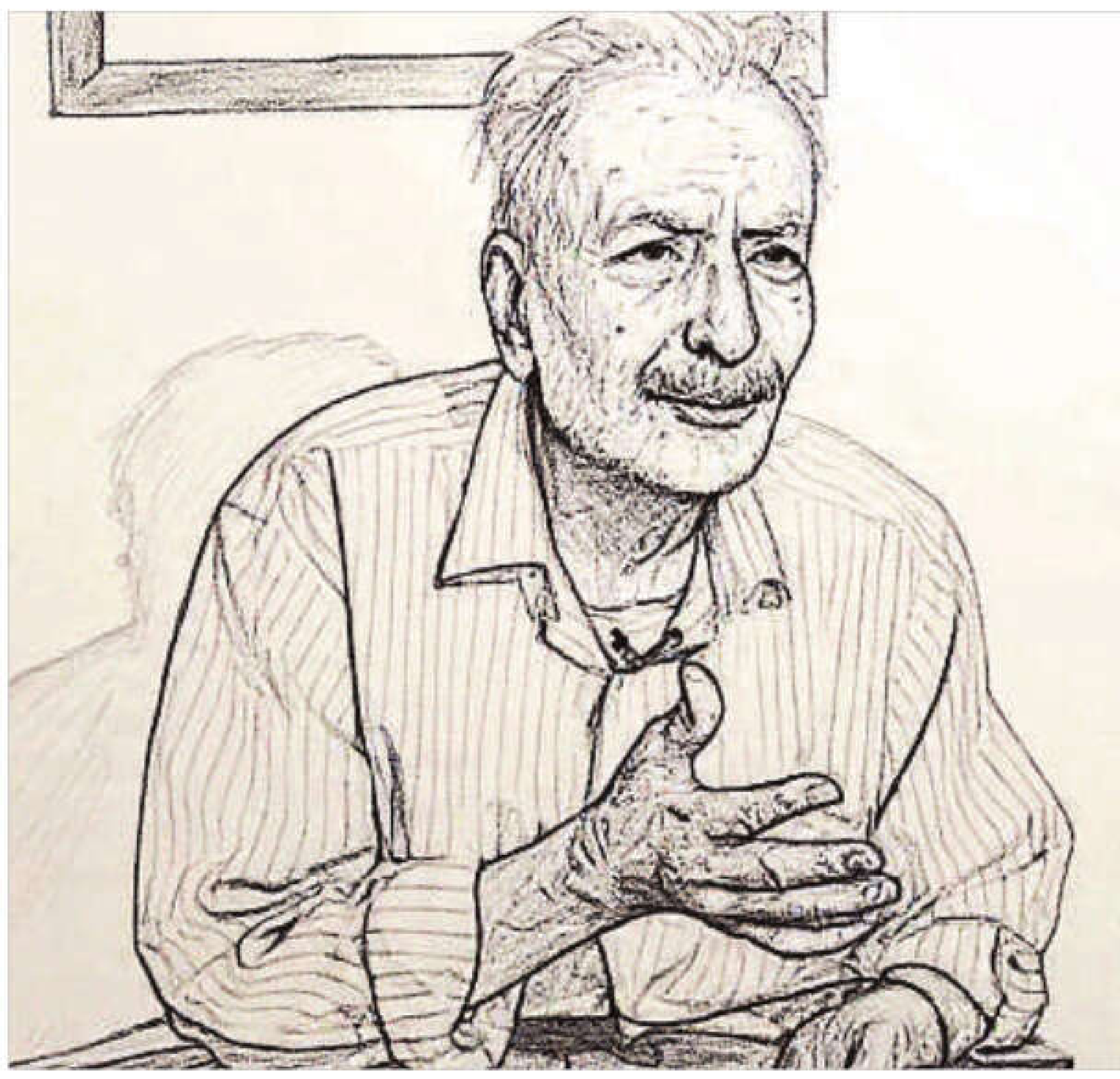

इस तरह साथ चलने लगना ही वह शैली है, जिससे शुक्ल-पक्ष को जादुई यथार्थ का नाम मिला था। कोई उपदेशक भी किसी की हताशा वैसे, खत्म नहीं कर सकता, जैसे उसकी तरफ बढ़ा हुआ हाथ। इस बढ़े हुए हाथ में कोई नाटकीयता नहीं है, बल्कि मनुष्यता की सादगी है। आपने साथ देने के पहले हल्ला मचाया, साथ देने का आडंबर किया, इश्तहार लगाया। अगर एक हताश को अपने जैसा एक हताश हाथ नहीं मिला, तो वह वहीं पर अपनी इति मान लेगा। किसी हताश के लिए इससे बड़ी हताशा और क्या हो सकती है कि उसके आस-पास कहीं हताशा नहीं। क्योंकि आस-पास की हताशा को आडंबरों से ढक दिया गया है। शुक्ल-पक्ष सबसे अराजनीतिक शब्द हताशा को भी उत्साहित कर देता है।

साथ चलने लगना ही वह शैली है, जिससे शुक्ल-पक्ष को जादुई यथार्थ का नाम मिला था। कोई उपदेशक भी किसी की हताशा वैसे, खत्म नहीं कर सकता, जैसे उसकी तरफ बढ़ा हुआ हाथ। इस बढ़े हुए हाथ में कोई नाटकीयता नहीं है।

आज जब वैश्विक स्तर पर भाषाई अस्मिता को लेकर अलगाव चल रहा है, उस समय शुक्ल की कविता भाषाई झगड़े की संकीर्णता से निकलने के लिए प्रेरित करती है। कवि की इच्छा तो देखिए, वह नई भाषा को अपनी मातृभाषा बनाने के लिए बार-बार जन्म लेना चाहते हैं। भाषाई सद्भाव को लेकर यह धरती की निर्दोष अभिव्यक्तियों में से एक है-

अपनी भाषा में शपथ लेता हूं
कि मैं किसी भी भाषा का
अपमान नहीं करूंगा
और मेरी मातृ भाषा
हर जन्म में बदलती रहे
इसके लिए मैं बार-बार
जन्म लेता रहूं-
यह मैं जीव-जगत से कहता हूं
चिड़ियों, पशुओं, कीट-पतंगों से भी।

विनोद कुमार शुक्ल धीरे-धीरे बोलते थे और साहित्य की दुनिया में मध्यवर्गीय साजो-सामान के साथ धीरे-धीरे चले। अपने धीरे-धीरे चलने वाले शब्दों के जादू से उन्होंने अपना एक बड़ा पाठक-वर्ग तैयार किया। उनके शब्दों में मनुष्यता का ऐसा जादू था कि वे कविता, कहानी, उपन्यास के साथ बच्चों के लिए भी लिखने का हौसला जुटा सके।

हिंदी साहित्य में शुक्ल-पक्ष का मध्य-काल इतिहास के घोषित मध्य-काल से अलग है। यहां घर के बर्तन, आम का पेड़, जूते, घर के बाहर की सड़क के बारे में बात हो रही है। विनोद कुमार शुक्ल के जरिए हिंदी साहित्य को ऐसा मध्य-काल मिला जिसे आम पाठक तो बहुत मिले, लेकिन वह अपने किसी भी समकालीन राजनीतिक व्यवस्था के अनुकूल नहीं रहा। इसकी कोशिश भी नहीं की। दक्षिण उन्हें मजबूरन स्नेह देने में जुट गया क्योंकि वाम की उपेक्षा का आरोप था और वाम की भृकुटि तनी रहती थी कि दक्षिण से जुड़े को क्यों रास आया। इन दोनों अतियों के बीच जो मध्य है, वह शुक्ल के साथ चुपचाप चल पड़ा। लगातार चलती हुई चुप्पी जो राजनीति को अखर रही थी, वह पाठकों का अपना हिस्सा, अपना कोना बन गई।

विनोद कुमार शुक्ल मुक्तिबोध से बहुत प्रभावित थे। शुक्ल राजनांदगांव के थे और मुक्तिबोध वहां के कालेज में पढ़ाने के लिए आए थे। अपनी बातचीत में वे मुक्तिबोध का जिक्र करते रहे हैं। शुक्ल अपनी कविताएं लेकर मुक्तिबोध से मिलने गए थे। मुक्तिबोध, ठहरे मुक्तिबोध। उन्होंने उस उत्साही युवक को समझाया कि कविता लिखना बहुत कठिन काम है। मुक्तिबोध ने उन्हें सलाह दी कि पढ़-लिख कर नौकरी करो और अपनी मां की मदद करो। लेकिन शुक्ल ने हार नहीं मानी और मुक्तिबोध के पास कविताएं लेकर जाते रहे। इन्हीं कोशिशों की बदौलत, बजरिए मुक्तिबोध शुक्ल की कविताएं श्रीकांत वर्मा तक दिल्ली पहुंच गईं और वे पाठकों के हो गए।

विनोद कुमार शुक्ल अब नहीं हैं, तो उनके घर के बाहर की खिड़की के पास बहुत भीड़ है। शुक्ल ने भीड़ की परवाह कब की थी? वे तो खिड़की के बाहर भी अकेले हताश बैठे आदमी को ही पसंद करते थे।

शुक्ल पक्ष की साहित्यिक दीवार की खिड़की के पास शोर बढ़ रहा है। उनके चुप्पा पाठक भी बोलने के लिए निकल पड़े हैं। अब शुक्ल-पक्ष का नया जीवन शुरू हुआ है। देह के पार का जीवन। शब्दों का जीवन। उनके मध्य में फंसा पाठक यह नहीं कह पा रहा-शुक्ल 'कहते थे', वे अभी भी 'कहते हैं', का इस्तेमाल कर रहे हैं। लेखक का जीवन तो पाठक तय करते हैं-अभी उनके साहित्य को समझने के लिए उम्र पड़ी है। शुक्ल का मूल्यांकन अभी जवां होगा। नई पीढ़ी उनके बारे में नए शब्दों में बात करेगी, जैसे अपने समय में उन्होंने नए शब्द गढ़े थे। भाषा की लड़ाई दो मुल्कों, दो बिरादरियों की ही नहीं, दो पीढ़ियों की भी होती है। शास्त्रीय संगीत सुनने वालों ने सुगम संगीत सुनने वालों को कोसा और अभी उस भाषा को कोसा जा रहा जो नई पीढ़ी के शब्दों से लैस है। इन नए शब्दों पर भी पुरानी दुनिया उसी तरह अचरज करेगी, जैसे शुक्ल के शब्दों पर किया था। इन सबके बीच शुक्ल की आवाज गूंजती रहेगी-

मैं यहीं रहूंगा
लड़ता भिड़ता

मैं अब तक ठगा रहा हूं...

जिस लेखक से उम्मीद की जाती रही थी कि उसका लेखन सत्ता के प्रतिरोध से जरा भी इधर-उधर नहीं होना चाहिए, अगर वह प्रकाशकों के खिलाफ अपना मुखर प्रतिरोध दर्ज कराए तब? ऐसा साहसी कदम वह लेखक उठाए, जिन पर आरोप रहा है कि उनका साहित्य शोषण को लेकर खामोश रहा है। हिंदी साहित्य में यह संभव किया था विनोद कुमार शुक्ल ने।

साहित्य का यह कड़वा सच तब सामने आया जब अभिनेता व रचनाकार मानव कौल विनोद कुमार शुक्ल से मिलने पहुंचे, और उनके साथ हुई बातचीत साझा की। मानव कौल ने अपनी इंस्टाग्राम की पोस्ट में लिखा था कि पिछले एक साल में छपी तीन किताबों के लिए विनोद कुमार शुक्ल को दो प्रकाशकों की ओर से 6000 और 8000 रुपए मिले। मतलब देश का सबसे बड़ा लेखक साल के 14000 रुपए ही कमा रहा है। कौल का आरोप था कि शुक्ल के पत्र-व्यवहार का प्रकाशक महीनों तक जवाब नहीं देते हैं।

मार्च 2022 में विनोद कुमार शुक्ल ने एक वीडियो में गरिमाहीन रायल्टी को लेकर अपनी व्यथा कही। शुक्ल के इस आरोप से हिंदी साहित्य का बड़ा तबका असहज हो उठा। खासकर हिंदी साहित्य की केंद्रीय परिधि का वह तबका जो इन दोनों प्रकाशन संस्थानों से छपता रहा है, और जो अन्य कारणों से इतना संपन्न है कि रायल्टी के सवाल उठाने को अशोभनीय मानता है।

विनोद कुमार शुक्ल ने वीडियो में रायल्टी को लेकर जो सवाल उठाए, उसमें उनके शब्द थे-मुझे अब तक मालूम नहीं हुआ था कि मैं ठगा रहा हूं। अनुबंधपत्र कानून की भाषा में होते हैं। एकतरफा शर्तें होती हैं, और किताबों को बंधक बना लेती हैं। इस बात का अहसास मुझे बहुत बाद में हुआ, अभी-अभी हुआ। हम तो विश्वास में काम करते हैं। नौकर की कमीज और दीवार में एक खिड़की रहती थी के समय तो ई-बुक और किंडल जैसी चीजें नहीं थीं। पर ये दोनों किताबें ई-बुक, किंडल में हैं। 'कभी के बाद अभी' मेरा कविता संग्रह है। रायल्टी का जो ये जो स्टेटमेंट भेजते हैं तो इस किताब का उस स्टेटमेंट में पिछले कुछ वर्षों से उल्लेख ही नहीं करते हैं। अब चूंकि मैं एक ऐसी उम्र में पहुंच गया हूं, जहां मैं अशक्त हूं और बहुत सी चीजों पर ध्यान नहीं दे पाता, कुछ कर भी नहीं पाता । तो, ये रह जाती हैं और मैं ठगाता रहता हूं।'

रायल्टी पर वीडियो सामने आने के बाद विनोद कुमार शुक्ल के पुत्र शाश्वत शुक्ल ने समाचार एजंसी पीटीआइ से कहा था कि उनके पिता का भरोसा पूरी तरह टूट चुका था, इसलिए उन्होंने वीडियो में ये बातें कहीं जिसे एक स्थानीय मंच ने प्रसारित किया। हालांकि प्रकाशकों ने उनके इस आरोप को खारिज किया था, और इस तरह के 'मीडिया ट्रायल' पर सवाल भी उठाए थे। रायल्टी को लेकर शुक्ल का लगाया आरोप हर उस वक्त सामने आता रहेगा जब-जब लेखक और प्रकाशक के संबंधों पर बात होगी।

हाथी अचानक एक दिन नहीं जा सकता

विनोद कुमार शुक्ल पाठकों के लेखक हैं। यह भी एक विरोधाभास है कि गरिमाहीन रायल्टी को लेकर जिस लेखक ने बहस छेड़ी, उसी लेखक पर इस बात को लेकर बहस छिड़ गई कि भला तीस लाख की रायल्टी कैसे मिल सकती है? भला इतने कम समय के अंतराल में इतनी किताब कैसे बिक सकती है। यह संभव किया 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' ने। साधारण जीवन को असाधारण तरीके से बरतने के कथा-शिल्प ने रघुवर प्रसाद और सोनसी जैसे आम किरदारों को इतना खास बना दिया कि यह 'जेन जी' की भी पहली पसंद बन गई। रघुवर प्रसाद का हाथी पर कालेज जाना, यथार्थ और कल्पना के बीच का वह पुल है, जिससे पाठक इस पार और उस पार होते रहते हैं। दावा किया गया कि महज 2025 में इस पुस्तक की 87,000 से ज्यादा प्रतियां बिकीं और लेखक को तीस लाख की रायल्टी दी गई।

'दीवार में एक खिड़की रहती थी', को पाठकों ने एक जादुई किताब का दर्जा दे डाला है। इस खिड़की से सूरज, चांद, तालाब, हाथी दिखता है। कठोर यथार्थ के प्रतीक में खिड़की वह कोमल कोना है जो उस पार हर तरह की उम्मीदों को खास रूप-रंग दे जाता है। मध्यवर्गीय अभाव के बीच यह खिड़की वह भाव है जो प्रेम को खोजने का हौसला बनाए रखता है। शुक्ल कहते हैं, 'हाथी अचानक एक दिन नहीं जा सकता, वह जिस दिन जाएगा, रोज की तरह जाएगा।' शुक्ल जी अचानक नहीं गए हैं। वे अपने लिए हाथी जैसी विशालकाय जगह छोड़ गए हैं। पाठकों पर यह जादू तारी रहेगा कि वह जगह कभी खाली नहीं दिखेगी।

व्यापार समझौतों के समांतर

प्रसंगवश

पीएस वोहरा

> **अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के इस दूसरे कार्यकाल के दौरान उनकी शुल्क नीतियों ने पूरे विश्व को दुविधा में डाला हुआ है और भारत इस पक्ष पर शुरू से ही आर्थिक संकट में है, क्योंकि ट्रंप की ओर से भारत के साथ जानबूझ कर एकतरफा पक्षपात किया जा रहा है। इन सबके बीच भारतीय रुपया डालर की तुलना में लगातार कमजोर होता जा रहा है। दरअसल, डालर का ऐतिहासिक स्तर 91 रुपए पर पहुंच जाना भी आर्थिक संकट का प्रतीक है।**

वर्ष 2025, भारतीय अर्थव्यवस्था को मुक्त व्यापार समझौते के आधार पर कई नए आयाम देकर गया है। इस वर्ष केंद्र सरकार ने मुख्य रूप से तीन मुक्त व्यापार समझौतों को अपनी झोली में डाला है। सबसे पहले, जुलाई 2025 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी लंदन यात्रा के दौरान पिछले चार वर्षों से हो रही वार्ता के बाद ब्रिटेन के प्रधानमंत्री स्टार्मर के साथ मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किया। उसके बाद दिसंबर में भारत ने इस पक्ष पर तेजी से आगे बढ़ते हुए तीसरे सप्ताह में दो देश, ओमान और न्यूजीलैंड के साथ ये समझौते किए। न्यूजीलैंड के साथ हुआ समझौता तीव्र गति से आगे बढ़ा और मात्र नौ महीने के समय में ही इस पर आपसी सहमति बन गई। 22 दिसंबर को दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने टेलीफोन वार्ता पर इसे सहमति प्रदान कर दी। वहीं ओमान के साथ समझौते के लिए बीते 18 दिसंबर को दोनों देशों के विदेश मंत्रियों ने ओमान में प्रधानमंत्री मोदी की विदेश यात्रा के दौरान इस पर हस्ताक्षर किए। पहले से ही भारत इस पक्ष पर मारीशस, दुबई, आस्ट्रेलिया और यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ के साथ एफटीए (फ्री-ट्रेड-एग्रीमेंट) कर चुका है।

सहमति का लक्ष्य

मुक्त व्यापार समझौता यानी एफटीए दो या दो से अधिक देशों के बीच एक ऐसा समझौता होता है, जिसमें देश वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार को प्रभावित करने वाले कुछ दायित्वों, निवेशकों के संरक्षण और बौद्धिक संपदा के अधिकारों से संबंधित विभिन्न विषयों पर आपसी सहमति बनाते हैं। मुख्य रूप से इस प्रकार की सहमति का मकसद आपसी व्यापारिक लेन-देन पर लगने वाले विभिन्न करों की दरों को या तो कम करना होता है या पूरी तरह खत्म करना, ताकि वित्तीय मुनाफा बढ़ सके। अन्य मकसद दोनों देशों के बीच नागरिकों के लिए रोजगार के अवसरों को बढ़ाना और वित्तीय निवेश के विभिन्न अवसर को पैदा करना होता है। भारत इस पक्ष पर तेजी से आगे बढ़ता दिख रहा है और उसका यह रुख विभिन्न मुल्कों को अचंभित और चिंतित कर रहा है। यकीनन अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के इस दूसरे कार्यकाल के दौरान उनकी शुल्क नीतियों ने पूरे विश्व को दुविधा में डाला हुआ है और भारत इस पक्ष पर शुरू से ही आर्थिक संकट में है, क्योंकि ट्रंप की ओर से भारत के साथ जानबूझ कर एकतरफा तौर पर पक्षपात किया जा रहा है। इन सबके बीच भारतीय रुपया डालर की तुलना में लगातार कमजोर होता जा रहा है। दरअसल, डालर का ऐतिहासिक स्तर 91 रुपए पर पहुंच जाना भी आर्थिक संकट का प्रतीक है। इन सबके बीच भारत सरकार द्वारा विश्व के कई विकसित मुल्कों के साथ अपनी व्यापारिक साझेदारी को एफटीए के माध्यम से बढ़ाना एक अच्छा कूटनीतिक कदम है और मजबूत आर्थिक नीति भी।

हित का प्रश्न

इन तीनों मुख्य समझौतों पर अगर भारतीय पक्ष की बात की जाए तो भारत और इंग्लैंड के पारस्परिक व्यापारिक लेन-देन में भारत मुनाफे में रहता है। चालू वित्तीय वर्ष में नवंबर, 2025 तक के आंकड़ों के तहत ब्रिटेन ने भारत को 19 बिलियन पाउंड के निर्यात किए, वहीं भारत से उसने करीब 28 बिलियन पाउंड के बराबर आयात किए। ब्रिटेन के लिए भारत बहुत महत्त्वपूर्ण इसलिए भी है कि वह उसका दसवां सबसे बड़ा वैश्विक व्यापारिक साझेदार है। हालांकि ब्रिटेन के कुल निर्यात में भारत की हिस्सेदारी मात्र तीन फीसद के आसपास ही है। वहीं भारत के पक्ष से भी ब्रिटेन इसलिए बहुत जरूरी है, क्योंकि इससे अमेरिका और चीन पर भारत की निर्भरता कुछ कम होती है। भारत मुख्य रूप से इंग्लैंड से सोना, लोहा, अल्युमिनियम, शराब और विभिन्न कारें आयात करता है। इसलिए संभव है कि करों की दर में कमी से इसका प्रत्यक्ष फायदा उपभोक्ता को होगा और कच्चे माल के मूल्यों में कमी भी देखने को मिलेगी। इसके अलावा, भारत ब्रिटेन में कपड़ों की आपूर्ति में विश्व में चौथा सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता देश है और इस समझौते के बाद भारत की साझेदारी बढ़ने की उम्मीद है, जिससे भारत के कपड़ा उद्योग को भी बहुत अधिक मुनाफा होगा।

संतुलन की कसौटी

ओमान के साथ पारस्परिक लेनदेन में भारत घाटे में रहता है और वर्तमान में यह तकरीबन दो बिलियन अमेरिकी डालर के आसपास है। अक्तूबर, 2025 के आंकड़ों के आधार पर ओमान ने भारत को 628 मिलियन अमेरिकी डालर के बराबर निर्यात किया, वहीं भारत से मात्र लगभग 340 मिलियन अमेरिकी डालर के बराबर ही खरीदा है। ओमान के साथ किया गया मुक्त व्यापार समझौता भारत के लिए कच्चे तेल और गैस की आपूर्ति में और उनके मूल्यों को घरेलू बाजार में नियंत्रित करने में एक मुख्य भूमिका निभाने वाला है। वहीं दोनों देशों की कर की दरों की समाप्ति पर आपसी सहमति से भारत के चावल उद्योग को इससे बहुत अधिक मुनाफा मिलेगा। ओमान में करीब आठ लाख भारतीय रहते हैं और उनकी व्यक्तिगत आय में भी इस समझौते से बढ़ोतरी होगी, जिससे भारत को वार्षिक स्तर पर करीब दो बिलियन अमेरिकी डालर के बराबर 'रेमिटेंस' की प्राप्ति की आशा है।

न्यूजीलैंड और भारत के आपसी लेन-देन में भारत फायदे में रहता है। जून, 2025 तक के आंकड़ों के मुताबिक, भारत ने उसे जहां तकरीबन 3.68 बिलियन अमेरिकी डालर निर्यात किए हैं, वहीं उससे मात्र 1.79 बिलियन डालर के आसपास ही आयात किए। भारत-न्यूजीलैंड से मुख्य तौर पर डेयरी उत्पाद, ऊन इत्यादि खरीदता है और न्यूजीलैंड को मुख्य रूप से दवाइयां और रिफाइनरी पेट्रोलियम उत्पाद विक्रय करता है। न्यूजीलैंड और भारत के बीच हुआ मुक्त व्यापार समझौता मुख्य रूप से भारत के सेवा क्षेत्र के अंतर्गत आइटी कंपनी, पर्यटन, बैंकिंग क्षेत्र, स्वास्थ्य आदि को वहां विस्तार करने का मौका देगा और इसके माध्यम से विभिन्न भारतीय पेशेवरों के लिए रोजगार की संभावनाएं न्यूजीलैंड में खुलेंगी। वर्तमान समय में न्यूजीलैंड में तकरीबन तीन लाख भारतीय रहते हैं, जो वहां की आबादी का पांच फीसद है।

डालर का बोझ

अभी यह समझना बाकी है कि क्या भारत इन सभी देशों के साथ हो रहे आपसी लेन-देन को डालर से दूर रखकर कर सकता है। अगर ऐसा संभव होता है, तो यकीनन डालर की तुलना में भारतीय रुपए में हो रही कमजोरी पर लगाम लग सकती है। अमेरिकी शुल्क की दरों के कारण मई से लेकर नवंबर तक भारत का अमेरिका को होने वाले निर्यात में लगभग 21 फीसद की कमी आ चुकी है और इससे उबरने के लिए भारत में घरेलू स्तर पर जीएसटी में कटौती पहले से ही कर दी गई। फिर भी भारत को एफटीए के पक्ष पर सकारात्मक ही देखा जाना चाहिए।

नफरत के विरुद्ध

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

> **अभी से मालूम होने लगा है कि धर्मनिरपेक्षता और बहुलवाद की कोई जगह नहीं होगी हिंदू राष्ट्र में। कहने का मतलब यह है कि भारत के संविधान के लिए इस हिंदू राष्ट्र में कोई जगह नहीं होने वाली है और ऐसा अगर होता है कभी, तो वह दिन दूर नहीं है जब भारत के अंदर उतनी ही अराजकता देखने को मिलेगी जो आज दिखती है बांग्लादेश और पाकिस्तान में।**

भारत अभी तक हिंदू राष्ट्र नहीं बना है, लेकिन हिंदू राष्ट्र की कुछ झांकियां दिखने लगी हैं उन राज्यों में जहां भारतीय जनता पार्टी की सरकारें हैं। पिछले सप्ताह जैसे-जैसे क्रिसमस करीब आया बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद के 'सिपाही' फैल गए। जिन मालों के बाहर क्रिसमस की सजावट की गई थी, उनके सामने ये 'सिपाही' प्रकट हुए तोड़फोड़ करने। जिन स्थलों पर ईसाई लोग इकट्ठा हुए थे ईसा मसीह के जन्मदिन को मनाने वहां भारतीय जनता पार्टी और विश्व हिंदू परिषद के सदस्य पहुंच गए लोगों को टोकने।

इन हरकतों के वीडियो सोशल मीडिया पर दिखे। जबलपुर के एक गिरिजाघर में भारतीय जनता पार्टी की विधायक दिखीं एक दिव्यांग महिला को डांटती हुईं। विधायक गुस्से में चिल्ला रही थीं यह कहते हुए कि धर्मांतरण नहीं होने देंगी। दिल्ली से एक वीडियो दिखा, जिसमें कुछ बच्चे सेंटा क्लाज की लाल टोपी पहने हुए हैं। उनको पकड़ कर जबरदस्ती टोपियां उतारते दिखे हिंदुत्व के 'सिपाही' यह कहते हुए कि 'क्रिसमस मनाना है, तो अपने घरों में जाकर मनाएं'। अनुमान है कि ऐसी कोई साठ से लेकर सौ घटनाएं हुईं और तकरीबन सारी हुईं भाजपा शासित राज्यों में। एक भी घटना के बाद न किसी को दंडित किया गया और न ही किसी मुख्यमंत्री ने अपनी आवाज ऊंची करके इन हिंदुत्व के सिपाहियों को टोका। ईसाइयों की आबादी भारत में दो फीसद से भी कम है, लेकिन आज के 'न्यू इंडिया' में इनको क्रिसमस भी नहीं मनाने दिया जा रहा है, बावजूद इसके कि भारत का संविधान इजाजत देता है धार्मिक आजादी की।

हिंदू राष्ट्र की मजबूत जड़ें दिखती हैं अगर किसी राज्य में, तो वह है उत्तर प्रदेश। योगी आदित्यनाथ के शासन में एक कानून पारित किया गया है, जिसके तहत रिश्वत या शादी करके किसी का धर्मांतरण करना गंभीर अपराध है। इसकी सजा है सात साल जेल। नतीजा यह कि सौ से ज्यादा ईसाई लोग उत्तर प्रदेश की जेलों में बंद हैं 'जबरदस्ती धर्मांतरण' करने की सजा भुगतते हुए। समस्या यह है कि साबित करना बहुत मुश्किल है कि धर्मांतरण जबरदस्ती किसी का हुआ है या उनकी मर्जी से। मगर कानून इतना कड़ा है अब कि किसी को भी जेल भेजा जा सकता है।

उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था इतनी अजीब हो गई है कि एक तरफ धर्मांतरण को गंभीर अपराध माना जाता है और दूसरी तरफ हत्या तथा बलात्कार को इतना गंभीर अपराध नहीं! इसलिए योगी सरकार की कोशिश थी उन लोगों के खिलाफ मुकदमा वापस लेना, जिन्होंने मोहम्मद अखलाक को पीट-पीट कर मार डाला था बिसाहड़ा गांव में दस साल पहले। हिंसक भीड़ ने उसको और उसके बेटे को घर के अंदर से घसीट कर सड़क पर मारा इस शक पर कि उन्होंने अपने फ्रिज में प्रतिबंधित मांस रखा हुआ था। कानून को हाथ में लेकर हत्या करने की यह पहली घटना थी मोदी के राज में। भीड़ में से अठारह लोगों के खिलाफ मुकदमा चल रहा है जो सब जमानत पर हैं। पूरी तरह रिहा हो जाते आज अगर अदालत ने दखल देकर उत्तर प्रदेश सरकार के फैसले को पलट न दिया होता।

पिछले सप्ताह कुलदीप सिंह सेंगर की सजा कम की दिल्ली की एक अदालत ने। भाजपा के इस विधायक को उम्रकैद की सजा दी गई थी 2017 में एक नाबालिग बच्ची से उन्नाव में बलात्कार करने के लिए। दिल्ली की अदालत ने कम की सजा इस आधार पर कि पाक्सो के तहत विधायक को सरकारी अधिकारी नहीं माना जा सकता है। सेंगर जेल में ही रहेगा इसलिए कि जिस बच्ची का बलात्कार किया था उसने, उसके पिता की हत्या भी की थी। पिछले सप्ताह राहुल गांधी से मिल कर इस बच्ची और उसकी मां ने किसी कांग्रेस शासित राज्य में बसाने की गुहार लगाई थी। वह पीड़ित अब शादीशुदा है, लेकिन उसने बयान दिया कि जब उसने सेंगर की सजा कम किए जाने की खबर सुनी, तो उसके मन में आत्महत्या करने का विचार आया।

योगी आदित्यनाथ गर्व से अपने आपको बुलडोजर बाबा कहते हैं, लेकिन उनके बुलडोजर कभी हिंदू अपराधियों के घर तोड़ने नहीं पहुंचते हैं। मुसलमानों के घर टूटते हैं बिना उनके अपराध को किसी अदालत में साबित किए हुए। हिंदुओं को रिहा किया जाता है, तब भी जब उनके खिलाफ अदालतों में फैसले सुनाए जाते हैं। क्या ऐसी उल्टी-पुल्टी होगी हिंदू राष्ट्र में कानून प्रणाली? क्या धर्म को देख कर जेल भेजे जाएंगे लोग? क्या धर्म को देख कर बुलडोजर पहुंचेंगे लोगों के घर तोड़ने बावजूद इसके कि सर्वोच्च न्यायालय ने 'बुलडोजर न्याय' को गलत कहा है?

कौन जाने कि कभी पूरे भारत को हिंदू राष्ट्र में तब्दील कर पाएंगे भारतीय जनता पार्टी और संघ परिवार, लेकिन अभी से मालूम हो गया है कि ऐसे राष्ट्र में सिर्फ हिंदुओं को अव्वल दर्जे का नागरिक माना जाएगा। अभी से मालूम होने लगा है कि धर्मनिरपेक्षता और बहुलवाद की कोई जगह नहीं होगी हिंदू राष्ट्र में। कहने का मतलब यह है कि भारत के संविधान के लिए इस हिंदू राष्ट्र में कोई जगह नहीं होने वाली है और ऐसा अगर होता है कभी, तो वह दिन दूर नहीं जब भारत के अंदर उतनी ही अराजकता देखने को मिलेगी जो आज दिखती है बांग्लादेश और पाकिस्तान में।

इन देशों का नाम आ ही गया है, तो क्यों न संघ परिवार से यह भी पूछा जाए कि जब आप अखंड भारत की बातें करते है, क्या याद यह नहीं रहता कि भारत अगर अखंड होता तो उसमें मुसलिम आबादी हिंदुओं से अधिक न होती? सवाल महत्त्वपूर्ण है इसलिए कि लगता है कि हिंदुत्व के इन पहरेदारों ने गहराई से सोच कर अपनी विचारधारा नहीं तैयार की है। तैयार की गई है नफरत को आधार बना कर जो अक्सर कमजोर आधार साबित होता है।

सोच में संशोधन

संदर्भ

राकेश सिन्हा

> **कट्टरपंथियों पर लगाम लगाना तात्कालिक आवश्यकता है, मगर बंगाली अस्मिता को समृद्ध करने की योजना को गैर-राजनीतिक एवं गैर सांप्रदायिक तरीके से लागू करना दीर्घकालिक समाधान है। समय के साथ सोच में संशोधन ही संकल्पित लक्ष्य तक पहुंचता है। बांग्लादेश की राष्ट्रीयता वास्तव में भारत की उपराष्ट्रीयता है। मगर भारत की धर्मनिरपेक्षवादी राजनीति हमारी अपनी संस्कृति और दर्शन का खंडित रूप दुनिया के सामने प्रस्तुत करती है।**

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हिंसा बेरोक-टोक हो रही है। यह माना जाता है कि इस तरह की घटनाओं के पीछे कोई कारण होता है, मगर यह अकारण हो रहा है। इसके पीछे न तो व्यावसायिक, न ही राजनीतिक या किसी अन्य प्रकार की प्रतिद्वंद्विता है। यह कई दशकों से सुनियोजित तरीके से हो रहा है। तभी तो 1951 में पूर्वी पाकिस्तान, जो अब बांग्लादेश है, वहां हिंदुओं की जनसंख्या बाइस फीसद से घटकर 2022 में छह फीसद से भी कम रह गई है। ढाका यूनिवर्सिटी के अर्थशास्त्र विभाग के प्राध्यापक अब्दुल बरकत ने अपनी पुस्तक 'रिफार्मिंग एग्रीकल्चर लैंड एंड वाटर बाडीज इन बांग्लादेश' में बताया है कि वर्ष 1991 से 2001 और 2001 से 2012 के बीच क्रमशः 767 और 774 हिंदू प्रत्येक दिन 'गायब' होते रहे हैं। इसका तात्पर्य है कि इस दौरान पांच लाख से अधिक हिंदू मारे गए या उनका धर्मांतरण हुआ अथवा उन्हें देश की सीमा से बाहर कर दिया गया।

पाकिस्तान में तो पहले ही गिने-चुने हिंदू रह गए हैं और अफगानिस्तान में उनका नामोनिशान नहीं बचा है। वर्ष 1909 में कर्नल यूएन मुखर्जी ने अपनी पुस्तक 'ए डाइंग रेस' में हिंदू को मृतप्राय नस्ल बनने के आसन्न खतरे की चेतावनी दी थी। तब उसका संदर्भ हिंदुओं और मुसलमानों की प्रजनन दर में अंतर के कारण दोनों के बीच जनसंख्या अनुपात में परिवर्तन था। मुखर्जी के सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण में कई पहलुओं को उजागर किया गया था। उन्होंने हिंदुओं के पढ़े-लिखे, धनाढ्य और कथित उच्च वर्गों में कम पढ़े-लिखे गरीब तथा कथित निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्गों के प्रति असंवेदनशीलता और उदासीनता को भी इस गिरावट में एक कारण बताया है। यह भारत के लिए कुछ हद तक अब भी प्रासंगिक है। मगर अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश में हिंदुओं का मृतप्राय नस्ल बनने का कारण लक्षित सांप्रदायिक हिंसा है। नेहरू-लियाकत समझौता (1950) बहुत हद तक इसके लिए जिम्मेदार है। इसने अल्पसंख्यकों की जिम्मेदारी उनके अपने-अपने देशों पर छोड़ दी। सांप्रदायिक जुनून के आधार पर बने पाकिस्तान में 'साझी संस्कृति' या 'साझी राष्ट्रीयता' की कल्पना करना स्वयं को धोखा देना था। वह जुनून वहां अमरबेल की तरह पसरता गया। तभी तो वर्ष 1950 में पाकिस्तान के तत्कालीन कानून मंत्री जोगेंद्रनाथ मंडल हिंदुओं पर अत्याचार से आहत होकर और अपने आपको असमर्थ पाकर मंत्रिमंडल से इस्तीफा देकर भारत आ गए थे।

वर्ष 1971 में बांग्लादेश के निर्माण के बाद उम्मीद जगी थी कि वहां के सामाजिक-राजनीतिक जीवन में हिंदुओं को समान अवसर मिलेगा, मगर ऐसा हुआ नहीं। निहित संपत्ति अधिनियम 1974 के तहत अराजकतापूर्ण तरीके से हिंदुओं की संपत्ति को 'शत्रु संपत्ति' घोषित कर दिया गया। साठ फीसद से अधिक हिंदू भूमिहीन हो गए। भेदभाव का असर सभी क्षेत्रों पर होने लगा। ढाका विश्वविद्यालय में तो पचास हजार छात्रों में हिंदुओं की संख्या मात्र दो हजार रह गई है। बांग्लादेश में साझी संस्कृति और जीवन मूल्यों में सांप्रदायिकता से बिखराव तथा परस्पर कटुता पैदा करने का पहला सफल प्रयोग कर्जन ने 1905 में बंगाल विभाजन के जरिए किया। अपना घर संभालकर नहीं रख पाने के कारण यह संभव हो पाया था। इतिहास की इस त्रासद घटना के बावजूद हमने कोई सीख नहीं ली।

भारत ने बांग्लादेश के निर्माण में अहम भूमिका तो निभा दी, लेकिन हम भूल गए कि राष्ट्र सिर्फ राजनीतिक मान्यताओं से नहीं बनता है। संस्कृति उसकी बुनियाद होती है। बांग्लादेश की आधिकारिक भाषा बांग्ला है, जिसे 98 फीसद लोग बोलते हैं। यह बांग्ला भाषा संस्कृति और विरासत की जीवंत वाहक है। अफ्रीकी चिंतक न्गुगी वा थ्योंगो ने भाषा की इसी क्षमता को किसी समुदाय या राष्ट्र के 'स्व' के विकास का सबसे महत्त्वपूर्ण कारक माना है। बांग्ला ने अंग्रेजी और उर्दू दोनों के बांग्लादेश में प्रसार को रोक दिया। वहां साझी संस्कृति का एक आयाम राष्ट्रगान 'अमार सोनार बांग्ला' है, जिसे रवींद्रनाथ ठाकुर ने वर्ष 1905 में लिखा था। वहां सरकारी कार्यक्रमों में रवींद्र संगीत का उपयोग होता है। बांग्लादेश का सबसे पुराना जगन्नाथ विश्वविद्यालय है, जो 1858 में स्कूल के रूप में स्थापित हुआ था। कट्टरपंथियों को मालूम है कि इन सब पर चोट से बांग्लादेश की पहचान मिट जाएगी। इसलिए वे सांस्कृतिक विरासत पर प्रहार करने की बजाय हिंदुओं के अस्तित्व को निशाना बना रहे हैं।

बांग्लादेश और पाकिस्तानी राज्यों का सांप्रदायिक आचरण नेहरू-लियाकत समझौते को पूरी तरह से अप्रासंगिक बना देता है। डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपना राजनीतिक बलिदान इसी समझौते के विरोध में दिया था। इतिहास ने उनके कदम को सत्य साबित किया है। इसलिए अंतरराष्ट्रीय या क्षेत्रीय स्तर पर बांग्लादेश की स्थिति को बदलने के लिए प्रत्यक्ष कार्रवाई ही तात्कालिक रास्ता है। मगर इसका एक और आयाम भी है। बांग्लादेश में हिंदू मिशन की अहम भूमिका होती है। यह मिशन बंगाली अस्मिता को बढ़ाने वाला होना चाहिए था। इस सांस्कृतिक कूटनीति से ही इस्लामिक कट्टरपंथियों से सामाजिक वैधानिकता छीनी जा सकती थी। बंगाली रंगकर्मी, साहित्यकार, फिल्मकार, संगीतकार आदि की भूमिका का उपयोग अहम था। इस पर कभी गंभीर मंथन या प्रयास हुआ ही नहीं। कट्टरपंथियों पर लगाम लगाना तो तात्कालिक आवश्यकता है, मगर बंगाली अस्मिता को समृद्ध करने की योजना को गैर-राजनीतिक एवं गैर सांप्रदायिक तरीके से लागू करना दीर्घकालिक समाधान है। समय के साथ सोच में संशोधन ही संकल्पित लक्ष्य तक पहुंचता है। बांग्लादेश की राष्ट्रीयता वास्तव में भारत की उपराष्ट्रीयता है। मगर भारत की धर्मनिरपेक्षवादी राजनीति हमारी अपनी संस्कृति और दर्शन का खंडित रूप दुनिया के सामने प्रस्तुत करती है, जो हमारी भूमिका में नैतिक पक्ष को धूमिल कर देता है। अतः चुनौती घर को संवारने की और बाहर अपनी संस्कृति की ताकत दिखाने की है।

कथनी और करनी

बाखबर

सुधीश पचौरी

> **चैनलों की 'प्रदूषण कथा' ने दिल्ली के 'डबल इंजनों' को पहले ही रक्षात्मक बना रखा था कि अचानक एक दिन हाई कोर्ट ने बलात्कार के दोषी कुलदीप सेंगर को जमानत देकर उत्तर प्रदेश सरकार को और भी रक्षात्मक बना दिया और जमानत पर कई सवाल उठे।**

राहुल भाई जर्मनी में कह दिए कि भारत में संस्थान खत्म किए जा रहे हैं... वोट की चोरी हो रही है। प्रत्यारोप आया कि वे विदेश में भारत को बदनाम करने जाते हैं! ऐसे ही खबर आई कि तमिलनाडु में एक 'दीपम भक्त' ने खुद को आग लगा ली। कई चर्चक कहते रहे कि हिंदुओं को अपने ही देश में अपने भगवान की पूजा करने का अधिकार नहीं। एक चैनल ने ताना मारा कि 'इको सिस्टम' खामोश... गाजा के लिए आंसू, बांग्लादेश में दो-दो हत्या पर चुप्पी! ये दोहरा पैमाना क्यों? इसी बीच एक चैनल ने प्रदूषण पर एक बेहतरीन 'पैरोडी' के जरिए दिल्ली सरकार पर निशाना साधा। उसके बोल रहे कि 'फ्राड हमें किस मोड़ पे ले आया कि दिल कहे हाय.. हाय कोई तो बताए क्या होगा..!' इधर 'आप' ने घेरा, उधर कुछ गैरसरकारी संगठनों और चैनलों ने सरकार को घेरा... दिल्ली की मुख्यमंत्री को घेरा। पहले अरावली के उजाड़ को लेकर घेरा, फिर प्रदूषण को लेकर घेरा कि दिल्ली गैस चेंबर बनी और कोई कुछ नहीं कर रहा।

बहरहाल, इन दिनों जब-जब धर्म की हानि होने लगती है, तब-तब एकाध 'भागवत वाणी' भक्तों को सहारा देती है। इस बार भी 'भागवत वाणी' हुई कि संघ को भाजपा के चश्मे से न समझें। संघ को संघ के चश्मे से देखें। यानी संघ भाजपा नहीं है, उससे कहीं 'बड़ा' है और कुछ 'हटकर' है। फिर एक दिन खबर आई कि कोलकाता में एक पाश्चात्य संगीत की एक गायिका को 'जागो मां जागो' गाने से रोका गया। इसे देख एक चर्चक बोला कि क्या 'माता' के राज्य में भी 'जागो मां जागो' नहीं गाया जा सकता? ये कैसा 'जनतंत्र' है?

इसी बीच महाराष्ट्र के स्थानीय निकायों के पहले चरण के चुनावों में एक ओर भाजपा ने अपनी जीत का परचम लहराया तो दूसरी ओर विपक्ष हाशिये पर आता दिखा। शायद इसीलिए चुनावों के दूसरे चरण के लिए दोनों ठाकरे बंधु एकजुट हो रहे हैं। इसी क्रम में एक दिन तेलंगाना से खबर आई कि सरकार जल्द ही 'नफरती भाषण' के खिलाफ कानून लाने वाली है। भाजपा प्रवक्ता कहिन कि इसे विरोधियों के खिलाफ इस्तेमाल किया जाएगा। इसी बीच केरल में एक हिंदू युवक को भीड़ ने पीट-पीट कर मार डाला। कुछ ने कहा कि मारने वाले 'हिंदू वादी' थे, तो कुछ ने कहा कि उनको फंसाया गया है।

फिर एक दिन जैसे ही प्रियंका गांधी ने कहा कि बांग्लादेश में हिंदुओं को बचाओ, वैसे ही एक एंकर ने कहा कि एक ओर कांग्रेस सीएए का विरोध करती है, दूसरी ओर प्रियंका हिंदुओं को बचाने की गुहार लगाती हैं। प्रियंका की शायद ऐसी बातों से संकेत लेकर कई चैनलों ने राहुल भाई से उनकी तुलना शुरू कर दी। कई चर्चकों ने कहा कि बहन बेहतर... एक ने कहा कि उनके पास अपनी दादी का करिश्मा है।

यों तो चैनलों की 'प्रदूषण कथा' ने दिल्ली के 'डबल इंजनों' को पहले ही रक्षात्मक बना रखा था कि अचानक एक दिन हाई कोर्ट ने बलात्कार के दोषी कुलदीप सेंगर को जमानत देकर उत्तर प्रदेश सरकार को और भी रक्षात्मक बना दिया और जमानत पर कई सवाल उठे। उन्नाव की बलात्कार पीड़िता ने स्वयं कई चैनलों पर आकर अपनी व्यथा कथा रो-रोकर कही और न्याय की मांग की। एक एंकर ने पूछा भी कि क्या निर्भया कानून किसी अदालत को ऐसा 'न्याय' करने की इजाजत देता है?

इसी बीच कई चैनलों पर कई राज्यों में आबादी की संरचना बदलने की खबरें चर्चा में रही। अब तक बंगाल, असम, झारखंड आदि में ही 'डेमोग्राफी' बदलने की बात थी, अब महाराष्ट्र खासकर मुंबई में 'जनसंख्या बदल' की चर्चा ने चर्चकों को 'हिंदू मुसलिम' में बांटे रखा। कई चर्चक इस बात से चिंतित दिखे कि अगर अब भी न समझे, तो देश के कई राज्य और शहरों में एक दिन हिंदू 'अल्पसंख्यक' बन जा सकते हैं।

इसी बीच उत्तर प्रदेश के नगर में भाजपा के कोई चालीस ब्राह्मण विधायक 'सहभोज' के लिए एकत्र हुए तो कई संवाददाता आयोजक से टोह लेने पहुंचे कि क्या यह मात्र 'सहभोज' था कि कुछ 'राजनीतिक भोज' था? जवाब में आयोजक ने यही कहा कि 'सहभोज' को 'सहभोज' ही रहने दो, कोई नाम न दो।

ऐसे ही, क्रिसमस के दिन जैसे ही प्रधानमंत्री ने दिल्ली के 'सेंट केथेड्रल चर्च' में जाकर 'क्रिसमस' मनाया, तो विपक्ष ने इसे ईसाई वोटों की कवायद बताया। तिस पर कुछ हिंदू संगठनों द्वारा क्रिसमस मनाते लोगों को डराने-धमकाने की खबरों ने प्रधानमंत्री की गतिविधियों पर पानी फेरने की कोशिश की। एक अंग्रेजी चैनल ने अपने शाम की बहस के कार्यक्रम में बताया कि एक ओर प्रधानमंत्री चर्च जाकर एकता का संदेश देते रहे, दूसरी ओर कुछ हिंदूवादी संगठनों के कार्यकर्ता देश के कई शहरों में गिरजाघरों के आगे उपद्रव करते रहे... हनुमान चालीसा का पाठ करते रहे। नतीजा यह हुआ कि एक चैनल चर्चा में कि एक हिंदू प्रवक्ता तक एंकर के ऐसे सवालों के संतोषजनक जवाब न दे सके!

जनसत्ता सरोकार | प्रश्नकाल | तीन
जनसत्ता | 28 दिसंबर, 2025

पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव इस बार ममता बरक्स जनता है

पश्चिम बंगाल में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व राज्यसभा सांसद शमिक भट्टाचार्य का कहना है कि तृणमूल कांग्रेस और भ्रष्टाचार दोनों एक-दूसरे के पर्याय बन गए हैं। उन्होंने कहा कि ममता बनर्जी के खिलाफ जैसा व्यवस्था विरोधी माहौल है, वैसा 2011 में माकपा के खिलाफ भी नहीं था। उनका आरोप है कि यह तो वामपंथी भी समझ चुके हैं कि बंगाल में जीवन से लेकर कुछ भी तभी बचेगा जब तृणमूल कांग्रेस को सत्ता से बेदखल किया जाएगा। भट्टाचार्य का कहना है कि बंगाल में घुसपैठ पुरानी समस्या रही है, लेकिन तृणमूल कांग्रेस ने इसे चरम पर पहुंचा दिया है। साथ ही कहा कि बंगाल में कांग्रेस एक परजीवी पार्टी है, जिसका कोई अस्तित्व नहीं है। शमिक भट्टाचार्य के साथ कार्यकारी संपादक *मुकेश भारद्वाज की* बातचीत *के चुनिंदा अंश।*

● **बिहार के बाद बंगाल के चुनाव पर पूरे देश की नजर है। बंगाल विधानसभा चुनाव में आपके कंधों पर बड़ी जिम्मेदारी है। सूबे में कैसी तैयारी है भाजपा की?**

●● हमारा पूरा भरोसा है कि इस बार ममता बनर्जी सत्ता से जा रही हैं। बंगाल का आगामी चुनाव भाजपा बनाम तृणमूल कांग्रेस नहीं, जनता बनाम तृणमूल कांग्रेस है। 2011 में ममता बनर्जी को जनता ने लोकतंत्र की पुनर्स्थापना के लिए ही सत्ता सौंपी थी। आज भी जनता के सामने वही हालात हैं कि लोकतंत्र की पुनर्स्थापना करनी है। आज पूरा पश्चिम बंगाल भ्रष्टाचार के हवाले है। इन्होंने किसी भी विभाग को नहीं छोड़ा है। सभी सरकारी नौकरियां बेच दी गई हैं। स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा का वीडियो बाहर आया। संस्था-प्रशासक के सामने परीक्षक खुलेआम स्मार्टफोन से उत्तर दिखा रहे हैं। बंगाल में तृणमूल कांग्रेस और भ्रष्टाचार एक-दूसरे का पर्याय बन चुके हैं। हम लोग किसी भी कीमत पर पश्चिम बंगाल को पश्चिम बांग्लादेश नहीं बनने देंगे। अभी मुर्शिदाबाद की घटना को सभी ने देखा। मंच पर एक नेता ने पहुंचकर गायक से कहा कि ऐसा गाना नहीं चलेगा, 'सेकुलर' गीत गाना होगा। गायक थाने पहुंचे तो वहां का प्रभारी भी मुसलमान था, जिसने शिकायत लेने से मना कर दिया। सीमाई इलाकों की पूरी जनसांख्यिकी बदल दी गई है। एक समय था, जब पश्चिम बंगाल को गलियारा बनाकर घुसपैठिये पूरे देश में फैल जाते थे। अभी पश्चिम बंगाल उनका सबसे सुरक्षित पनाहगाह बन गया है। यह केंद्रीय रिजर्व बैंक का डाटा है कि कुल जाली नोटों का 72 फीसद पश्चिम बंगाल से आता है। पहले पूरे देश से लोग काम करने के लिए पश्चिम बंगाल आते थे। अभी जिसके पास भी थोड़ा सा पैसा है, वह अपने बच्चों को यहां से बाहर भेज रहा है।

● **ममता बनर्जी सरकार ने निवेश को लेकर बड़े दावे किए थे। आपके हिसाब से इस मुद्दे पर राज्य की स्थिति क्या है?**

●● एक खास संगठन की यहां हर साल औद्योगिक बैठक होती है। वे सब ममता बनर्जी के साथ खड़े होकर बोलते हैं कि पश्चिम बंगाल निवेश के लिए सबसे अनुकूल जगह है। यही लोग बेहतर माहौल के लिए खुद भी दूसरे राज्यों में निवेश कर रहे हैं।

● **बंगाल की युवा पीढ़ी को कैसे देखते हैं ?**

●● पिछले दिनों मेस्सी के कार्यक्रम में हंगामा हुआ। 'जेन जी' की युवा पीढ़ी राज्य सरकार के मंत्री को चोर-चोर कहकर बुला रही थी। इन्होंने मेस्सी के कार्यक्रम में भी धांधली कर दी। ये लोग युवा पीढ़ी को नरेंद्र मोदी और अमित शाह के खिलाफ भड़काते हैं।

● **तो आपका कहना है कि सूबे में व्यवस्था विरोधी माहौल बन चुका है?**

●● फिलहाल ममता बनर्जी सरकार के खिलाफ जिस तरह का व्यवस्था विरोधी माहौल है, वैसा 2011 में माकपा के खिलाफ भी नहीं था। वाम विचारधारा के लोगों की समझ में भी यह बात आ गई है कि अगर जिंदा रहना है, टिके रहना है तो ममता बनर्जी की सरकार को बाहर कर देना चाहिए।

● **पिछले चुनावों में भाजपा ने ममता बनर्जी की सरकार के खिलाफ बहुत जोर लगाया। लेकिन चुनाव में जनता का झुकाव तृणमूल कांग्रेस की तरफ ही रहा।**

●● 2011 और उसके बाद के चुनाव में कई कारक थे। पिछले चुनाव में हमसे चूक हुई थी और हमने शिक्षा ली। दूसरी बात यह है कि लोकसभा और विधानसभा के चुनाव में बहुत अंतर होता है। 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद से पश्चिम बंगाल में बहुत सी चीजें बदली हैं। सांगठनिक स्तर पर भी हम मजबूत स्थिति में आए हैं।

प्रश्नकाल

भट्टाचार्य क्यों?

2014 में पश्चिम बंगाल के बशीरहाट दक्षिण विधानसभा सीट पर उपचुनाव जीत कर शमिक भट्टाचार्य ने भाजपा को नई पहचान दी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े रहे भट्टाचार्य ने बंगाल में भाजपा की विचारधारा को प्रसारित करने में बड़ा योगदान दिया। बंगाल में आज भाजपा सत्ता के विकल्प की प्रबल दावेदार है तो इसमें बड़ी भूमिका भट्टाचार्य की भी है। वे इतनी सफाई से सिनेमा के गीतों से लेकर कविता की पंक्तियों को अपनी बातों में शामिल करते हैं कि राजनीतिक बहस मनोरंजक हो जाती है। अब जब पूरे देश की नजर बंगाल पर टिकी है तो अलग राजनीतिक मिजाज वाले इस सूबे पर बात करने के लिए शमिक भट्टाचार्य से बेहतर और कौन होता?

● **मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण को लेकर हर जगह विवादों का पहाड़ सा खड़ा हो गया है। आरोप है कि हर जगह से उन लोगों को हटाया जा रहा है, जो भाजपा के मतदाता नहीं हैं। बंगाल में भी आरोप है कि बाहरी लोगों को यहां लाकर उन्हें मतदाता बनाया जा रहा है।**

●● बाहरी लोगों को यहां बुला कर मतदाता बनाने की बात तो एकदम गलत है। बिहार में हुआ, और 12 अन्य राज्यों में भी एसआइआर हो रहा है, तो बंगाल में इतना हंगामा क्यों? 2003 में जो मतदाता थे उनमें से बहुत मृत हो चुके हैं, कुछ बाहर चले गए हैं तो उनके नाम हटेंगे ही। करीब साठ लाख मतदाता बाहर चले गए हैं। भाजपा ने अपनी तरफ से साढ़े तेरह लाख फर्जी मतदाताओं के नाम दिए थे। पश्चिम बंगाल की समस्या अन्य राज्यों से भिन्न है। 2011 में चुनाव के तुरंत बाद 27 दिनों के अंदर भाजपा के 56 कार्यकर्ताओं की हत्या कर दी गई। हमारी महिलाओं ने कैमरे के सामने कहा कि तृणमूल के गुंडों ने उनका सामूहिक बलात्कार किया। चुनाव के बाद की हिंसा पर अभी सीबीआइ जांच चल रही है। लेकिन पुलिस जांच को प्रभावित कर रही है। बहुत से गवाह मुकर गए हैं। यहां तो न्यायपालिका भी भय के माहौल में जीती है। अदालत के न्यायाधीश के घर के बाहर पोस्टर चिपका दिया जाता है। अदालत में घुस कर जज को प्रताड़ित किया जाता है। महिला जज को फोन करके उसके परिवार के बारे में बुरा-भला बोला जा रहा है। उनके कारोबारी पति पर फर्जी मुकदमा दायर कर दिया गया है। पश्चिम बंगाल पूरे देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरे की घंटी बजा रहा है।

● **क्या देश की आंतरिक सुरक्षा और पश्चिम बंगाल सहसंबद्ध हो चुके हैं?**

●● पश्चिम बंगाल से घुसपैठिये सारे देश में फैल रहे हैं। आज बिहार, झारखंड, वनांचल और सीमांचल की जनसांख्यिकी काफी बदल गई है। रोहिंग्या सबसे आदरणीय मेहमान हैं। अभी वनस्पति उद्यान का नया नामकरण आचार्य जगदीशचंद्र बोस हुआ और उसके भीतर मस्जिद भी बन गई। उसके अंदर जलापूर्ति भी आ गई। इसी तरह कोलकाता के अंदर एक गुलशन बस्ती बन गई।

> पश्चिम बंगाल से घुसपैठिये सारे देश में फैल रहे हैं। बिहार, झारखंड, वनांचल और सीमांचल की जनसांख्यिकी काफी बदल गई है। रोहिंग्या सबसे आदरणीय मेहमान हैं। अभी वनस्पति उद्यान का नया नामकरण आचार्य जगदीशचंद्र बोस हुआ और उसके भीतर मस्जिद भी बन गई।

● **प्रधानमंत्री से लेकर केंद्रीय गृह मंत्री बंगाल को घुसपैठ का पर्याय बता रहे हैं। क्या पश्चिम बंगाल में यह वाकई इतनी बड़ी समस्या है?**

●● बंटवारे के बाद बहुत से हिंदू विस्थापित यहां पर आए। बांग्लादेशी घुसपैठिये आज की समस्या नहीं हैं। वाम सरकार में ज्योति बसु का कहना था कि घुसपैठ अंतरराष्ट्रीय परिघटना है। कमजोर अर्थव्यवस्था के लोग मजबूत अर्थव्यवस्था में आना चाहते हैं। हमें इनके साथ मानवीय मूल्य बरतने चाहिए। बाद में वही ज्योति बसु घुसपैठ के खिलाफ हुए और उन्होंने शेख हसीना से बात कर इस पर नियंत्रण करने के लिए कहा। 2004 में ममता बनर्जी विधानसभा अध्यक्ष के पास मतदाता सूची को फेंक कर चली गई थीं। उन्होंने कहा था कि मतदाता सूची में घुसपैठियों का नाम माकपा ने घुसाया है। ममता बनर्जी रोते हुए सदन से बाहर निकली थीं। आज वही ममता बनर्जी बोल रही हैं कि घुसपैठ जैसी कोई चीज नहीं है।

● **भाजपा का आरोप है कि ममता बनर्जी घुसपैठ को बढ़ावा दे रही हैं। चुनाव को प्रभावित करने के लिए वे घुसपैठियों को मतदाता बनवाने की कोशिश में जुटी हुई हैं।**

●● यह तो बंगाल का एक स्कूल जाने वाला बच्चा भी जानता है। अस्सी के दशक में भाजपा का बंगाल में कितना फीसद वोट था? फिर भी हम घुसपैठ के खिलाफ बोलते थे। लोग भाजपा के दो सांसद और दो नेता को लेकर मजाकर उड़ाते थे कि हम दो हमारे दो। तब आडवाणी जी बोलते थे कि पर बांग्लादेश से मत आने दो। यह कोई नया सिलसिला नहीं है। लेकिन तृणमूल कांग्रेस की सरकार में यह अपने चरम पर पहुंच गया है। इस वजह से कट्टरपंथ दिखाई दे रहा है। मुर्शिदाबाद में पूजा की प्रतिमा बनाने वाले पिता-पुत्र चंदन दास और हरगोविंद दास को एक साथ मार दिया गया। ऐसा दृश्य हिंदुस्तान में कहीं नहीं दिखाई दिया कि एक महिला बीएसएफ के अधिकारी के सामने खड़ी होकर कह रही है कि हमें गोली मार दीजिए। हम आपके हाथ से मरना पसंद करेंगे, लेकिन अपने शरीर को किसी दूसरे के हाथों गंदा नहीं होने देंगे। हिंदुओं की संपत्ति फूंक दी गई है। माकपा के एक हिंदू विधायक अपने परिवार के साथ मुर्शिदाबाद छोड़ कर चले गए हैं। जो हिंदीभाषी लोग आजादी से पहले यहां आए थे, वे भी पलायन कर चुके हैं। पश्चिम बंगाल प्रवासी मजदूरों की जन्मस्थली बन चुका है। विद्यार्थियों का पलायन हो रहा है, पूंजी का पलायन हो रहा है। जो सरकार काम नहीं कर पाएगी उसे जाना पड़ेगा। अटल जी की सरकार को भी हार का मुंह देखना पड़ा था। जनता ने मन बना लिया है कि इस काम नहीं करने वाली सरकार को विदा करना है।

● **राष्ट्रीय स्तर पर देखें तो खुद भाजपा पर हिंदू-मुसलमान की राजनीति करने का आरोप लगाया जाता है। आरोप है कि आपकी नीतियां मुसलिम समुदाय को अलग-थलग कर देने की है। यहां पर तृणमूल सरकार भी आप पर यही इल्जाम लगाती है। आपका क्या कहना है?**

●● मुसलमानों को लेकर आम जनता जैसी बातें करती हैं, उससे तो हम सहमत नहीं हैं। हमारे पास हिंदू की परिभाषा का अर्थ यही है कि जो भारत में रहते हैं और इसे अपना देश मानते हैं। 1947 में पश्चिम बंगाल का जन्म धर्म के आधार पर हुआ था। जो लोग उस वक्त इस देश को नापाक बोल कर चले गए थे, वे अभी हिंदुस्तान में रहने के लिए क्यों आएंगे? भारतीय मुसलमानों के साथ हमारा किसी भी तरह का भेदभाव नहीं है। आप असम की जनसांख्यिकी देख लीजिए। वहां अल्पसंख्यकों की आबादी बंगाल से ज्यादा है, फिर भी दो बार भाजपा सत्ता में आ चुकी है और तीसरी बार भी आने वाली है। जो लोग समझते हैं कि भाजपा को वोट नहीं देंगे, मुसलमानों के वोट के बिना राजनीति नहीं चलेगी तो वे भी 2026 में पश्चिम बंगाल में भाजपा की सरकार बनते हुए देखेंगे। सत्ताधारी दल का एक नेता खुलेआम बोल रहा है कि हिंदू 30 फीसद और हम 70 फीसद हैं, जब चाहे काटकर नदी में बहा देंगे। उनकी तो कोई गिरफ्तारी नहीं होती है।

● **अभी बाबरी मस्जिद का भी विवाद उठा।**

●● यह माहौल भी तो तृणमूल कांग्रेस के दिए हौसले के कारण ही बना।

● **आरोप है कि घुसपैठ रोकने का काम तो गृह मंत्रालय का है। गृह मंत्रालय अपना काम नहीं कर रहा तो हम क्या करें?**

●● जब तक जनता के अंदर जागरूकता नहीं आएगी, संयुक्त शक्तियां साझा कार्रवाई नहीं करेंगी तब तक घुसपैठ बंद नहीं हो सकती है। मैं तो खुद सीमाई इलाके का हूं तो सारी समस्याओं से परिचित हूं कि कैसे सीमा पर पकड़े गए घुसपैठिये बाद में छूट जाते हैं।

● **बंगाल विधानसभा चुनाव में आप कांग्रेस को कहां देखते हैं? राहुल गांधी कुछ कर पाएंगे?**

●● राहुल गांधी सिर्फ मीम तक सीमित हो जाएंगे। बंगाल में कांग्रेस परजीवी संस्था है। कांग्रेस का एक ही गाना है, 'वादा करो नहीं छोड़ोगे मेरा साथ/जहां तुम हो वहां मैं भी हूं।' कांग्रेस के अधीर रंजन चौधरी खुल कर तृणमूल कांग्रेस के खिलाफ बोलते थे, तो उन्हें अध्यक्ष पद से हटा दिया गया। अभी जिन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया है, वे तृणमूल कांग्रेस जिंदाबाद के नारे लगाते हैं। वे लोग यहां बोलते हैं कि दीदी और मोदी एक साथ हैं, इसलिए यहां सीबीआइ और ईडी ठीक से काम नहीं कर रहे हैं। यही दोनों दिल्ली में खड़े होकर बोलते हैं कि सीबीआइ और ईडी जरूरत से ज्यादा सक्रिय हैं। माकपा के नेता का यहां भाषण सुन लीजिए और उनका दिल्ली में भाषण सुन लीजिए। आपको भी आश्चर्य होगा कि क्या मैं ठीक सुन रहा हूं।

● **कुछ राज्यों के चुनाव में भाजपा की जीत के बाद संघ की मेहनत की चर्चा हुई। क्या बंगाल में संघ का वैसा साथ मिल रहा है?**

●● हमलोग एक ही विचार परिवार के हैं, लेकिन संघ चुनाव में प्रत्यक्ष भागीदारी नहीं करता है। वे अपना काम करते हैं और हम अपना। मैं संघ का कोई आधिकारिक प्रवक्ता नहीं हूं तो इस मसले पर ज्यादा बात नहीं कर सकता हूं।

● **पश्चिम बंगाल के लोगों को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?**

●● हम गंगोत्री से लेकर गंगासागर तक एक काम करने वाली सरकार देंगे। भाजपा शासित राज्यों में कानून-प्रशासन मिसाल बन चुका है। लालफीताशाही और तृणमूल टैक्स को खत्म करेंगे। पश्चिम बंगाल के पास सारे संसाधन हैं, उनकी बदौलत निवेश लाएंगे। एक ग्रेजुएट इंजीनियर की पश्चिम बंगाल में तनख्वाह 22 हजार है। हमें इस दयनीय स्थिति को बदलना है। लोग समझ चुके हैं अगर अपना धर्म, संस्कृति, रीति-रिवाज बचाना है तो तृणमूल कांग्रेस को हटाना है।

● **पूरे देश में भाजपा का चुनाव प्रचार नरेंद्र मोदी केंद्रित होता है। चुनाव की बहुत सारी जिम्मेदारी उनके कंधों पर होती है। क्या बंगाल भाजपा भी उनके ऊपर निर्भर है?**

●● यह तो पूरे देश ने मान लिया है कि नरेंद्र मोदी का कोई और विकल्प नहीं है। वे एक वैश्विक नेता बन चुके हैं। मोदी की गारंटी पर जनता यकीन करती है कि उन्होंने बोला है तो काम हो जाएगा। नरेंद्र मोदी ने हर जगह नेतृत्व दिया है और यहां भी देंगे। उनके साथ गृहमंत्री भी आएंगे। भाजपा के सारे नेता भी आएंगे।

● **योगी भी आएंगे?**

●● पिछली बार भी आए थे, इस बार भी आएंगे।

> फिलहाल ममता बनर्जी सरकार के खिलाफ जिस तरह का व्यवस्था विरोधी माहौल है, वैसा 2011 में माकपा के खिलाफ भी नहीं था। वाम विचारधारा के लोगों की समझ में भी यह बात आ गई है कि अगर जिंदा रहना है, टिके रहना है तो ममता बनर्जी की सरकार को बाहर कर देना चाहिए।

प्रस्तुति : मृणाल वल्लरी

रायगढ़ में हिंसा... जिंदल कोल माइंस गारे पेलमा सेक्टर-1 खदान का मामला

जनसुनवाई के विरोध में उग्र हुए ग्रामीण, महिला टीआई को पीटा

आक्रोशित ग्रामीणों ने एसडीएम के वाहन समेत तीन गाड़ियां फूंकीं

हाइवा की चपेट में ग्रामीण के आ जाने की बात से भी बिगड़ा माहौल

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

रायगढ़ . जिले के तमनार में जिंदल कोल माइंस गारे पेलमा सेक्टर-1 खदान की जनसुनवाई के विरोध में 12 दिसंबर से चल रहा आंदोलन शनिवार को अचानक उग्र हो गया। कोयला लोड वाहनों को दूसरे मार्ग से ले जाने और वाहन की चपेट में आने से एक ग्रामीण के घायल होने पर शांतिपूर्ण आर्थिक नाकेबंदी कर रहे ग्रामीणों का गुस्सा इस कदर फूटा कि महिला थाना प्रभारी से मारपीट और तीन सरकारी वाहनों को आग के हवाले कर दिया।

पुलिस को हालात काबू में करने के लिए हल्का बल प्रयोग करना पड़ा। पूरे क्षेत्र में भारी पुलिस बल तैनात किया गया है। दरअसल, ग्रामीण 12 दिसंबर से तमनार के सीएचपी चौक पर कोयला परिवहन रोककर जिंदल कोल माइंस की जनसुनवाई को निरस्त करने की मांग कर रहे थे। ग्रामीणों का आरोप है कि पुलिस कोयला लोड वाहनों को सीएचपी चौक की बजाय खुरुषलेंगा मार्ग से निकाल रही थी।

जब यह जानकारी ग्रामीणों को लगी तो वे वहां पहुंच गए और विरोध शुरू कर दिया। विरोध के बीच एक कोयला लोड वाहन की चपेट में एक ग्रामीण के आ जाने की खबर से माहौल और ज्यादा बिगड़ गया। आक्रोशित ग्रामीणों ने पुलिस टीम से झड़प शुरू कर दी। गुस्साए प्रदर्शनकारियों ने सीएचपी चौक के पास पुलिस जवानों से मारपीट की और वहां खड़ी एक पुलिस बस, एक पुलिस वाहन और एसडीएम की गाड़ी में आग लगा दी। इससे हालात और तनावपूर्ण हो गया।

घटना की सूचना मिलते ही कलेक्टर मयंक चतुर्वेदी और एसपी दिव्यांग पटेल पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और स्थिति को नियंत्रित करने में जुट गए। फिलहाल स्थिति नियंत्रण में बताई जा रही है।

जान बचाने हाथ जोड़ते रही घायल महिला टीआई

इस दौरान तमनार थाना प्रभारी कमला पुसाम के साथ जमकर मारपीट की गई। घटना का वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हुआ, जिसमें टीआई को लात मारते हुए देखा गया। जान बचाने के लिए वह भीड़ के सामने हाथ जोड़ रही है। हालांकि कुछ महिलाओं ने बीच-बचाव कर उन्हें पानी भी पिलाया। स्थिति बेकाबू होते देख जिला मुख्यालय से अतिरिक्त पुलिस बल भेजा गया। पुलिस द्वारा बल प्रयोग किए जाने की सूचना मिलते ही सीएचपी चौक पर बैठे अन्य ग्रामीण भी उग्र हो गए।

ग्रामीण करीब 15 दिनों से शांतिपूर्ण बैठे थे। हम भी सारी आवश्यकताओं का ध्यान रखे थे। शनिवार को करीब ढ़ाई बजे कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा उकसाए जाने पर पथराव शुरू हुआ। हमारे जवान वहां मौजूद थे। चूंकि उन्हें कुछ निर्देश नहीं था तो वे जान बचा कर भागे। कुछ पुलिस जवान घायल हुए हैं। ग्रामीणों से दोबारा बातचीत करने का प्रयास किया गया लेकिन फिर पथराव हुआ। हम उनसे बातचीत करने का प्रयास कर रहे हैं।

-मयंक चतुर्वेदी,
कलेक्टर, रायगढ़

एसडीओपी,टीआई समेत कई जवान घायल

प्लांट के भीतर घुसकर भी तोड़फोड़ के साथ आगजनी

अनियंत्रित भीड़ ने मौके पर पुलिस की बस, जीप, एंबुलेंस को आग लगा दी और कई शासकीय वाहन भी क्षतिग्रस्त किए। इसके बाद अनियंत्रित भीड़ ने जिंदल के कोल हैंडलिंग प्लांट सीएचपी की ओर बढ़कर भीतर घुसकर कन्वेयर बेल्ट व दो ट्रैक्टर व अन्य वाहन को आग लगा दी। ऑफिस में भी उत्पात मचाकर तोड़फ़ोड़ की गई। भीड़ को समझाइश देने के लिए गए विधायक लैलूंगा विद्यावती सिदार, कलेक्टर रायगढ़ एवं पुलिस अधीक्षक के द्वारा मौके पर जाने पर भीड़ ने उग्र होते हुए पथराव किया।

सिर्फ 14 लोग ही रख सके अपनी बात

जिंदल कोल माइंस को लेकर 8 दिसंबर को धौराभांठा बाजार कॉम्प्लेक्स में आयोजित जनसुनवाई का विरोध करने कोल माइंस से प्रभावित 14 गांव से हजारों लोग पहुंचे थे, लेकिन जनसुनवाई दोपहर करीब 12 बजे ही समाप्त कर दी गई। इसमें महज 14 लोग भी अपनी बात रख सके। ग्रामीण ने इसे फर्जी जनसुनवाई बताया।

केंद्रीय मंत्री शेखावत की मौजूदगी में भूमिपूजन

मुख्यमंत्री साय वर्ष के पहले दिन भोरमदेव कॉरिडोर की देंगे सौगात

कवर्धा @ पत्रिका . नए साल के पहले ही दिन कबीरधाम जिले को बहुप्रतीक्षित भोरमदेव पर्यटन कॉरिडोर की सौगात मिलने जा रही है। एक जनवरी 2026 को विष्णुदेव साय और गजेंद्र सिंह शेखावत की उपस्थिति में इस महत्वाकांक्षी पर्यटन परियोजना का विधिवत भूमिपूजन किया जाएगा।

सीएम के मंशानुरूप व विजय शर्मा के विशेष प्रयासों से छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक, पुरातात्विक और जनआस्था के प्रमुख केंद्र बाबा भोरमदेव मंदिर परिसर से लेकर मड़वा महल, छेरकी महल, रामचुवा और सरोदा जलाशय तक पर्यटन कॉरिडोर का निर्माण किया जाएगा। यह परियोजना केंद्र सरकार की स्वदेश दर्शन योजना 2.0 के अंतर्गत क्रियान्वित की जा रही है। लगभग 146 करोड़ रुपए की लागत से विकसित होने वाले इस भव्य पर्यटन कॉरिडोर के तहत भोरमदेव मंदिर परिसर सहित आसपास के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों का समग्र विकास किया जाएगा।

पर्यटन को नया आयाम...

परियोजना के पूरा होने से क्षेत्र में पर्यटन गतिविधियों को नया आयाम मिलेगा। इससे न केवल स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे, बल्कि कबीरधाम जिले की सांस्कृतिक और पर्यटन पहचान को राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान भी मिलेगी।

मैनपाट में जमने लगीं ओस की बूंदें...

अगले 3 दिन उत्तर छत्तीसगढ़ रहेगा शीतलहर की चपेट में

इस साल प्रदेश में कड़ाके की ठंड, अंबिकापुर में 4.0 डिग्री पारा

रायपुर @ पत्रिका. उत्तर छत्तीसगढ़ में अगले तीन दिनों तक शीतलहर चलने की संभावना है। वहीं बाकी हिस्सों में कड़ाके की ठंड पड़ेगी। मैनपाट में ओस जमने लगी है। अंबिकापुर में पारा 4 डिग्री रहा। वहीं मैनपाट में इससे कम है। मौसम विभाग के अनुसार अगले तीन दिनों तक न्यूनतम तापमान में विशेष परिवर्तन की संभावना नहीं है। दिसंबर खत्म होने में महज 4 दिन बाकी है। इस साल प्रदेश में कड़ाके की ठंड पड़ रही है। राजधानी में इस माह न्यूनतम तापमान 11.2 डिग्री तक गिरा है। वहीं अंबिकापुर में सबसे कम तापमान रहा है। हालांकि मैनपाट व सामरीपाट में भी रातें सर्द हो रही हैं। कवर्धा जिले की चिल्फी घाटी में भी ओस जमने लगी हैं। माना में न्यूनतम तापमान राजधानी से 3.4 डिग्री कम रहा। इसका मतलब ये है कि आउटर में अच्छी ठंड पड़ रही है। यहां शीतलहर जैसे हालात हैं। दुर्ग व राजनांदगांव के कुछ इलाकों में शीतलहर चल रही हैं। रविवार को राजधानी का न्यूनतम तापमान 12 डिग्री के आसपास रहने की संभावना है। बादल छाने की संभावना कम है।

कहां कितना पारा

स्थान	न्यूनतम
अंबिकापुर	4.0
बिलासपुर	11.0
पेंड्रारोड	7.0
राजनांदगांव	9.5
जगदलपुर	9.5
दुर्ग	9.2

(तापमान डिग्री सेल्सियस में)

11 सूत्रीय मांगें : केंद्र के समान डीए, एरियर्स, पिंगुआ कमेटी की रिपोर्ट सार्वजनिक करें

31 तक सरकारी कर्मी हड़ताल पर, होंगे काम प्रभावित

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

रायपुर. केंद्र के समान डीए, एरियर्स, पिंगुआ कमेटी की रिपोर्ट सार्वजनिक करने सहित 11 सूत्रीय मांग को लेकर छत्तीसगढ़ कर्मचारी- अधिकारी फेडरेशन ने काम बंद कलम बंद का ऐलान कर दिया है। फेडरेशन से जुड़े सभी अधिकारी व कर्मचारी 29 से 31 दिसम्बर तक हड़ताल पर रहेंगे। इस वजह से सरकारी कामकाज पूरी तरह से प्रभावित होंगे। हड़ताल की वजह से सरकारी दफ्तरों में नए साल से ही रौनक लौटेगी।

फेडरेशन का दावा है कि नवा रायपुर स्थित सभी विभागाध्यक्ष कार्यालयों में तालाबंदी रहेगी। साथ ही निगम,मण्डल, बोर्ड,आयोग,स्कूलों में भी तालाबंदी की संभावना है। फेडरेशन की मांग है कि सरकार ने मोदी की गारंटी को पूरा करने का वादा किया था, उसे पूरा करें। बता दें कि फेडरेशन ने सारी स्थितियों को देखते हुए हड़ताल की प्रदेशव्यापी तैयारी पूर्ण कर लिया है। राज्य के पांचों संभाग में समीक्षा बैठक के साथ ही प्रत्येक जिला में संयोजक द्वारा बैठकों का दौर जारी है। साथ ही, सामूहिक अवकाश आवेदन भर जा रहा है। मॉनिटरिंग का काम जिलों में संयोजक तथा जिलों का प्रांतीय कोर कमेटी के द्वारा किया जा रहा है।

सीएम बोले-

यह सनातन धर्म का अपमान, जनता करेगी निर्णय

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रायपुर@ पत्रिका. मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल द्वारा पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री को भाजपा का एजेंट कहने पर कड़ी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा, हमारा देश ऋषि-मुनियों का देश है। प्राचीन काल से हम संत-महात्माओं का सम्मान करते आए हैं। बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर को भाजपा का एजेंट कहना सनातन धर्म और बागेश्वर धाम का अपमान है। इसका निर्णय जनता करेगी।

बता दें, बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री भिलाई में 5 दिवसीय हनुमंत कथा के लिए छत्तीसगढ़ पहुंचे हैं। उनके प्रदेश आगमन होते ही धर्मांतरण और धर्म को लेकर सियासी बयानबाजी तेज हो गई। पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने कथावाचक पर अंधविश्वास फैलाने के आरोप लगाया था। वहीं शास्त्री ने उनके बयान का पलटवार करते हुए कहा था कि अगर हिंदू समाज को जोड़ना अंधविश्वास है, तो ऐसे लोगों को देश छोड़ देना चाहिए।

सीएम ने कहा- छत्तीसगढ़ के यात्रियों के लिए बड़ा तोहफा

रायपुर सहित 48 शहरों की रेल संचालन क्षमता होगी दोगुनी

यात्रियों को अधिक ट्रेनें, बेहतर सुविधा और भीड़भाड़ से मिलेगी राहत

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रायपुर. भारतीय रेलवे ने अगले पांच वर्ष में देश के 48 प्रमुख शहरों में रेलगाड़ियों की संचालन क्षमता को दोगुना करने की योजना तैयार की है। इसमें छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर को भी शामिल किया गया है। इससे ट्रेनों की संख्या बढ़ेगी, यात्रियों को बेहतर सुविधा मिलेगी और भीड़भाड़ वाले सफर से भी राहत मिलेगी।

इस फैसले पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि यह छत्तीसगढ़ के करोड़ों यात्रियों के लिए बड़ा तोहफ़ा है। इससे राज्य की कनेक्टिविटी, व्यापार, उद्योग तथा पर्यटन गतिविधियों को नया आयाम मिलेगा। रेल संरचना के विस्तार से निवेश, रोजगार और लॉजिस्टिक्स की सुगमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। इससे राज्य की अर्थव्यवस्था को नई रफ्तार मिलेगी।

इन सुविधाओं पर रहेगा फोकस

रेल मंत्रालय द्वारा जारी जानकारी के अनुसार वर्ष 2030 तक संचालन क्षमता दोगुनी करने के लिए कई प्रयास किए जाएंगे। इसके तहत मौजूदा टर्मिनलों पर अतिरिक्त प्लेटफॉर्म, पिट लाइन एवं स्टेबलिंग लाइन का निर्माण किया जाएगा। इसके साथ ही शहरी क्षेत्र और आसपास नए टर्मिनलों की स्थापना, सिग्नलिंग, यार्ड आधुनिकीकरण और मल्टी ट्रैकिंग के माध्यम से अनुभागीय क्षमता में वृद्धि की जाएगी। साथ ही मेगा कोचिंग कॉम्प्लेक्स एवं आधुनिक रखरखाव सुविधाओं का विकास किया जाएगा।

राज्य सरकार करेगी पूरा सहयोग

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि रायपुर में सुविधाओं के विकसित होने से आम यात्रियों के साथ-साथ छात्रों, मरीजों, उद्योगपतियों और व्यापारियों सभी वर्गों को राहत मिलेगी। राज्य सरकार रेलवे मंत्रालय के साथ समन्वय स्थापित कर इस योजना को तेज गति से धरातल पर उतारने के लिए हर संभव सहयोग देगी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आने वाले वर्षों में छत्तीसगढ़ देश के सर्वाधिक बेहतर रेल संपर्क वाले राज्यों में शामिल होगा और यह परिवर्तन विकसित भारत @2047 के संकल्प को सशक्त करेगा। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय रेलवे का व्यापक आधुनिकीकरण हो रहा है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव द्वारा घोषित इस योजना से छत्तीसगढ़ जैसे उभरते हुए राज्य को प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा।

रेलवे के लिए 41 हजार करोड़ का काम

छत्तीसगढ़ में 41 हजार करोड़ रूपए की लागत से रेलवे सुविधाओं के विस्तार का काम तेजी से चल रहा है। इसमें रेलवे ट्रैक का विस्तार, रेलवे लाइन का दोहरीकरण, रेलवे फ्लाइओवर एवं ब्रिज आदि का निर्माण शामिल है। केंद्र सरकार ने इस साल के बजट में छत्तीसगढ़ राज्य में रेलवे सुविधा के विकास के लिए 6925 करोड़ रुपए का प्रावधान किया है। इससे राज्य में रेल परियोजनाओं के कामों को तेजी से पूरा करने में मदद मिलेगी।

यह होगा छत्तीसगढ़ को फायदा

राज्य सरकार और केंद्र सरकार के बीच बेहतर समन्वय के कारण छत्तीसगढ़ में रेल नेटवर्क विस्तार की ऐतिहासिक पहल हो रही है। इससे यात्री सुविधाओं में सुधार के साथ-साथ औद्योगिक, खनिज और आर्थिक विकास को भी बढ़ावा मिलेगा। छत्तीसगढ़ में रेलवे नेटवर्क विस्तार से न केवल यात्री परिवहन बल्कि खनिज संपदा और औद्योगिक उत्पादों के निर्यात में तेजी आएगी। इससे राज्य में व्यापार व निवेश को बढ़ावा मिलेगा।

कुम्हारी टोल प्लाजा को लेकर भी जताई आपत्ति

बृजमोहन बोले-40 किलोमीटर टोल नियम पर सख्ती की जरूरत

रायपुर @ पत्रिका. सांसद बृजमोहन अग्रवाल शनिवार को अंडमान-निकोबार के हैवलॉक में भारत के राष्ट्रीय राजमार्गों के विकास विषय पर आयोजित संसद की एस्टीमेट कमेटी की बैठक में शामिल हुए। इसमें छत्तीसगढ़ समेत देशभर में राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड द्वारा किए जा रहे विभिन्न इंफ्रास्ट्रक्चर विकास कार्यों की विस्तृत समीक्षा की गई। इस दौरान सांसद ने टोल प्लाजा स्थापित करने के लिए निर्धारित 40 किलोमीटर दूरी के नियम को सख्ती और निरंतरता से लागू करने की बात कही। उन्होंने, कुम्हारी टोल प्लाजा का जिक्र करते हुए कहा कि यह 40 किलोमीटर दूरी के नियम का उल्लंघन करता प्रतीत होता है, जिस पर तत्काल संज्ञान लिया जाना चाहिए।

बैठक में अग्रवाल ने कुछ राज यों में हाईवे की खराब स्थिति की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि इनके उन्नयन के लिए मौजूदा बजट आवंटन पर पुनर्विचार करना चाहिए। उन्होंने यात्रियों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए सुझाव दिया कि हाइवे पर प्रत्येक 40 से 50 किलोमीटर के अंतराल पर एम्बुलेंस एवं फर्स्ट-एड सुविधाएं अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराई जाएं, ताकि आपात स्थिति में त्वरित सहायता मिल सके।

दूसरे राज्यों के 13 स्टूडेंट को सरकारी-निजी मेडिकल कॉलेजों में एमडी-एमएस की सीटें

रायपुर @ पत्रिका. प्रदेश के सरकारी व निजी मेडिकल कॉलेजों में दूसरे राज यों के 13 स्टूडेंट को एमडी-एमएस की सीटें मिली हैं। गौर करने वाली बात ये भी है कि इन स्टूडेंट ने एमबीबीएस की पढ़ाई छत्तीसगढ़ में नहीं, बल्कि दूसरे राज्यों में की है। इन सीटों को स्टेट ओपन कोटा नाम दिया गया है। छात्र संगठन इसी का विरोध कर रहा था कि स्टेट कोटे में ओपन कैटेगरी रखने से प्रदेश के विद्यार्थियों का नुकसान होगा। मामला सुप्रीम तक गया था। सुप्रीम कोर्ट ने कह दिया है कि मामले की सुनवाई हाईकोर्ट में होगी, जिसकी अगली सुनवाई मार्च में होने वाली है। स्टेट ओपन कोटा के नाम पर प्रदेश के छात्रों के साथ अन्याय किया जा रहा है। जानकारों का कहना है कि स्टेट कोटे की सीटों पर किसी दूसरे राज्यों के स्टूडेंट को एडमिशन देने का नियम किसी भी राज्य में नहीं है। छत्तीसगढ़ में इस साल नई परिपाटी बनाई गई है, जिसका नुकसान प्रदेश के विद्यार्थियों को हो रहा है।

अबूझमाड़ में नई सुबह | **सांस्कृतिक विरासत को सहेजने अबूझमाड़िया की अनूठी पहल**

नक्सलवाद के बाद दिखी सामाजिक एकजुटता

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

नारायणपुर . जिले के दुर्गम और वर्षो तक नक्सलवाद की छाया में रहे अबूझमाड़ क्षेत्र से एक सुखद और उम्मीद जगाने वाली खबर सामने आई है। नक्सलवाद की समाप्ति के बाद अब अबूझमाड़ के ग्रामीण समाज को एकजुट करने, अपनी सांस्कृतिक पहचान को सहेजने और नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने की दिशा में सार्थक पहल शुरू हो चुकी है। इसी क्रम में अबूझमाड़िया समाज द्वारा अबूझमाड़िया समाज महासम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसने सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक बनकर उभरा। महासम्मेलन में अबूझमाड़ के दूरस्थ अंचलों में बसे गांवों से बड़ी संख्या में ग्रामीण पहुंचे। लंबे समय तक भय और असुरक्षा के माहौल में जीने वाले ग्रामीणों के लिए यह सम्मेलन आपसी भाईचारे और विश्वास की मजबूत नींव साबित हुआ। सम्मेलन के दौरान अबूझमाड़ के पारंपरिक सामाजिक पदों गायता, पटेल और मांझी का सम्मान पूरे आदर के साथ किया गया। उन्हें पगड़ी पहनाकर और तिलक लगाकर सम्मानित किया गया, जो समाज में उनके योगदान और नेतृत्व की भूमिका को दर्शाता है। समाज के वरिष्ठजनों ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आधुनिकता के साथ कदम मिलाना जरूरी है, लेकिन अपनी सांस्कृतिक पहचान को भूलना नहीं चाहिए। अपनी भाषा, परंपरा, सामाजिक नियम और लोक कला को अपनाए रखना ही समाज को मजबूत बनाता है।

सांस्कृतिक विरासत से रूबरू होने का माध्यम : कुल मिलाकर, यह महासम्मेलन नक्सलवाद के बाद अबूझमाड़ में लौटती शांति और विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। यह आयोजन अपने लोगों से जुड़ने, सामाजिक ताने-बाने को मजबूत करने और सांस्कृतिक विरासत से रूबरू होने का सशक्त माध्यम बना। अबूझमाड़ की यह पहल पूरे क्षेत्र के लिए एक सकारात्मक और प्रेरणादायक संदेश देती है कि भय के अंधेरे के बाद विकास, एकता और संस्कृति की रोशनी जरूर आती है।

लोक नृत्य व कला का जीवंत प्रदर्शन

महासम्मेलन में ग्रामीण और महिलाएं अपनी पारंपरिक वेशभूषा में नजर आए। रंग-बिरंगे परिधान, आभूषण और पारंपरिक साज-सज्जा ने आयोजन को जीवंत बना दिया। गांव के कलाकारों ने लोक संस्कृति की झलक प्रस्तुत करते हुए नृत्य, गीत और पारंपरिक कला का प्रदर्शन किया। इन प्रस्तुतियों ने यह साबित कर दिया कि कठिन परिस्थितियों के बावजूद अबूझमाड़ की संस्कृति आज भी जीवित और सशक्त है।

निकाय चुनावों की तैयारी में जुटी आप, प्रभारी किए नियुक्त

रायपुर @ पत्रिका. प्रदेश में नवम्बर-दिसम्बर 2026 में चार नगर निगम सहित अन्य निकायों के चुनाव होने हैं। इसके लिए आम आदमी पार्टी ने तैयारी तेज कर दी है। पार्टी के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष उत्तम जायसवाल ने प्रदेश में अपनी मजबूत और आम जनता के कार्यों के लिए समर्पित साथियों की टीम को अहम जिम्मेदारी सौंपी है। दरअसल, पार्टी ने इस चुनाव के लिए चरणबद्ध तरीके से योजना बना ली है, जिसे 5 चरणों में विभाजित किया गया है। इसके तहत प्रभारियों की नियुक्ति की गई है। बिरगांव नगर निगम में विकास पाण्डेय, भिलाई नगर निगम में डॉ. एसके अग्रवाल, भिलाई-चरोदा नगर निगम में देविंदर सिंह भाटिया और रिसाली नगर निगम में संजीत विश्वकर्मा को प्रभारी बनाया गया है।

पेज एक का शेष...

फैशन...

कपड़ों के उत्पादन में बेहिसाब पानी, रसायन और ऊर्जा खर्च हो रही है, जिसकी कीमत प्रकृति को चुकानी पड़ रही है। अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों के मुताबिक, लोग पंद्रह साल पहले की तुलना में लगभग 60 प्रतिशत ज्यादा कपड़े खरीद रहे हैं। खास बात है कि इनमें से कई कपड़े कभी पहने ही नहीं जाते है।

बिना सोचे-समझे खरीददारी पर्यावरण पर संकट: लोग मॉल या ऑनलाइन जाते हैं और बिना सोचे-समझे कपड़े खरीद लेते हैं, जिनकी जरूरत भी नहीं होती। इसे इंपल्स बाइंग कहते हैं, जो आदत बन जाती है। विशेषज्ञों का कहना है कि अगर हम आदतें नहीं बदलेंगे, तो पर्यावरणीय संकट बढ़ेगा। भारत में फास्ट फैशन इंडस्ट्री तेजी से फैल रही है और इसके उत्पादन से पानी की बर्बादी और प्रदूषण हो रहा है।

फास्ट फैशन में दिखावे का भाव: जयपुर की नेहा सैनी कहती हैं, आजकल युवाओं में फास्ट फैशन की दीवानगी है, जिसमें दिखावे का भाव भी है। जबकि स्लो फैशन ब्रांड्स को महत्व देकर सस्टेनेबल शॉपिंग से हम पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभा सकते हैं।

वर्क-लाइफ अनबैलेंस...

रैंडस्टैंड वर्कमॉनिटर 2025 सर्वे के मुताबिक काम के प्रति लचीलापन नहीं मिलने से 60 फीसदी युवा नई नौकरी की तलाश में हैं। इन रिपोर्ट और सर्वे से साफ है कि कॅरियर की सीढ़ी तो ऊपर जा रही है, लेकिन जीवन की गुणवत्ता का ग्राफ तेजी से नीचे गिर रहा है। वर्क-लाइफ बैलेंस अब केवल निजी समस्या नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य संकट बनता जा रहा है।

'काम जीवन का हिस्सा है, पूरा जीवन नहीं' : हैप्पीनेस इंडेक्स में टॉप आइसलैंड भी बेहतर वर्क-लाइफ बैलेंस का उदाहरण है। यहां 4-डे वर्क वीक। नॉर्वे और नीदरलैंड सहित यूरोप के अन्य देशों में काम के बाद कर्मचारी को परेशान करना 'असभ्यता' माना जाता है। वहां का मंत्र है, काम जीवन का हिस्सा है, पूरा जीवन नहीं।'

दिल्ली में...

इस पाबंदी का असर बसों और ट्रकों के साथ कार और दुपहिया वाहन चालकों पर भी पड़ेगा।

कई स्थानों पर प्रदूषण से हालात खराब: बढ़ती ठंड के बीच शनिवार को दिल्ली में वायु प्रदूषण की स्थिति कई स्थानों पर बेहद खराब रही। आनंद विहार,जहांगीरपुरी, बवाना, विवेक विहार, नरेला, रोहिणी और अक्षरधाम में एक्यूआइ 400 से ऊपर दर्ज किया गया। वायु गुणवत्ता बेहद खराब होने के साथ ही कोहरे का भी राजधानी पर असर दिखा, जिससे दृश्यता काफी कम रही।

घने कोहरे की चेतावनी : प्रदूषण से खराब हालात के बीच मौसम विज्ञान विभाग ने रविवार को घने कोहरे का यलो अलर्ट जारी किया है। माना जा रहा है कि इस कारण प्रदूषण का स्तर भी बढ़ेगा। वहीं न्यूनतम तापमान भी 10 डिग्री सेल्सियस से नीचे रहेगा।

'जांच अधिकारी...

उसका हौसला टूट जाए और वह आगे मामले को आगे न बढ़ा सके। पीड़िता ने अपनी शिकायत में आरोप लगाया है कि जांच अधिकारी ने दुर्भावना से और कपटपूर्ण तरीके से जांच की। सीबीआई यदि हमारे वकील के साथ खड़ी होती हो आज यह दिन नहीं देखना पड़ता। पीड़िता ने आरोप लगाया कि अधिकारी ने आरोप पत्र में जाली स्कूल दस्तावेजों का इस्तेमाल किया, जिसमें उसे एक सरकारी स्कूल की छात्रा के रूप में दिखाया गया और उसकी जन्मतिथि भी अलग दिखाई गई, जबकि वास्तव में उसने कभी उस स्कूल में प्रवेश नहीं लिया था।

संसद भवन के सामने प्रदर्शन: सेंगर को हाइईकोर्ट से जमानत मिलने और उत्तराखंड के अंकिता भंडारी हत्या मामले में न्याय की मांग को लेकर शनिवार शाम संसद भवन के पास विरोध प्रदर्शन किया गया। इस दौरान कांग्रेस नेता मुमताज पटेल, एक्टिविस्ट योगिता भयाना समेत कई लोगों को पुलिस ने हिरासत में ले लिया।

स्पंदन

गुलाब कोठारी

लेखक पत्रिका समूह के प्रधान संपादक हैं

स्मरण-2

स्मरण का अर्थ है परमात्मा का निरंतर ध्यान करते रहना। ध्रुवानुस्मृति का अर्थ उपासना ही है। दर्शन के समान है। एक सिद्धांत है कि किसी वस्तु का निरंतर चिंतन करते-करते भावना विषय पर दृढ़ता के साथ केन्द्रीभूत हो जाती है। वस्तु लगता है मानो सामने ही प्रकट हो।

स्मृति जीवन का बड़ा बंधन है। आसक्ति (राग-द्वेष) का मार्ग है। अनेक बार व्यक्ति के विचारों को उद्वेलित कर देती है। अतीत के खूंटे से मुक्त नहीं होने देती। जीवन की स्वतंत्रता को छीन लेती है। इससे मुक्त होने के लिए तो ज्ञान की परिपक्वता काम आ सकती है। विषय की नश्वरता का भान होते ही स्मृति विदा हो जाती है।

स्मृति एक अन्य रूप में भी अभिव्यक्त होती है। इसे ध्रुवानुस्मृति या स्मरण कहते हैं। इसी को बोल-चाल में सुमिरन भी कहते हैं। स्मरण भक्ति मार्ग की स्मृति है। वैसे तो ध्यान को ध्रुवानुस्मृति कहते हैं। छान्दोग्योपनिषद् (7.26.2) ऐसी स्मृति को ध्रुवा कह रहा है। 'ध्रुवास्मृतिः स्मृतिलम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः।' ध्रुवानुस्मृति ही मोक्ष का कारण है।

वेद-पुराण-आरण्यक आदि शास्त्रों में स्मृति नामक शास्त्र भी है, जिसको विधान रूप माना गया है। इसमें सविकल्प ज्ञान की स्मृति को वचनीय तथा निर्विकल्प ज्ञान की स्मृति को अनिर्वचनीय कहा है। व्यवहार में निर्विषय स्मृति होती ही नहीं। ब्रह्मसूत्र में कहा है कि स्मृति तो जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति मन की तीनों दशा में रहती है। ज्ञान के कारण ही व्यक्ति सुषुप्ति से जाग्रत अवस्था में आता है। जागकर कहता भी है कि मैं सुख से सोया। ज्ञान है तो स्मृति भी है। स्वप्न में पदार्थ मिथ्या है, ज्ञान सत्य है। जाग्रत में दोनों सत्य हैं। योगी स्वप्नावस्था में नहीं रहते।

स्मृति का होना एक बात है। यह त्रिगुण आधारित मन के क्षेत्र हैं। स्मरण त्रिगुण से बाहर होने का प्रयास है। अन्य इन्द्रिय विषय तो मन के साथ रहते ही हैं। अध्यात्म में हरि स्मरण का महत्त्व है। गीता में कृष्ण कहते हैं- मुझे स्मरण कर, मुझमें झोंक दे। स्मर कहते हैं काम को, विषयों की कामनाओं को। यही पुरुषार्थ का काम है। मानस के उत्तरकाण्ड में तुलसीदास जी लिखते हैं-रामहि सुमिरिअ गाइए रामहि। संतत सुनिए राम गुण ग्रामहि॥

नवधा भक्ति में श्रवण, कीर्तन, स्मरण का क्रम है। उक्त चौपाई में विपरीत क्रम है। स्मरण-कीर्तन-श्रवण का क्रम दिखाई पड़ता है। इसका एक ही अर्थ है- मन में स्मरण नहीं है, तो श्रवण-कीर्तन का अर्थ नहीं है।

मीरा-सूरदास-तुलसी सगुण भक्ति के तथा कबीर, दादू, नानक आदि निर्गुण भक्ति के प्रतीक रहे हैं, प्रतिनिधि रहे हैं। एक बोल आपको याद होगा-

सुमिरन कर ले मेरे मना
तेरी बीती उमर हरिनाम बिना।

स्मरण का अर्थ है परमात्मा का निरंतर ध्यान करते रहना। ध्रुवानुस्मृति का अर्थ उपासना ही है। दर्शन के समान है। एक सिद्धांत है कि किसी वस्तु का निरंतर चिंतन करते-करते भावना विषय पर दृढ़ता के साथ केन्द्रीभूत हो जाती है। वस्तु लगता है मानो सामने ही प्रकट हो। रावण जब मारीच को स्वर्ण मृग बनने की बात कहता है, तब मारीच कहता है कि कौनसे राम की बात कहते हो। मुझे तो प्रत्येक वृक्ष में राम दिखाई पड़ते हैं। मैं तो तुझमें भी राम देखता हूं। 'वृक्षे वृक्षे च पश्यामि रामं कृष्णाजिनाम्बरम्' (वा. रामा.)। यह स्मरण का प्रभाव है।

भक्तों के चीत्कार को सुनकर (यह आत्मा के केंद्र का स्मरण है) भगवान का आना, रक्षा करना शास्त्रों में स्थान-स्थान पर उद्धृत है। शायद इन्हीं उद्धरणों के कारण देश में भक्ति सम्प्रदायों का इतना महत्त्व है। द्रौपदी का चीर हरण का प्रसंग, भक्त प्रह्लाद के लिए नृसिंह स्वरूप धारण, नरसी मेहता का मायरा, मीरा के उदाहरण, हाथी को मगर के मुंह से छुड़ाना जैसे छुट-पुट उदाहरण तो हजारों होंगे। स्वयं विष्णु के अवतारों का आधार सुमिरन ही रहा है। 'परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम्.....' कृष्ण का उद्घोष ही है।

जप और ध्यान का अभ्यास भी स्मरण का चरम बन जाते हैं। चित्त एकाकार होते-होते आत्मा भी ईश्वर में लीन हो जाता है। भक्त खो जाता है, ईश्वर रह जाता है। इसी को कामना से मुक्त होना कहा जाता है। स्मरण किसी शब्द का नाम नहीं है। शब्दों को रटना नहीं है। स्मरण एक वातावरण है जो मन के चारों ओर निर्मित किया जाता है। जो घेरा साधारण अवस्था में बना रहता है, वह इन्द्रिय जन्य विषयों से बना होता है। इस घेरे को बेधकर नया घेरा बनाना पड़ता है। तब आत्मा को अन्य विषयों के स्थान पर स्मरणीय इष्ट का स्वरूप दिखाई देगा। स्मरण की शक्ति इष्ट की ही शक्ति होती है जो नश्वर को समझकर जीवन से बाहर करने में सहायक होती है। व्यक्ति स्वयं को इन शक्तियों में रूपान्तरित अनुभव करता है। 'अहं ब्रह्मास्मि' हो जाने का मार्ग प्रशस्त होने लगता है।

श्रवण, कीर्तन, सत्संग इस वातावरण को बनाने में सहायक होते हैं। ऐसे अवसरों पर व्यक्ति स्वयं को भूलने का अभ्यास कर पाता है। व्यक्ति के मन के आगे विषय और वातावरण दोनों भिन्न होते हैं। जिन विषयों के जाल से मुक्त होना चाहता है, वे ऐसे अवसरों पर ओझल हो जाते हैं। श्रवण से नई स्मृतियां विकसित होती हैं। कीर्तन व्यक्तित्व को आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश भी कराता है, बांधकर भी रखता है। कीर्तन प्राणों को प्रवृत्त करता है आनंद से जुड़ने को। आनन्द ही वांछित स्वरूप है भक्ति का। कीर्तन में भी व्यक्ति स्वयं को भूल पाना सीखता है। समर्पण भाव बिना इस वातावरण के नहीं आता। कीर्तन अहंकार को तोड़ता है। इसके बिना मन किसी अन्य की सत्ता को स्वीकार ही कहां करेगा? बाहरी विषय में ही व्यस्त रहना सुख का अनुभव कराता रहेगा। स्वयं आत्मा से दूर होता ही जाएगा। नदी की धारा जैसे उद्गम से दूर होती जाती है। स्मरण धारा को राधा बना देता है। हरि से मिलने का द्वार मिल जाता है, खुल जाता है। इसीलिए स्मरण को ध्यान और साक्षात् दर्शन का मार्ग कहा गया है।

(समाप्त)

सामाजिक संस्कारों से जुड़ा यह स्तंभ नई पीढ़ी को भी पढ़ाएं।

काव्यांजलि
POEM

नव प्रभात

डॉ. राजीव जैन

नई शुरुआत की बेला में,
नव संकल्पों का उजास,
आशा की उजली रेखाएं,
रचतीं मन में नव आकाश।

बीते पलों की धूल झाड़कर,
स्मृतियों को विश्राम दें,
भविष्य के पथ पर बढ़ते हुए,
विश्वासों को नाम दें।

नव प्रभात की श्वेत किरणें,
चेतना को छू जाती हैं,
अंतरमन के सूने उपवन में,
संभावनाएं बो जाती हैं।

जो टूटा था वह अनुभव बना,
जो हारा था वह ज्ञान,
हर विफलता के गर्भ से जन्मा,
दृढ़ संकल्प का मान।

थकी हुई राहों पर अब फिर,
साहस के चरण पड़ेंगे,
मौन साधे जो स्वप्न थे अब,
शब्दों में ढलकर निखरेंगे।

संघर्षों की कठोर शिलाओं पर,
विश्वास लिखेंगे नाम,
परिश्रम, धैर्य और कर्म से,
गढ़ लेंगे अपना मुकाम।

नव संकल्प यह आज करें-
रुकना नहीं, झुकना नहीं,
चाहे कितनी हो अंधियारी,
हार को भी जीत बनाना है,
यही जीवन की तैयारी।

अपने भीतर छिपी शक्ति को,
हर दिन पहचानेंगे हम,
स्वयं पर अडिग विश्वास रख,
इतिहास बनाएंगे हम।

नए सपनों की देहरी पर खड़ी,
आशा का दीप जले,
अंधकार की हर परत को,
आलोकित कर वह पले।

नई शुरुआत-नव चेतना,
नव दृष्टि, नव प्रमाण,
आज से बेहतर कल रचने का,
यही जीवन-संधान।

जहां आशाएं थककर बैठी थीं,
वहीं से उड़ान उठे,
जहां भय ने सीमा खींची थी,
साहस वहीं प्रमाण गढ़े।

थकी हुई राहों पर अब फिर,
विश्वास के पग बढ़ेंगे,
मौन में सोए जो स्वप्न थे,
उद्घोष बनकर चमकेंगे।

संघर्षों की कठोर शिलाओं पर,
कर्म लिखेगा इतिहास,
धैर्य, श्रम और अनुशासन से,
आकार लेगा हर प्रयास।

बेस्ट शेफ पापा की ट्रॉफी लिए कमलेशजी घर आए। रमन की तस्वीर के आगे ट्रॉफी रख सुबक उठे। शाम घर पर सबने नववर्ष के आगमन पर ब्रेड पिज्जा खाते हुए हंसते-मुस्कुराते पार्टी मनाई।

बेस्ट शेफ दादाजी

प्रतिभा जोशी
patrika.com

आज नामी स्कूल में हमेशा की तरह नववर्ष के लिए नव आयोजन रखा गया और इस बार आयोजन में परिवार में पिता की भूमिका मनी विनर से किचन विनर में तब्दील होने की होगी। स्कूल से तीसरी कक्षा तक के सभी बच्चों के अभिभावकों को आयोजन की पूर्व सूचना दे दी गई कि नववर्ष के लिए स्कूल के इस आयोजन से आप एक अच्छे पिता ही नहीं, एक अच्छे शेफ भी हैं... का खिताब भी पा सकेंगे।

ऑफिस में बैठी रोहित की मम्मी ने मोबाइल पर मैसेज देखा और आज फिर उसे रमन का किचन में हंसते-मुस्कुराते उसके साथ खाना बनाना याद आ गया। शाम घर लौटते ही मीरा रोहित को देख वहीं ठिठक सी गई। रमन के जाने का दुख रोहित को समय से पहले बड़ा कर गया, इसलिए दूसरी कक्षा का रोहित स्कूल की बातें बताते हुए, पिता के शेफ होने के आयोजन की बात छोड़ गया। रात खाना खाने बैठे सभी तो फिर वही चुप्पी। यहां कमलेशजी को भी रमन के जाने के दुख ने सभी की तरह तोड़ दिया था, पर अब वे सभी का विशेष ध्यान रखने लगे थे। यहां तक कि घर के बरामदे में लगे पेड़-पौधों का ध्यान रखते। आंगन के बाहर खड़े गली के कुत्तों को ब्रेड व छत पर पक्षियों के लिए दाना डालना उनकी जीवन की नित्य दिनचर्या का अभिन्न अंग बन गया था। जहां महीने की पहली तारीख घर में किराने का सामान लाने के लिए लिस्ट बनना शुरू होती तो उनमें पक्षियों के लिए दाना सर्वप्रथम दर्ज किया जाता। चाहे यह लिस्ट कोई भी बनाए और कुत्तों के लिए ब्रेड तो रोहित संग शाम की सैर में लौटते समय लाना बन गया था।

यही वजह भी रही कि घर के इस गमजदा माहौल में जहां सिर्फ रोहित की आवाज मुखर रहती, वहीं उसकी अनुपस्थिति में घर पक्षियों की चहचहाहट से घिरा रहता। कमलेशजी को इस तरह जीवों के प्रति प्यार उड़ेलता देख, उनसे बातें करता देख रोहित भी रोमांचित हो जाता। यही नहीं, अब तो रविवार का दिन कमलेशजी ने उसी के नाम कर दिया था। सभी कुत्तों को ब्रेड और पक्षियों को दाना डालते। अब खाना खाने की औपचारिकता निभाते हुए मीरा बोली, 'पापाजी, कल रोहित के स्कूल में एक प्रोग्राम रखा गया है, जिसमें बच्चों के पापा भाग लेंगे और बेस्ट खाना बनाने वाले पापा को बेस्ट शेफ का इनाम मिलेगा पर रमन...', और मीरा उठकर किचन में जाने लगी।

'मीरा, बेटा मैं इस घर में अब सब का पापा हूं। कल मैं जाऊंगा रोहित के साथ।' 'पापाजी, पता नहीं स्कूल अलाऊ करे या नहीं..।' मीरा दीवार में टंगी रमन की फोटो देखने लगी।

'स्कूल तो कर देगा, पर तेरे पापाजी को कुछ आता ही नहीं तो बनाएंगे क्या।' विमला चिंतित हो उठी।

'दादाजी अब नेट पर सब मिलता है।' और रोहित झट से डाइनिंग टेबल पर रखे कमलेशजी के मोबाइल को खोल उसमें देखने लगा। कमलेशजी बोल पड़े 'चलो ब्रेड पिज्जा खाएंगे।' और पूरा परिवार ब्रेड पिज्जा बनाना सिखाने में लग गया। कल की तैयारियों संग किचन समेट सोए तो छह बजे बमुश्किल ही उठ पाए।

रोहित दादा संग स्कूल पहुंचा। स्कूल में आते ही एक बार तो सभी की निगाहें इनकी ओर खिंची चली आईं। यहां इनकी कमी यह रह गई जल्दबाजी में चिली फ्लेक्स रखना छूट गया।

स्कूल परिसर में एक जगह बेस्ट शेफ पापा का कॉम्पिटिशन शुरू हो गया। कमलेशजी ने भी अपना बैग खोल, मीरा के निर्देशानुसार, सामानों को टेबल पर रखा और ब्रेड पिज्जा बनाने में ऐसे तल्लीन हुए कि सभी के ध्यानाकर्षण का सबब बन गए। ब्रेड पिज्जा को अंत में सजाने के सामानों में चिली फ्लेक्स ढूंढने लगे, तभी अचानक चिड़िया का एक जोड़ा चोंच में एक पैकेट दबाए वहां आया और उनकी समस्या हल हो गई।

स्कूल में आए जज शेफ, क्वालिटी वाइज सभी पिता के बनाए खाने को चेक करने लगे और कमलेशजी सभी प्रतियोगियों संग चेयर पर बैठ निर्णायक मंडल के निर्णय का इंतजार करने लगे। उनके जोरों के खर्राटे रात तीन बजे तक की तैयारियों की थकान का बखान करने लगे।

'तो इस बार स्कूल की इस नई मुहिम के तहत स्कूल के बेस्ट शेफ पापा हैं..... मिस्टर कमलेश जी, रोहित वर्मा के दादाजी।' तालियों की गड़गड़ाहट से कमलेशजी की झपकी टूटी और वे बौखलाहट में रोहित को ही देखने लगे।

'दादाजी, दादाजी आप जीत गए, आप जीत गए।' बच्चों की कतार में सबसे आगे खड़े हो निर्णायक मंडल का निर्णय सुन रहा रोहित दौड़ता हुआ आकर उनसे लिपट गया।

आज रमन के जाने के डेढ़ साल बाद कमलेशजी जीभर कर रोए, क्योंकि यहां न विमला थी, न मीरा और जीत का बहाना भी मिल गया था।

स्कूल से हाथ में बेस्ट शेफ पापा की ट्रॉफी लिए कमलेशजी घर आए और रमन की तस्वीर के आगे अपनी ट्रॉफी रख सुबक उठे। बड़े समय बाद शाम घर पर सभी ने नववर्ष के आगमन पर ब्रेड पिज्जा खाते हुए हंसते-मुस्कुराते पार्टी मनाई।

डाइट/ न्यूट्रिशंस *गोल्डन मिल्क सर्दी-खांसी में आराम पहुंचाता है, पाचन सुधारता है। गर्म पानी में शहद और कच्ची हल्दी मिलाकर पीएं। सर्दी-जुकाम की समस्या दूर होगी।*

मेरी सेहत Health

बी अवेयर *हाइपोथर्मिया एक गंभीर स्थिति है, जिसमें शरीर का तापमान सामान्य स्तर से कम हो जाता है। ठंड में अनावश्यक रूप से बाहर न निकलें, थाइरॉइड रोगी विशेष सतर्क रहें।*

साल 2025 की हैल्थ रिपोर्ट : बदलती लाइफस्टाइल ने बढ़ाया जोखिम

नए साल में अपनाएं ये सेहतमंद आदतें

साल 2025 विदा ले रहा है, लेकिन यह साल सेहत के लिहाज से कई अहम सवाल छोड़कर जा रहा है। इस दौरान लोगों की दिनचर्या, खानपान और कामकाजी दबाव ने स्वास्थ्य पर गहरा असर डाला। कभी वायरल और बैक्टीरियल इंफेक्शन ने चिंता बढ़ाई, तो कभी मोटापा, डायबिटीज और हार्ट जैसी लाइफस्टाइल बीमारियों ने चेताया कि इन बीमारियों से बचाव के लिए जागरूकता, समय पर जांच और जीवनशैली में बदलाव बेहद जरूरी हैं। एक नजर उन प्रमुख बीमारियों पर, जिन्होंने इस साल परेशानी बढ़ाई। साथ ही जानें नए साल में खुद को कैसे हैल्दी रखें...

1. ***संक्रामक रोग:*** इस साल संक्रामक और वायरल संक्रमण जैसे इंफ्लुएंजा आदि के काफी मामले सामने आए हैं। कई लोगों में कोविड-19 के बाद भी खांसी और सांस की तकलीफें आम समस्या बनी रहीं। इन्फ्लुएंजा के ऐसे वैरिएंट देखे गए, जिसमें बुखार तो 3 दिन में ठीक हो गया, लेकिन खांसी 3-4 हफ्तों तक नहीं गई।

2. ***फैटी लिवर:*** पेट और पाचन से जुड़ी समस्याओं में सबसे ज्यादा मामले 'नॉन-अल्कोहलिक फैटी लिवर' के रहे। हैल्थ चेकअप्स के आंकड़े बताते हैं कि इस साल बड़ी तादाद में बच्चों और युवाओं में लिवर संबंधी समस्याएं सामने आईं। इसके पीछे जंक फूड का बढ़ता चलन, शुगरी ड्रिंक्स और फिजिकल एक्टिविटी की कमी आदि प्रमुख कारण हैं।

3. ***दिल की बीमारी और हार्ट फेलियर:*** इस साल देश में हार्ट अटैक से होने वाली मौतें लगभग 31 प्रतिशत तक पहुंच चुकी हैं। उम्रदराज लोग ही नहीं युवा भी बड़ी तेजी से इनकी चपेट में आ रहे हैं। सालभर में ऐसे वीडियो सामने आते रहे जिसमें जिम में एक्सरसाइज करते हुए युवा अचानक हार्ट अटैक से गिर गए या स्कूल में बच्चे को हार्ट अटैक आ गया। इस साल 25-40 साल के स्वस्थ दिखने वाले युवाओं में हार्ट अटैक के मामलों में तेजी से बढ़ोतरी देखी गई।

4. ***डेंगू का बदला रूप:*** 2025 में डेंगू के मामले भी तेजी से बढ़े। कई राज्यों में यह पहले की तुलना में अधिक तेजी से फैल रहा है और अब यह मौसमी बीमारी से स्थायी जन स्वास्थ्य चुनौती बनता जा रहा है। इस बार डेंगू के ऐसे मामले सामने आए जिनमें प्लेटलेट्स गिरने के साथ-साथ लिवर पर भी असर पड़ा।

5. ***कैंसर:*** भारत में कैंसर एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या बन गया है। अनुमान है कि 2026 तक यह संख्या और भी तेजी से बढ़ेगी। तंबाकू का सेवन, स्मोकिंग और अनहैल्दी लाइफस्टाइट इसके मुख्य कारण हैं। महिलाओं में ब्रेस्ट एवं सर्वाइकल कैंसर आम हैं तो पुरुषों को मुंह और फेफड़ों के कैंसर का ज्यादा खतरा होता है।

6. ***मेंटल हैल्थ संबंधी समस्याएं:*** 2025 के आंकड़े और रिपोर्ट बताते हैं कि चिंता, डिप्रेशन और बर्नआउट खतरनाक स्तर पर हैं, खासकर युवाओं और कामकाजी आबादी के बीच, जो लगातार तनाव, डिजिटल थकान, आर्थिक दबाव और सामाजिक अलगाव जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं, जिससे मेंटल और फिजिकल हैल्थ पर बुरा असर पड़ रहा है।

7. ***प्रदूषण जनित सांस की तकलीफें :*** साल के अंत तक आते-आते खराब हवा (AQI) ने लोगों का दम घोंट दिया। अस्थमा और ब्रोंकाइटिस सिर्फ मरीजों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि स्वस्थ लोगों को भी सांस लेने में भारीपन महसूस हुआ। छोटे बच्चों में नेब्युलाइजर की जरूरत इस साल सबसे ज्यादा महसूस की गई। हाल में भी कई राज्यों में वायु प्रदूषण का स्तर बहुत खराब है।

लाइफस्टाइल डिजीज का बढ़ा बोझ

7.3 *करोड़ मरीज हुए डायबिटीज के, कैंसर के 14-16 लाख मामले आए सामने।*

वेक्टर एवं बाल रोग अब भी चुनौती

01 *लाख से ज्यादा केस आए डेंगू के। बच्चों में खसरा, निमोनिया चिंता का विषय रहा।*

महिलाओं में एनीमिया, कैंसर प्रमुख

57 *फीसदी महिलाएं एनीमिया से पीड़ित, ब्रेस्ट एवं सर्वाइकल कैंसर के मामले बढ़े।*

इस संकल्प के साथ करें नए साल का स्वागत

- ***रोजाना चलना और हल्की एक्सरसाइज:*** रोजाना 30 मिनट तेज चलना, सीढ़ियां चढ़ना, हल्की स्ट्रेचिंग या योगासन भी काफी होते हैं। नियमित चलना दिल, शुगर, वजन और मानसिक सेहत सबके लिए फायदेमंद है।
- ***डिजिटल डिटॉक्स की आदत-*** दिन में कुछ घंटे तय करें, उस वक्त फोन से दूरी बनाकर खुद को समय दें। सोने से एक घंटे पहले स्क्रीन बंद करें। बिना फोन के परिवार के साथ समय बिताएं।
- **योग, प्राणायाम और ध्यान-** रोज 10 से 15 मिनट योग, प्राणायाम या ध्यान करने से तनाव, चिंता और थकान कम होती है। गहरी सांसें लेना, अनुलोम-विलोम और ध्यान मन को स्थिर करता है। इसे सुबह या सोने से पहले की दिनचर्या में शामिल करें।
- ***रेगुलर हैल्थ चेकअप-*** अगर शरीर में बीमारी से जुड़े कुछ लक्षण दिखे तो इंतजार न करें। अपना हैल्थ चेकअप कराएं और डॉक्टर से सलाह लें। साल में एक बार ब्लड प्रेशर, शुगर, थायरॉइड और स्वास्थ्य से जुड़ी जरूरी जांचें करवाएं।

- ***नींद को प्राथमिकता दें-*** रोज 7-8 घंटे की नींद शरीर को रिपेयर करती है। अच्छी नींद से इम्युनिटी और एकाग्रता दोनों बढ़ती हैं। नींद को बेहतर बनाने के लिए सोने से 1 घंटा पहले मोबाइल से दूरी बनाएं। तय समय पर सोने और उठने की आदत बनाएं। देर रात चाय-कॉफी पीने से बचें।
- ***संतुलित और सादा खानपान-*** अपनी थाली में हरी सब्जियां शामिल करें। प्रोटीन, मिलेट्स को डाइट में शामिल करें। मौसमी फल खाएं, ये आपको कई रोगों से बचाएंगे। दिनभर में पर्याप्त पानी पीएं। हमेशा हाइड्रेट रहें। तला-भुना खाने से बचें। प्रोसेस्ड फूड से दूरी बनाएं। जरूरत से ज्यादा चीनी और नमक खाने-पीने में न लें।

प्रदूषित *हवा में बाहर निकलने से बचें। एन 95 मास्क इस्तेमाल करें। अगर संभव हो तो घर में प्यूरिफायर लगवाएं। सुबह 6-8 के बीच वॉक करने से बचें। इस समय प्रदूषण पीक पर होता है। सप्ताह में 2-3 दिन स्टीम लें।*

डॉ. रमन कुमार
अध्यक्ष, एकेडमी ऑफ फैमिली फिजिशियंस ऑफ इंडिया, नई दिल्ली
patrika.com

डॉ. मोहम्मद आसिम
जनरल फिजिशियन, ग्रेटर नोएडा
patrika.com

यूनानी चिकित्सा

पहले नजला को पहचानें तभी उपाय होगा कारगर

नजला एक आम समस्या है, जो मौसम बदलने या एलर्जी के कारण होती है। धूल, मिट्टी, धुआं, ठंडी हवा या तेज गंध के संपर्क में आने पर शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली प्रतिक्रिया करती है। इससे नाक की अंदरूनी परत में सूजन आ जाती है। नाक से पानी गिरना, बार-बार छींक आना और खुजली होना जैसी समस्याएं होती हैं।

पहले समझें नजला की तासीर

1. गर्म नजला: इस नजला की प्रकृति में नाक, आंखों और गले में जलन, चेहरे और आंखों का लाल होना, सिरदर्द और बार-बार प्यास लगना आदि लक्षण नजर आते हैं, जो राइनाइटिस से काफी मिलते-जुलते हैं।

2. ठंडा नजला: यह आमतौर पर ठंडे मिजाज और ठंडे मौसम से जुड़ा होता है। इसमें आमतौर पर नाक से गाढ़ा, चिपचिपा और सफेद/पीले रंग का स्त्राव होता है। नाक की रुकावट प्रमुख है लेकिन जलन का एहसास कम होता है। अक्सर दुर्गंध और खांसी भी साथ होती है।

जीवनशैली में असंतुलन है वजह

ये हो सकते हैं प्रभावित करने वाले कारक

- **कमजोर** प्रतिरक्षा या मस्तिष्क की कमजोरी।
- **तनाव** जैसे भावनात्मक उथल-पुथल।
- **ठंडी हवाएं,** गर्म धूप, प्रदूषित हवा या एलर्जी जैसे पर्यावरणीय कारक।
- **आहार** में मसालेदार खाद्य पदार्थ, खट्टी-मीठी चीजों का अधिक सेवन, भोजन के बाद सोना।
- **सिर** को खुला रखना, सावधानी बिना गर्म स्नान।

अब मिजाज के अनुसार करें उपचार

गर्म नजला: *दूध, चिकनाई, दही-खट्टी चीजें, प्याज, लहसुन, चाय-काफी, हैवी फूड न लें।*

- **एक चम्मच** तरबूज के बीज, एक चम्मच कद्दू के बीज और पांच भीगे हुए बादाम को मिक्सी में पीस लें। इसमें शरबत बनफ्शा मिलाकर पीना है।
- **3 ग्राम** बेहदाना, उनाब 5 दाने, नौ सपिस्तां को एक कप पानी में उबालना है। जब पानी आधा रह जाए तो इसे छानकर इसमें शरबत बनफ्शा मिलाकर पीएं।

ठंडा नजला: *बनफ्शा और शहद मिलाकर इसका इस्तेमाल करें।*

- **गुल ए गाओजबान** 5 ग्राम, 3 अंजीर और 5 मुनक्का एक कप पानी में उबालकर शहद मिलाकर पीएं।

- **3 ग्राम** दालचीनी पाउडर को आधा कप पानी में उबालकर 2 चम्मच शहद के साथ लें। 10 ग्राम मुलैठी का काढ़ा बना शहद के साथ लें।
- **कलौंजी** की पोटली बना कर उसे गर्म कर सिकाई करें या उसका धुआं लेना भी काफी फायदेमंद है। बाजरे में नमक मिलाकर उसकी पोटली बनाकर सिकाई कर सकते हैं। बाजरे की पोटली में कलौंजी को मिलाकर भी सिकाई की जा सकती है।

इस तासीर में गुल ए बनफ्शा, गुल ए गाओजबान, साबूस गुंदम आदि यूनानी औषधियां फायदेमंद हैं।

जानें जुकाम और नजला में क्या है अंतर?

- **जुकाम -** तब होता है जब मस्तिष्क से दूषित पदार्थ नाक के छेद में बहता है, जिसके परिणामस्वरूप तीव्र सर्दी जैसे लक्षण, अक्सर लगातार पानी जैसे स्त्राव, नाक की रुकावट और छींक आती हैं।
- **नजला -** यह शब्द विशेष रूप से तब प्रयोग किया जाता है जब पदार्थ मस्तिष्क से गले और छाती में उतरता है। इस नीचे की ओर बहाव के कारण, नजला अक्सर अधिक गंभीर समस्याओं से जुड़ा होता है, जो संभावित रूप से फेफड़ों और पेट को प्रभावित करता है। कभी उस जगह पर अल्सर भी बन सकते हैं, इसलिए लापरवाही न करें।

डॉ. मोहम्मद अकमल
वरिष्ठ यूनानी चिकित्सक, जयपुर
patrika.com

अरावली पहाड़ियों से जुड़ा मुद्दा इन दिनों केवल पर्यावरण तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह एक बड़े सामाजिक–राजनीतिक आंदोलन का रूप लेता जा रहा है। कांग्रेस समेत कई विपक्षी दल इसे पर्यावरण संरक्षण का गंभीर सवाल बता रहे हैं, जबकि केंद्र सरकार इसे खनन माफिया पर सख्त प्रहार के रूप में पेश कर रही है। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट द्वारा दी गई अरावली पहाड़ियों की नई परिभाषा से यह सवाल उठ रहा था कि क्या अरावली के माध्यम से खनन उद्योग को गति प्रदान की कोशिश हो रही है ? हालांकि सरकार यह प्रदर्शित कर रही है कि वह खनन को नियंत्रित करने का प्रयास कर रही है, लेकिन क्या इन प्रयासों से वास्तव में नियमानुसार खनन हो पाएगा ? माना जा रहा है कि अरावली की नई परिभाषा से इन पहाड़ियों में खनन और तेज हो जाएगा और पहाड़ियां खत्म होने के कगार पर पहुंच जाएंगी। यह थार रेगिस्तान को पूर्वी भारत की ओर बढ़ने से रोकने में एक प्राकृतिक दीवार की तरह काम करती है। यही कारण है कि इसे उत्तर भारत का "रक्षा कवच" भी कहा जाता है। विशेषज्ञों के अनुसार अरावली पर्वत श्रृंखला केवल जीव-जंतुओं के लिए ही नहीं, बल्कि इंसानों के लिए भी एक लाइफ लाइन है। अब सबसे अहम यह है कि क्या सचमुच अरावली का भविष्य सुरक्षित है? इसी का विश्लेषण करता *आजकल* का यह खास अंक...

अरावली के अस्तित्व पर संकट

विश्लेषण

रवि शंकर

स्वतंत्र पत्रकार

देश में बढ़ते विकास के बीच जंगल, पहाड़ अक्सर अपनी कुर्बानी देते हैं भारत में इसका सबसे ताजा उदाहरण अरावली है जो विकास बनाम पर्यावरण के बीच खड़ी है। करीब 690 किलोमीटर लंबी अरावली, जो गुजरात से शुरू होकर राजस्थान और हरियाणा होते हुए दिल्ली तक फैली है। इसने सदियों से उत्तर-पश्चिमी भारत में जलवायु संतुलन और बायोडायवर्सिटी को बचाए रखा है। आज अरावली एक बार फिर विकास, पर्यावरण संरक्षण और कानून के टकराव के बीच में खड़ी है। अरावली का महत्व सिर्फ पहाड़ों तक सीमित नहीं है। यह थार रेगिस्तान को पूर्वी भारत की ओर बढ़ने से रोकने में एक प्राकृतिक दीवार की तरह काम करती है। यही कारण है कि इसे उत्तर भारत का "रक्षा कवच" भी कहा जाता है। पर्यावरण के लिहाज से अरावली भूजल को रिचार्ज करने में मदद करती है, जिससे राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली-एनसीआर में पानी का संतुलन बना रहता है।

करीब 690 किलोमीटर लंबी अरावली, जो गुजरात से शुरू होकर राजस्थान और हरियाणा होते हुए दिल्ली तक फैली है। इसने सदियों से उत्तर-पश्चिमी भारत में जलवायु संतुलन और बायोडायवर्सिटी को बचाए रखा है। आज अरावली एक बार फिर विकास, पर्यावरण संरक्षण और कानून के टकराव के बीच में खड़ी है। आज, अरावली रेंज खतरे में है। अवैध माइनिंग ने 20 फीसदी इलाके को नष्ट कर दिया है। वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया है कि यहां के जंगलों को बचाना और उनका विस्तार करना बहुत ज़रूरी है। माइनिंग को कंट्रोल करना भी ज़रूरी है

प्रदूषण रोकने में मददगार

ये पहाड़ियां धूल भरी आंधियों को रोकती हैं और प्रदूषण को सोखकर दिल्ली-एनसीआर की हवा को साफ रखने में अहम भूमिका निभाती हैं। विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि अगर अरावली कमजोर हुई तो रेगिस्तान फैल सकता है और उत्तर भारत में जल संकट और गंभीर हो जाएगा। एक ओर अरावली को उत्तर भारत के पर्यावरणीय संतुलन के लिए बेहद अहम बताया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर विपक्ष इसे प्रदेश के भविष्य से जुड़ा मुद्दा बनाकर सड़क से सदन तक संघर्ष की तैयारी में जुट गया है। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट ने नवंबर, 2025 में अरावली की परिभाषा बदल दी, जिसमें 100 मीटर से ऊंची जगहों को ही पहाड़ी माना जाएगा। इस आदेश से सिर्फ राजस्थान के 15 जिलों में 12,081 पहाड़ियों में से केवल 1,048 (8.7 फीसदी) ही इस मानक को पूरा कर सकेंगी और 90 फीसदी से अधिक क्षेत्र संरक्षण के दायरे से बाहर हो जाएगा। यही बात पर्यावरणविदों को चिंता में डाल रही है। उनका कहना है कि सिर्फ़ ऊँचाई के आधार पर अरावली को परिभाषित करने से कई ऐसी पहाड़ियों पर खनन और निर्माण के लिए दरवाज़ा खुल जाने का खतरा पैदा हो जाएगा, जो 100 मीटर से छोटी हैं, झाड़ियों से ढंकी हुई और पर्यावरण के लिए जरूरी हैं।

जनजीवन से जुड़ा है मामला

यह फैसला सिर्फ कानूनी व्याख्या का मामला नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों के जीवन, पर्यावरण व भविष्य से जुड़ा सवाल है। इसलिए पर्यावरणविद मांग कर रहे हैं कि सरकार अरावली क्षेत्रों को वैज्ञानिक मानकों से परिभाषित करे, जिसमें उसका भूगोल, पर्यावरण. वन्यजीव संपर्क और जलवायु संघर्ष क्षमता शामिल हो। हालांकि, सरकार और कुछ कानून विशेषज्ञों का कहना है कि नई परिभाषा 1980 के दशक से चली आ रही, जो इस लड़ाई पर एक सामान्य परिभाषा बनाएगी। कोर्ट ने भी माना कि पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ आर्थिक वास्तविकताओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। अरावली क्षेत्र में पत्थर और खनिजों का खनन हजारों लोगों की आजीविका से जुड़ा है और बुनियादी ढांचे के लिए जरूरी है। बिना ठोस वैज्ञानिक और कानूनी आधार के पूरी तरह से प्रतिबंध के कई गंभीर परिणाम हो सकते हैं। केंद्र सरकार का कहना है कि नई परिभाषा का मकसद नियमों को मज़बूत करना और एकरूपता लाना है, न कि सुरक्षा को कम करना। केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय ने कहा कि यह मान लेना ग़लत है कि 100 मीटर से कम ऊंचाई वाली हर जमीन पर खनन की इजाज़त होगी।

अब अरावली की नई परिभाषा

पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि 1,47,000 वर्ग किलोमीटर में फैली अरावली श्रृंखला का सिर्फ़ दो फीसदी हिस्सा ही संभावित रूप से खनन के लिए इस्तेमाल हो सकता है और वह भी विस्तृत अध्ययन और आधिकारिक मंजूरी के बाद। बहरहाल, अरावली पर्वत श्रृंखला के संरक्षण को लेकर सुप्रीम कोर्ट के हालिया आदेश और केंद्र सरकार द्वारा अरावली की नई परिभाषा तय करने के प्रयासों के बाद राजस्थान की राजनीति गरमा गई है। इस पूरे विवाद की जड़ में एक सबसे अहम सवाल है, जो देखने में सरल लेकिन असल में बेहद खतरनाक है- आखिर अरावली की कानूनी और पर्यावरणीय परिभाषा क्या होनी चाहिए? सुप्रीम कोर्ट ने जो नई परिभाषा पर मुहर लगाई है क्या वो पर्यावरण मानकों और साइंटफिक स्केल के दायरे में किया गया है? यह सवाल इसलिए अहम बन जाता है क्योंकि इसी परिभाषा के आधार पर यह तय होता है कि कौन-सा क्षेत्र खनन, रियल एस्टेट, इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स या संरक्षण के दायरे में आएगा। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट द्वारा केंद्र सरकार की सुझाई गई परिभाषा को स्वीकार किए जाने के बाद यह बहस और तीखी हो गई है। अरावली का महत्व केवल स्थानीय नहीं, बल्कि क्षेत्रीय स्तर पर भी अत्यंत व्यापक है। यह पर्वतमाला थार मरुस्थल और उत्तर भारत के घनी आबादी वाले मैदानों के बीच एक प्राकृतिक ढाल की तरह काम करती है। राजस्थान, दिल्ली और गुरुग्राम जैसे क्षेत्रों में यह धूल भरी हवाओं को रोकने, तापमान नियंत्रित करने और वर्षा के जल को जमीन में समाहित करने में सहायक है। अरावली के जंगल कार्बन अवशोषण और वायु शुद्धिकरण में भी अहम भूमिका निभाते हैं। यदि अरावली को गंभीर क्षति पहुंचती है, तो इसके परिणाम दूरगामी होंगे। विशेषज्ञों के अनुसार इससे वायु प्रदूषण में वृद्धि, भीषण गर्मी और हीटवेव, और भूजल स्तर में तेज गिरावट जैसी समस्याएं और गहराएंगी।

माइनिंग कंट्रोल करना ज़रूरी

यह राजस्थान में मरुस्थलीकरण की गति बढ़ सकती है, जबकि दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण और जल संकट और गंभीर रूप ले सकता है। अरावली पर सुप्रीम कोर्ट की नई परिभाषा ने एक ऐसे निर्णायक मोड़ की ओर संकेत किया है, जहां कानूनी व्याख्या और पर्यावरणीय वास्तविकता के बीच संतुलन स्थापित करना अनिवार्य हो गया है। आने वाले समय में इस फैसले के प्रभाव केवल कानून की किताबों तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि उत्तर भारत के पर्यावरण और जनजीवन पर गहरी छाप छोड़ सकते हैं। दरअसल, यह पूरा मामला दिखाता है कि अरावली संरक्षण की लड़ाई लंबी है। विकास और पर्यावरण का संतुलन कैसे बनेगा, यह समय बताएगा। लेकिन आज, अरावली रेंज खतरे में है। अवैध माइनिंग ने 20 फीसदी इलाके को नष्ट कर दिया है। सरकार अरावली ग्रीन वॉल प्रोजेक्ट चला रही है। वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया है कि यहां के जंगलों को बचाना और उनका विस्तार करना बहुत ज़रूरी है। माइनिंग को कंट्रोल करना भी ज़रूरी है।

जीवन के लिए पर्वतीय श्रृंखला का जिंदा रहना जरूरी

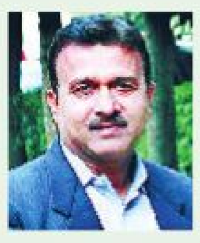

मुद्दा

सुशील देव

वरिष्ठ स्तंभकार

अरावली पहाड़ियों से जुड़ा मुद्दा इन दिनों केवल पर्यावरण तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह एक बड़े सामाजिक–राजनीतिक आंदोलन का रूप लेता जा रहा है। कांग्रेस समेत कई विपक्षी दल इसे पर्यावरण संरक्षण का गंभीर सवाल बता रहे हैं, जबकि केंद्र सरकार इसे खनन माफिया पर सख्त प्रहार के रूप में पेश कर रही है। दशकों से चल रही राजनीति, विरोधाभासी फैसलों और बदलती परिभाषाओं के बीच यह सवाल सबसे अहम है कि क्या सचमुच अरावली का भविष्य सुरक्षित है? हाल ही में केंद्र सरकार ने अरावली पहाड़ियों में नए खनन मामलों पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया है। यह प्रतिबंध गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली-एनसीआर तक फैली पूरी अरावली श्रृंखला पर लागू किया गया है। केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने यह भी स्पष्ट किया है कि जो खदानें पहले से संचालित हैं, उन्हें सुप्रीम कोर्ट के आदेशों के अनुसार सभी पर्यावरणीय मानकों और सुरक्षा उपायों का सख्ती से पालन करना होगा। सरकार का दावा है कि इससे प्रकृति को हो रहे नुकसान को रोका जाएगा और अरावली क्षेत्र में हरियाली लौटाने के प्रयास किए जाएंगे। इसी बीच अरावली की परिभाषा को लेकर विवाद गहरा गया है। हालिया सुप्रीम कोर्ट के फैसले में कहा गया कि केवल वही भूमि अरावली पहाड़ी मानी जाएगी, जो आसपास की जमीन से कम से कम 100 मीटर ऊंची हो।

इस परिभाषा के सामने आते ही पर्यावरणविदों और विपक्षी दलों में आशंका जताई कि इससे बड़ी संख्या में छोटी पहाड़ियां, टीले और झाड़ियों से ढके क्षेत्र संरक्षण के दायरे से बाहर हो जाएंगे। कांग्रेस का आरोप है कि नई परिभाषा के तहत अरावली का 90 प्रतिशत से अधिक हिस्सा संरक्षित नहीं रह पाएगा और उसे रियल एस्टेट या अन्य व्यावसायिक गतिविधियों के लिए खोला जा सकता है। सरकार इन आरोपों को सिरे से खारिज करती है। उसका कहना है कि विपक्ष भ्रम फैला रहा है और खनन पर लगे प्रतिबंध से बौखला गया है। पर्यावरण मंत्रालय का दावा है कि अरावली के संरक्षण के लिए सरकार पूरी तरह प्रतिबद्ध है और सर्वे ऑफ इंडिया को नई परिभाषा के आधार पर नक्शा तैयार करने के निर्देश केवल स्पष्टता के लिए दिए गए हैं। बावजूद इसके, इस मुद्दे पर देशभर में विरोध प्रदर्शन, हस्ताक्षर अभियान और जनसभाएं हो रही हैं, जो बताती हैं कि जनता की चिंता गहरी है। अरावली मानसून के दौरान बादलों की दिशा मोड़ने में अहम भूमिका निभाती है, जिससे पूर्वी राजस्थान और उत्तरी मैदानों को वर्षा मिलती है। यह थार मरुस्थल के विस्तार को रोकती है और रेत-धूल को दिल्ली-एनसीआर तक पहुंचने से काफी हद तक थामे रखती है। इसके अलावा, अरावली को भूजल रिचार्ज का इंजन भी कहा जाता है। इस क्षेत्र में मौजूद जंगल, चट्टानें और मिट्टी वर्षा जल को जमीन में समाहित कर जलस्तर बनाए रखने में मदद करते हैं।

यदि अरावली कमजोर होती है, तो दिल्ली-एनसीआर जैसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में पानी और हवा दोनों का संकट और गहरा सकता है। पहले ही गुरुग्राम, फरीदाबाद और आसपास के इलाकों में अरावली की कई पहाड़ियां कंक्रीट के जंगल में तब्दील हो चुकी हैं।

यदि अरावली कमजोर होती है, तो दिल्ली-एनसीआर जैसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में पानी और हवा दोनों का संकट और गहरा सकता है। पहले ही गुरुग्राम, फरीदाबाद और आसपास के इलाकों में अरावली की कई पहाड़ियां कंक्रीट के जंगल में तब्दील हो चुकी हैं। इतिहास पर नजर डालें तो अरावली को लेकर राजनीतिक दलों की भूमिका भी सवालों के घेरे में रही है। आरोप है कि 2003 में कांग्रेस सरकार के दौरान 100 मीटर ऊंचाई वाली परिभाषा को नीति में रखी गई थी, जिसे 2010 में सुप्रीम कोर्ट में पेश किया गया। तब अदालत ने उस रिपोर्ट को खारिज कर दिया था। अब करीब 14 साल बाद वही परिभाषा एक बार फिर सामने आई और सुप्रीम कोर्ट की मुहर लग गई। इस कारण विपक्ष और पर्यावरणविद् दोनों सरकार की मंशा पर सवाल उठा रहे हैं। सच्चाई यह है कि अरावली को सबसे ज्यादा नुकसान राजनीति से ज्यादा लालच और अनियंत्रित विकास ने पहुंचाया है। खनन, रियल एस्टेट और बुनियादी ढांचे के नाम पर इस पर्वतमाला को लगातार काटा गया। नतीजा यह है कि दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण का स्तर खतरनाक बना रहता है और लोगों की औसत आयु तक प्रभावित हो रही है। आज जरूरत इस बात की है कि अरावली को केवल राजनीतिक बहस का विषय न बनाकर राष्ट्रीय धरोहर के रूप में देखा जाए। वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों और स्थानीय समुदायों की राय को गंभीरता से सुना जाए। विकास और संरक्षण के बीच संतुलन बनाना ही एकमात्र रास्ता है। क्योंकि सच यही है- अगर अरावली जिंदा रहेगी, तभी हमारी हवा, पानी और जीवन भी सुरक्षित रह पाएगा।

अरावली बचाने की मुहिम पर सवाल उठाना गलत

विवाद

रोहित कौशिक

स्वतंत्र पत्रकार

अरावली पर चले रहे विवाद के बीच केन्द्र सरकार ने राज्यों को अरावली में नए खनन पट्टे देने पर पूरी तरह रोक लगाने के निर्देश जारी कर दिए हैं। पर्यावरण मंत्रालय ने कहा कि यह रोक पूरे अरावली क्षेत्र पर समान रूप से लागू होगी और इसका मकसद इस क्षेत्र की अखंडता को बनाए रखना है। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट द्वारा दी गई अरावली पहाड़ियों की नई परिभाषा से यह सवाल उठ रहा था कि क्या अरावली के माध्यम से खनन उद्योग को गति प्रदान की कोशिश हो रही है ? हालांकि सरकार यह प्रदर्शित कर रही है कि वह खनन को नियंत्रित करने का प्रयास कर रही है लेकिन क्या इन प्रयासों से वास्तव में नियमानुसार खनन हो पाएगा ? माना जा रहा है कि अरावली की नई परिभाषा से इन पहाड़ियों में खनन और तेज हो जाएगा और अरावली की पहाड़ियां खत्म होने के कगार पर पहुंच जाएंगी, जिससे कई तरह के पर्यावरणीय बदलाव होंगे। मुख्य रूप से राजस्थान में अरावली की नई परिभाषा को लेकर आन्दोलन तेज हो गया है। दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और गुजरात में अरावली की पहाड़ियां हैं लेकिन राजस्थान में अरावली की 80 प्रतिशत पहाड़ियां हैं। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट ने अरावली की पहाड़ियों में अवैध खनन को रोकने के लिए केन्द्र सरकार से जवाब मांगा था। कोर्ट का कहना था कि अरावली की पहाड़ियों को लेकर कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं है। सभी राज्य अपने अनुसार यह तय करते हैं कि वे किस पहाड़ को पहाड़ मानेंगे और किस पहाड़ पर खनन करने की इजाजत देंगे। इसी संशय को दूर करने के लिए केन्द्रीय पर्यावरण मंत्रालय ने एक समिति बनाई। इस समिति ने सुप्रीम कोर्ट में अपनी सिफारिशें दाखिल कीं। केन्द्र सरकार ने इस सिफारिशों में सुप्रीम कोर्ट को बताया कि यदि किसी पहाड़ की ऊंचाई 100 मीटर या उससे ज्यादा है तो उस पहाड़ से 500 मीटर के इलाकों को अरावली क्षेत्र माना जाएगा और वहां किसी भी प्रकार के खनन की अनुमति नहीं होगी। सुप्रीम कोर्ट ने इन सिफारिशों को स्वीकार करते हुए कहा कि जो पहाड़ इस परिभाषा के हिसाब से अरावली क्षेत्र में नहीं आएंगे, वहां सस्टेनेबल माइनिंग यानी टिकाऊ खनन हो सकेगा। सस्टेनेबल माइनिंग का अर्थ यह है कि खनन करते हुए वहां के पर्यावरण, जल, जंगल और जनता की जिंदगी को स्थायी हानि न हो। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के खिलाफ लोगों में गुस्सा है। लोगों का मानना है कि इस परिभाषा के हिसाब से अरावली के 90 प्रतिशत पहाड़ खत्म हो जाएंगे क्योंकि इन पहाड़ों की ऊंचाई 100 मीटर से ज्यादा नहीं है। यह सही है कि अरावली क्षेत्र में पहले से ही खनन होता रहा है लेकिन अब समाज में अरावली को बचाने की चिंता देखी जा रही है तो इस चिंता को कठघरे में खड़ा नहीं किया जाना चाहिए।

सस्टेनेबल माइनिंग का अर्थ यह है कि खनन करते हुए वहां के पर्यावरण, जल, जंगल और जनता की जिंदगी को स्थायी हानि न हो।

देश में तमाम प्राकृतिक धरोहरों को संभालना होगा

सियासत

योगेश कुमार सोनी

वरिष्ठ पत्रकार

हाल ही में राजस्थान में अरावली की पहाड़ियां इन दिनों सियासत की जंग का मैदान बनी हुई हैं। अरावली को लेकर सब अपने-अपने हिसाब से परिभाषित कर रहे हैं जिसे लेकर जबरदस्त विवाद छिड़ा हुआ है। आरोप-प्रत्यारोप का खेल भी जमकर हो रहे हैं। भाजपा आरोप लगा रही है कि पूर्व सीएम अशोक गहलोत जो 'सेव अरावली' कैंपेन चला रहे थे, वह उन्हीं के कार्यकाल में अरावली 100 मीटर की परिभाषा की सिफारिश की गई थी और हमने वो ही किया।

हमें पहले यह समझना चाहिए कि अरावली भारत की रीढ़ है जो चार राज्यों से गुजरती है। यह उत्तर-पश्चिम भारत में लगभग 670 किलोमीटर लंबी मानी जाती है। यह दिल्ली के पास से शुरू होकर दक्षिण हरियाणा और राजस्थान के अंदर तक जाती है और फिर गुजरात में अहमदाबाद के आसपास के मैदानों तक पहुंचती है।

भूगोलविद सीमा जालान बताती हैं कि अरावली 67 करोड़ वर्ष पुरानी पर्वतमाला है और यह नहीं होतीं तो उत्तर भारत की जाने कितनी नदियां नहीं होतीं। जाने कितने जंगल, कितनी वनस्पतियां, कितने बहुमूल्य धातु और कितने इकोलॉजिकल वैभव नहीं होते। विशेषज्ञों के अनुसार अरावली पर्वत श्रृंखला केवल जीव-जंतुओं के लिए ही नहीं बल्कि इंसानों के लिए भी एक लाइफ लाइन है। सरकार इस मुद्दे की गंभीरता को समझे। जिस तरह केंद्र सरकार ने अरावली पहाड़ियों को 100 मीटर या उससे अधिक ऊंचाई वाली पहाड़ियों को अरावली घोषित किया गया है और इस पर सुप्रीम कोर्ट ने अपनी मुहर लगा दी। इसके अलावा हरियाणा सरकार के हस्तक्षेप करने का कारण यह है कि अरावली का लगभग 10 प्रतिशत हिस्सा ही हरियाणा में आता है और बाकि हिस्सा राजस्थान में है। जनता का आरोप है कि बीते कई वर्षों से अरावली की चोरी हो रही है और 100 मीटर बने

आज जब अरावली की समस्या आई तो हर कोई अपनी उपस्थिति दर्ज करा है लेकिन यह सबको पता है कि कोई भी प्राकृतिक व ऐतिहासिक धरोहर नष्ट या क्षतिग्रस्त एकदम या कुछ समय में नहीं होती।

कानून का कोई औचित्य नहीं है। वहीं, दूसरी ओर सरकार ने इसकी पैरवी की और ये गाइडलाइन सुप्रीम कोर्ट के जरिए की जा रही है। कांग्रेस का आरोप है कि एक तरफ देश में प्रदूषण लगातार बढ़ रहा है, वहीं दूसरी ओर केंद्र सरकार अरावली जैसी प्राकृतिक दीवार को कमजोर करने का काम कर रही है।

पहले ही अरावली में बड़े स्तर पर अवैध खनन हो रहा है। बड़े स्तर पर भ्रष्टाचार हो रहा है, ऐसे में कैसे बचेगी अरावली और कैसे बचेगा पर्यावरण? बहरहाल, आज जब अरावली की वजह से प्राकृतिक समस्या आई तो हर कोई अपनी उपस्थिति दर्ज करा है लेकिन यह सबको पता है कि कोई भी प्राकृतिक व ऐतिहासिक धरोहर नष्ट या क्षतिग्रस्त एकदम या कुछ समय में नहीं होती। इसमें लंबा समय लगता है और यह खुला खेल हमेशा शासन-प्रशासन के सामने ही होता रहा है। मौजूदा स्थिति में हाईटेक होने के लिए हर रोज विश्व का एक सकारात्मक दिशा की ओर निर्माण हो रहा है जिसमें भारत का नाम भी बेहद चुनिंदा देशों में गिना जाने लगा। हम अन्य देशों की अपेक्षा पर्यावरण व प्राकृतिक धरोहरों को बचाने व संभालने में उतने सक्षम नहीं हैं जितने कि हमें जरूरत है। दरअसल मामला यह है कि लगातार बढ़ रही जनसंख्या को व्यवस्थित करने के लिए हम पर्यावरण व धरोहरों का विनाश करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। मानव जीवन की सबसे अहम व मूलभूत जरूरत को दरकिनार करके तरक्की करना अपराध सा लगता है।

हमारे यहां जनसंख्या का तेजी से बढ़ना जारी है तो उस आधार पर सरकारों को जनता के लिए जगह की व्यवस्था करनी होती है जिसके चलते जंगल का पर्यावरण व पहाड़ों को बर्बाद किया जा रहा है देश की तरक्की व जनता की जरूरत के लिए ऐसे मुद्दों की गंभीरता न समझना मानव जीवन पर ही भारी पड़ रहा है। वैज्ञानिकों ने लगातार हो रही आपदाओं के लिए प्राकृतिक संसाधनों के अधिक इस्तेमाल को जिम्मेदार ठहराया है। उनका मानना है कि आज स्थिति के आधार पर हमारी धरती अपने भार से कहीं अधिक भार वहन कर रही है। अगर यही हाल रहा तो अगले कुछ वर्ष बाद ही धरती रहने लायक नहीं बचेगी।

आजादी की लड़ाई से लेकर देश के नवनिर्माण तक कांग्रेस

स्थापना दिवस

दीपक बैज

कांग्रेस ने अपनी स्थापना के 140 वर्ष पूरे कर लिए हैं। 141वें स्थापना दिवस की आप सभी को बधाई। आज भले ही अधिकांश राज्यों में कांग्रेस की सरकार नही है, लेकिन कांग्रेस ही देश का एक मात्र राजनैतिक दल है जिसका कार्यकर्ता भारत के उत्तर, दक्षिण, पूरब से लेकर पश्चिम के हर गांव में मिल जाएगा। 28 दिसंबर 1885 को कुछ बुद्धिजीवियों ने भारत के लोगों की जरूरतों, उनकी समस्याओं के विमर्श के लिए एक मंच की जरूरत महसूस की, जो तत्कालीन हुक्मरानों के समक्ष भारत की जनता की आवाज बन सके, सरकार के द्वारा बनाई जा रही नीतियों में भारतीयों की जरूरतों को स्थान दिलवाया जा सके। इन्ही उद्देश्यों को लेकर 72 सदस्यों ने कांग्रेस की स्थापना की जिनमें एओ ह्यूम, दादाभाई नौरोजी, व्योमेश चन्द्र बेनर्जी, काशीनाथ तेलंग, राघवाचारी प्रमुख थे। कांग्रेस का पहला अधिवेशन व्योमेश चन्द्र बेनर्जी की अध्यक्षता में मुंबई में हुआ। भारतीयों की समस्याओं को उठाने के उद्देश्य के लिए गठित की गई कांग्रेस पार्टी बहुत जल्दी ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की मुखर विरोधी बन गयी। गठन से लेकर भारत की आजादी तक कांग्रेस के लगभग 15 मिलियन सदस्य बन गए थे।

गुलाम भारत के लोगों में राजनैतिक चेतना जागृत कर उनमें आजाद मुल्क की ललक पैदा करना एक बड़ा कठिन काम था, जब तक लोगों में आजादी और स्वराज की जरूरत की चेतना जागृत नहीं होगी, अंग्रेजी शासन के खिलाफ कोई भी आंदोलन खड़ा नहीं हो सकता, इस बात को कांग्रेस ने भली भांति समझ लिया था, इसीलिए कांग्रेस ने शुरू से ही अंग्रेजी हुकूमत के विरोध के कार्यक्रमों में आम आदमी को जोड़ा और सामूहिक नेतृत्व पर जोर दिया। 1915 में महात्मा गांधी के भारत आगमन के बाद उन्हें कांग्रेस की अध्यक्षता सौंपी गयी, 1919 में गांधी जी कांग्रेस के प्रतीक पुरुष बन गए और इसके बाद कांग्रेस ने देश भर में अंग्रेजी हुकूमत के अत्याचारों के खिलाफ जनांदोलनों को खड़ा करना शुरू किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1929 के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज का नारा दिया और रावी नदी के तट पर तिरंगा फहराया गया।

कांग्रेस आजादी का लक्ष्य प्राप्त करने में इसलिए सफल हुई क्योंकि वह लोकतांत्रिक मूल्यों को लेकर आगे बढ़ रही थी। आजादी की लड़ाई में कांग्रेस किसी एक वर्ग की नही बल्कि सम्पूर्ण भारत की अगुवाई कर रही थी। कांग्रेस में कई विचार धाराएं थी, गांधी जी सहित कांग्रेस के नेतृत्वकर्ताओ ने वैचारिक मतभिन्नता का पूरा सम्मान किया तथा विभिन्न विचारों को लेकर स्वतंत्र भारत के एक लक्ष्य के साथ कांग्रेस दुनिया के सबसे बड़े सफल अहिंसक आंदोलन को चलाने में कामयाब हुई। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान कांग्रेस भारत के जनमानस की आईना थी। सारा भारत कांग्रेस के साथ था सिर्फ साम्प्रदायिक जातिवादी और अंग्रेजो के प्रति श्रद्धा रखने वाले संगठन जरूर कांग्रेस के खिलाफ थे।

आजादी के बाद छोटे बड़े रजवाड़ो रियासतों को समाहित कर लोकतांत्रिक भारत के निर्माण के साथ समानता वाले भारत का निर्माण, सबको समान

आणथक अवसर के साथ धार्मिक, सामाजिक और लैंगिक समानता को सुनिश्चित करना बहुत बड़ी चुनौती थी। आजाद भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित नेहरू जानते थे कि यह सारे लक्ष्य तभी फलीभूत हो सकते है जब भारत आर्थिक रूप से सुदृढ और सुरक्षित हो, स्वस्थ हो। इसीलिये नेहरू जी ने सिचाई परियोजनाओं के साथ बड़े कल कारखानो की नींव साथ में रखी। नेहरू जी ने विज्ञान और संस्कृति के सामंजस्य वाले भारत की कल्पना की थी। यही कारण था कि उन्होंने देश में आईआईएम, आईआईटी जैसे अभियांत्रिकी प्रबन्ध संस्थानों से लेकर बेहतरीन चिकित्सा संस्थान, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की स्थापना की। पंडित नेहरू के बाद की कांग्रेस सरकारों ने उनके द्वारा स्थापित इस मजबूत नीव पर आधुनिक भारत की शानदार इमारत की स्थापना पर कोई कसर नही छोड़ी।

नेहरू जी के बाद शास्त्री जी के समय अनाज की उपलब्धता बढ़ाई, देश की सुरक्षा को लक्ष्य रख कर जय जवान जय किसान का नारा दिया गया। इंदिरा जी हरित क्रांति, बीस सूत्री कार्यक्रम, अंतरिक्ष कार्यक्रम, परमाणु कार्यक्रम से सुदृढ़ भारत के लक्ष्य को प्राथमिकता में रखा। राजीव गांधी जब भारत के प्रधानमंत्री बने तब देश को 21वीं सदी की ओर ले जाने के लिए कांग्रेस की प्राथमिकता में सूचना प्रोद्योगीकी और कम्प्यूटर क्रांति थी, मतदान की आयु 21 से घटाकर 18 करके युवाओं को लोकतंत्र के महापर्व में शामिल होने का अवसर दिया, पंचायतों को सशक्तीकरण कर सत्ता के विकेंद्रीकरण का मार्ग भी खोला गया। पीवी नरसिंहराव जी के समय आर्थिक उदारीकरण को अपना कर वैश्विक व्यापारिक जगत में भारत को मजबूती से खड़ा करने का प्रयास किया गया। यूपीए चेयर पर्सन श्रीमती सोनिया गांधी के मार्गदर्शन तथा मनमोहन सिंह के नेतृत्व में आर्थिक सुधारों के साथ खाद्य सुरक्षा कानून, सूचना के अधिकार, महात्मा गांधी रोजगार गारंटी, शिक्षा का अधिकार, भू–अधिग्रहण जैसे कानूनों को लाकर कांग्रेस ने आम आदमी के जीवन स्तर को सुधारने का प्रयास किया।

2014 में केंद्र की सत्ता तथा 2023 में राज्य की सत्ता हाथ से जाने के बाद कांग्रेस एक सजग विपक्ष की भूमिका निभा रही है। बहुमत के अतिवादी चरित्र का विरोध जिस बेबाकी और निडरता से सोनिया गांधी, राहुल गांधी, खड़गे जी कर रहे है वह कांग्रेस के उन्ही मूल्यों उपज है जिन मूल्यों को लेकर कांग्रेस ने दुनियां के सबसे बड़े लोकतांत्रिक आंदोलन और भारत के सबसे बड़े राष्ट्रवादी आंदोलन से भारत की आजादी की लड़ाई को लड़ा था। लोकतांत्रिक प्रक्रिया अपनाकर पाटएँ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर मल्लिकार्जुन खड़गे जैसे अनुभवी शख्स को पार्टी के निचले पायदान ब्लाक अध्यक्ष से राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना जाना कांग्रेस जैसे दल में ही संभव है। आजादी की लड़ाई का प्रमुख हथियार नेशनल हेराल्ड तथा यंग इंडिया जैसे देश और कांग्रेस की अमूल्य धरोहरों को लेकर केंद्र की सत्तारूढ़ दल भाजपा के द्वारा षड़यंत्र किया गया। कांग्रेस के नेतृत्व पर प्रहार किया गया। आजादी की लड़ाई के इन प्रतिमानों यंग इंडिया और नेशनल हेराल्ड को बचाने के प्रयासों को ही अपराध साबित करने की कुचेष्ठा की गई, लेकिन अदालत में यह षड़यंत्र बेनकाब हो गया।

कांग्रेस की मनमोहन सरकार ने देश के मजदूरों और वंचित वर्ग के लोगों को रोजगार मुहैया कराने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आदर्श के अनुरूप मनरेगा कानून का निर्माण किंया था, वर्तमान केंद्र सरकार ने मनरेगा कानून की मूल आत्मा को नष्ट करने के लिए संसद में नया विधेयक पारित करवाया। इस कानून में महात्मा गांधी के नाम को हटा दिया गया। साथ ही मनरेगा कानून में मजदूरों के लिए रखे गये प्रावधानों को खत्म कर दिया गया। कांग्रेस महात्मा गांधी के विचारों के अनुरूप देश के अंतिम आदमी के साथ हमेशा खड़ी रही है। ऐसे तत्वों को ऐसी कुचेष्टा का हमेशा से विरोध करती रही है। इस षड़यंत्र से कांग्रेस का देश में सर्वधर्म समभाव, सर्वजनहिताय के लक्ष्य को प्राप्त करने का ईरादा कमजोर नहीं होगा।

(लेखक छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष हैं)

इस साल लार्ज कैप फंड रहे विनर लेकिन स्मॉल कैप ने किया निराश

■ लार्ज कैप ने निवेशकों को बेहतर सुरक्षा दी ■ रिटर्न के मामले में भी बाकी श्रेणी को पीछे छोड़ा ■ साल 2025 में बाजार में रहा उतार-चढ़ाव

हलचल @2025
बिजनेस डेस्क

साल 2025 ने म्यूचुअल फंड निवेशकों को एक साफ संदेश दिया है कि स्थिरता ही असली ताकत है। सालभर बाजार में उतार-चढ़ाव और सेक्टोरल रोटेशन के बीच लार्ज कैप म्यूचुअल फंड्स ने निवेशकों को न सिर्फ बेहतर सुरक्षा दी, बल्कि रिटर्न के मामले में भी बाकी कैटेगरी को पीछे छोड़ दिया। जहां लार्ज कैप फंड्स ने एक साल में औसतन 8.15% का रिटर्न दिया, वहीं स्मॉल कैप फंड्स निवेशकों के लिए सबसे बड़ी निराशा साबित हुए। यह साफ करता है कि 2025 में क्वालिटी, साइज और बैलेंस शीट की मजबूती हर मायने में हाई-रिस्क कैटेगरी पर भारी है। कैटेगरी वाइज देखें तो लार्ड एंड मिड कैप फंड, मल्टी कैप और मिडकैप फंड्स 2–3% के दायरे में ही सिमट गए, जबकि टेक्नोलॉजी सेक्टर फंड्स में 6.79% की गिरावट ने निवेशकों की उम्मीदों को झटका दिया। इसके उलट बैंकिंग और ऑटो-ट्रांसपोर्टेशन जैसे सेक्टोरल फंड्स ने 17% से ज्यादा का दमदार रिटर्न दिया, जिससे यह साफ हुआ कि 2025 स्टॉक-सेलेक्टिव और सेक्टर-ड्रिवन साल रहा। लार्ज कैप स्पेस में आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल, मिराए एसेट, मोतीलाल ओसवाल और महिंद्रा मैनुलिफ़ जैसे फंड्स ने 10–11% के आसपास रिटर्न देकर साल का अंत मजबूत नोट पर किया। कुल मिलाकर, 2025 का साल यह सबक देकर गया कि अनिश्चित बाजारों में लार्ज कैप फंड्स निवेशकों के लिए सबसे भरोसेमंद साथी साबित होते हैं।

लार्ज कैप फंड एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है जो मुख्य रूप से बड़े मार्केट कैपिटलाइजेशन वाली कंपनियों में निवेश करता है, जो आमतौर पर देश की टॉप 100 कंपनियां होती हैं। ये कंपनियां अच्छी तरह से स्थापित, वित्तीय रूप से मजबूत और अक्सर अपने क्षेत्रों में बाजार के नेता होती हैं। लार्ज कैप फंड्स को स्थिरता और कम जोखिम के लिए जाना जाता है, जो उन्हें रूढ़िवादी निवेशकों के लिए एक अच्छा विकल्प बनाता है।

लार्ज कैप फंड के फायदे

- **स्थिरता:** लार्ज कैप कंपनियां बाजार में उतार-चढ़ाव के प्रति कम संवेदनशील होती हैं।
- **सुसंगत प्रदर्शन:** ये कंपनियां लंबे समय में स्थिर रिटर्न प्रदान करती हैं।
- **निम्न जोखिम:** लार्ज कैप फंड्स में निवेश करने से जोखिम कम होता है।
- **डिविडेंड आय:** कई लार्ज कैप कंपनियां नियमित डिविडेंड वितरित करती हैं।
- **विविधीकरण:** लार्ज कैप फंड्स विभिन्न क्षेत्रों में निवेश करते हैं, जिससे जोखिम कम होता है।

फ्लेक्सी-कैप फंड की पॉपुलैरिटी बढ़ी

फ्लेक्सी-कैप फंड्स का औसत रिटर्न भले ही कुछ कमजोर दिख रहा है, लेकिन इसकी पॉपुलैरिटी बढ़ी है। फ्रैंकलिन टेम्पलटन म्यूचुअल फंड की लेटेस्ट रिपोर्ट के मुताबिक, बीते 12 महीनों में फ्लेक्सी-कैप फंड्स में सभी इक्विटी कैटेगरी में सबसे ज्यादा निवेश आया है। पिछले 12 महीनों में इन फंड्स में करीब 75,700 करोड़ का नेट निवेश दर्ज किया गया। इस कैटेगरी में निवेशकों ने जो खरीदा, उसमें बने रहे। यह दिखाता है कि निवेशक अब सिर्फ बाजार से जुड़े विकल्पों में ज्यादा पैसा नहीं लगा रहे, बल्कि ऐसे फंड भी चुन रहे हैं जो डायवर्सिफिकेशन और लचीलापन दोनों देते हैं। जैसे-जैसे म्यूचुअल फंड बैंक डिपॉजिट पर बढ़त बना रहे हैं, फ्लेक्सी-कैप फंड्स आने वाले समय में लंबी अवधि में संपत्ति बनाने की इस कहानी के केंद्र में बने रह सकते हैं।

एक साल में कितना रिटर्न कैटेगरीवाइज

फंड	रिटर्न
लार्ज कैप	8.15%
लार्ज एंड मिड कैप	1.96%
फ्लेक्सी कैप	3.26%
मल्टी कैप	1.98%
मिड कैप	2.76%
स्मॉल कैप	-5.31%
वैल्यू ओरिएंटेड	5.45%
ईएलएसएस	3.52%
सेक्टोरल-आटो एंड ट्रांसपोर्ट	17.32%
सेक्टोरल-बैंकिंग	17.42%
सेक्टोरल-फार्मा	0.04%
सेक्टोरल-टेक्नोलॉजी	-6.79%
थिमैटिक	2.52%

एक साल में टॉप लार्ज कैप फंड्स ये रहे

फंड्स	रिटर्न
आईसीआईसीआई प्रू	11.50%
निप्पॉन इंडिया इंडेक्स निफ्टी-50	11.40%
मीराए एसेट	11.00%
मोतीलाल ओसवाल	10.73%
महिंद्रा मैन्युलाइफ	10.59%
बजाज फिनसर्व	10.00%

टॉप लार्ज कैप म्यूचुअल फंड

- निप्पॉन इंडिया लार्ज कैप फंड
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लार्ज कैप फंड
- एसबीआई ब्लूचिप फंड
- एचडीएफसी लार्ज कैप फंड
- डीएसपी लार्ज कैप फंड

स्मॉल कैप फंड के फायदे

- **उच्च विकास क्षमता:** स्मॉल कैप कंपनियों में उच्च विकास क्षमता होती है, जिससे उच्च रिटर्न मिल सकता है।
- **निम्न मूल्यांकन:** स्मॉल कैप कंपनियों के शेयर अक्सर कम मूल्य पर उपलब्ध होते हैं, जिससे निवेश की लागत कम होती है।
- **विविधीकरण:** स्मॉल कैप फंड्स विभिन्न क्षेत्रों में निवेश करते हैं, जिससे जोखिम कम होता है। **लॉन्ग-टर्म ग्रोथ:** स्मॉल कैप कंपनियों में लॉन्ग-टर्म ग्रोथ की संभावना अधिक होती है।

स्मॉल कैप फंड के नुकसान

- **उच्च जोखिम :** स्मॉल कैप कंपनियों में जोखिम अधिक होता है, जिससे निवेश का मूल्य कम हो सकता है।
- **अस्थिरता :** स्मॉल कैप शेयरों की कीमतें अधिक अस्थिर होती हैं, जिससे निवेश का मूल्य तेजी से बदल सकता है।
- लिक्विडिटी : स्मॉल कैप शेयरों में लिक्विडिटी कम होती है, जिससे निवेश को बेचना मुश्किल हो सकता है।

2025 चांदी ने दिया बंपर रिटर्न

■ निवेशकों ने 100 फीसदी से ज्यादा रिटर्न लिया
■ अब मुनाफा वसूल करें या निवेश बनाए रखें
■ चांदी की बढ़त ने सभी निवेशों को पीछे छोड़ा

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

साल 2025 में सिल्वर ईटीएफ ने जबरदस्त प्रदर्शन दिया है। इस साल अब तक निवेशकों को 100 फीसदी से भी ज्यादा का रिटर्न मिल चुका है। चांदी की बढ़त ने बाकी सभी निवेशों को पीछे छोड़ दिया है। ऐसे में निवेशक इस उलझन में हैं कि क्या उन्हें अपना मुनाफा वसूल लेना चाहिए (प्रॉफिट बुकिंग) या निवेश बनाए रखना चाहिए? बाजार के जानकारों की सलाह है कि अगर आपके पोर्टफोलियो में चांदी का हिस्सा तय सीमा से ज्यादा हो गया है, तो थोड़ा मुनाफा वसूल लेना चाहिए। अपने निवेश को संतुलित (रीबैलेंस) करने के लिए कुछ हिस्सा बेचकर वापस पुराने लक्ष्य पर आ जाना ही समझदारी है।

क्या कहते हैं एक्सपर्ट?

चांदी में आई 110-130% की भारी बढ़त के बाद मुनाफावसूली करना सही रहेगा। अपने मुनाफे का 25 से 33 फीसदी हिस्सा निकाल लें और जब बाजार गिरे तो फिर से खरीदारी करें। 5 साल के नजरिए से निवेश करना अभी भी अच्छा है। बस इमोशनल होकर फैसला न लें और अनुशासन बनाए रखें। हालांकि मांग मजबूत है। लेकिन कम समय के लिए पैसा लगाने वालों को उतार-चढ़ाव से सावधान रहना चाहिए। वे सलाह देते हैं कि जो लोग ईटीएफ के जरिए चांदी में निवेश कर रहे हैं, उन्हें तेजी आने पर कुछ मुनाफा निकाल लेना चाहिए।

कितना दिया रिटर्न?

साल 2025 में अब तक सिल्वर ईटीएफ ने औसतन 127.31% का रिटर्न दिया है। इस दौरान 21 अलग-अलग फंड्स ने 122% से लेकर 130% तक का मुनाफा कराया। यूटीआई सिल्वर ईटीएफ 130.02% रिटर्न के साथ सबसे आगे रहा। इसके बाद एसबीआई सिल्वर ईटीएफ एफओएफ ने 129.46% का रिटर्न दिया। निप्पॉन इंडिया सिल्वर ईटीएफ ने 127.61% और टाटा सिल्वर ईटीएफ ने करीब 122.68% का फायदा कराया।

क्या अब देर हो गई है?

अब उतने बड़े लेवल पर पैसा लगाना शायद सही न हो जितना कुछ महीने पहले था। चांदी आपके कुल निवेश का छोटा हिस्सा (5-9%) ही होनी चाहिए। नए निवेशकों को एक साथ सारा पैसा लगाने के बजाय किश्तों (एसआईपी) में निवेश करना चाहिए। अभी देर नहीं हुई है, लेकिन एक साथ बड़ी रकम लगाने से बचें। अगर चांदी के दाम गिरकर 1,70,000 से 1,78,000 रुपये प्रति किलो के पास आएं, तो खरीदारी का अच्छा मौका होगा।

आगे क्या होगा?

जानकारों का कहना है कि अब, जबकि चांदी 2 लाख रुपये के पार है, तो 2026 के लिए अगले साल शायद 2025 जैसी धमाकेदार बढ़त न मिले। मुनाफा धीरे-धीरे होगा और बीच-बीच में कीमतें गिरेंगी भी। वहीं, निकुंज सर्राफ को उम्मीद है कि सोलर सेक्टर में बढ़ती मांग और दुनिया भर में सप्लाई की कमी की वजह से 2026 में भी चांदी की मजबूती बनी रहेगी।

क्या है सिल्वर ईटीएफ

सिल्वर ईटीएफ (एक्सचेंज-ट्रेडेड फंड) एक प्रकार का निवेश साधन है जो चांदी की कीमतों पर आधारित होता है। यह एक ऐसा फंड है जो चांदी की कीमतों के साथ-साथ चलता है और निवेशकों को चांदी में निवेश करने का अवसर प्रदान करता है।

सिल्वर ईटीएफ के फायदे

- चांदी में निवेश : सिल्वर ईटीएफ चांदी में निवेश करने का एक आसान और सुविधाजनक तरीका है।
- लिक्विडिटी : सिल्वर ईटीएफ शेयर बाजार में सूचीबद्ध होते हैं, जिससे उन्हें आसानी से खरीदा और बेचा जा सकता है।
- निम्न लागत : सिल्वर ईटीएफ की लागत कम होती है, जिससे निवेशकों को अधिक रिटर्न मिल सकता है।
- विविधीकरण : सिल्वर ईटीएफ निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो में विविधीकरण करने में मदद करता है।

सिल्वर ईटीएफ के नुकसान

- चांदी की कीमतों में उतार-चढ़ाव : सिल्वर ईटीएफ की कीमतें चांदी की कीमतों पर आधारित होती हैं, जो उतार-चढ़ाव के अधीन होती हैं।
- जोखिम : सिल्वर ईटीएफ में निवेश करने से जोखिम होता है, क्योंकि चांदी की कीमतें भविष्य में कम हो सकती हैं।
- स्टोरेज और सुरक्षा : सिल्वर ईटीएफ में निवेश करने से पहले निवेशकों को चांदी के स्टोरेज और सुरक्षा के बारे में विचार करना चाहिए [1][2][3]।

भारत में सिल्वर ईटीएफ

- कोटक सिल्वर ईटीएफ
- एसबीआई सिल्वर ईटीएफ
- एचडीएफसी सिल्वर ईटीएफ
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल सिल्वर ईटीएफ
- यूटीआई सिल्वर ईटीएफ

छोटे व्यापारियों के लिए बेहद जरूरी है क्लाइमेट इंश्योरेंस

जलवायु परिवर्तन अब सिर्फ भविष्य की चेतावनी नहीं रहा, बल्कि यह छोटे व्यापारियों और दुकानदारों की रोजमर्रा की जिंदगी को सीधे प्रभावित कर रहा है। बाढ़, भीषण गर्मी, भारी बारिश और चक्रवात जैसी घटनाएं पहले के मुकाबले अधिक आ रही है और ज्यादा तीव्रता से हो रही हैं। इसका सबसे बड़ा असर देश के छोटे व्यापारियों और एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम) पर पड़ रहा है, जिनकी आमदनी रोज के कारोबार पर टिकी होती है। जानकारों का कहना है कि अधिकतर छोटे व्यापारी सीमित बचत के साथ काम करते हैं। ऐसे में अगर किसी प्राकृतिक आपदा की वजह से दुकान या कारखाना कुछ दिनों के लिए भी बंद हो जाए, तो उन्हें भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। कई बार कुछ दिन का नुकसान ही महीनों की कमाई पर भारी पड़ जाता है।

प्राकृतिक आपदाओं से बचाव

"क्लाइमेट इंश्योरेंस छोटे व्यापारियों के लिए एक ऐसा सुरक्षा साधन है, जो उन्हें प्राकृतिक आपदाओं से उबरने में मदद करता है। इस बीमा के तहत बाढ़, तेज बारिश, गर्मी या चक्रवात जैसी घटनाओं से दुकान, गोदाम, मशीनरी और सामान को हुए नुकसान को कवर किया जा सकता है। इतना ही नहीं, अगर किसी आपदा की वजह से कारोबार अस्थायी रूप से बंद करना पड़े और आमदनी रुक जाए, तो क्लाइमेट इंश्योरेंस से आय के नुकसान की भरपाई भी की जा सकती है।" इस तरह का बीमा छोटे व्यापारियों को जल्दी दोबारा कारोबार शुरू करने में मदद करता है। बिना बीमा के कई व्यापारी मरम्मत या दोबारा स्टॉक खरीदने के लिए पैसों का इंतजाम नहीं कर पाते, जिससे दुकान लंबे समय तक बंद रहती है। इसका नतीजा यह होता है कि ग्राहक दूसरी जगह चले जाते हैं और कारोबार को दोबारा खड़ा करना मुश्किल हो जाता है। कई मामलों में तो छोटे व्यवसाय पूरी तरह से उबर ही नहीं पाते।

पैरामीट्रिक इंश्योरेंस

आज के समय में क्लाइमेट इंश्योरेंस के ऐसे समाधान भी मौजूद हैं, जो खास तौर पर छोटे व्यापारियों और एमएसएमई के लिए बनाए गए हैं। इनमें से एक है पैरामीट्रिक इंश्योरेंस। यह पारंपरिक बीमा से अलग होता है, क्योंकि इसमें नुकसान का लंबा आकलन करने की जरूरत नहीं पड़ती। "पैरामीट्रिक इंश्योरेंस में पहले से तय मौसम से जुड़े संकेतकों, जैसे तय सीमा से ज्यादा बारिश या तापमान बढ़ने पर, अपने आप भुगतान सक्रिय हो जाता है। इससे बीमा राशि जल्दी मिल जाती है। यह व्यवस्था एमएसएमई के लिए इसलिए फायदेमंद है, क्योंकि इसमें पुराने नुकसान के विस्तृत रिकॉर्ड की जरूरत नहीं होती, इसे समझना आसान होता है और आपदा के समय तुरंत पैसा मिल जाता है।" जब किसी आपदा के तुरंत बाद पैसे मिल जाते हैं, तो व्यापारी जल्दी मरम्मत करा सकते हैं, नया सामान ला सकते हैं और दोबारा काम शुरू कर सकते हैं। इससे उनका आत्मविश्वास भी बना रहता है कि मुश्किल हालात में भी वे फिर से खड़े हो सकते हैं।

सुरक्षा नहीं, बल्कि जरूरत बनाता क्लाइमेट इंश्योरेंस

क्लाइमेट इंश्योरेंस को अब सिर्फ एक अतिरिक्त सुविधा नहीं, बल्कि छोटे व्यापारियों के लिए एक बुनियादी सुरक्षा उपकरण के रूप में देखा जाना चाहिए। यह न सिर्फ उनकी आमदनी की रक्षा करता है, बल्कि आपदा के बाद जल्दी संभलने में भी मदद करता है। अचानक आने वाले जलवायु से जुड़े झटकों के बावजूद कारोबार को जारी रखने में यह अहम भूमिका निभाता है। बदलते मौसम और बढ़ती अनिश्चितताओं के दौर में छोटे व्यापारियों और दुकानदारों के लिए क्लाइमेट इंश्योरेंस एक ऐसा सहारा बन सकता है, जो मुश्किल समय में उन्हें पूरी तरह टूटने से बचाए और फिर से आगे बढ़ने का भरोसा दे।

जीएसटी स्लैब और इनकम टैक्स में हुए बड़े बदलाव, मिडिल क्लास को राहत

वर्ष 2025 का साल भारत के टैक्स सिस्टम के लिए काफी अहम रहा। सरकार ने जीएसटी में बड़ी कटौती की, इनकम टैक्स में छूट की लिमिट बढ़ाई गई और लोगों के हाथ में ज्यादा पैसे रहने देना का इरादा दिखाया। इसका मकसद था कि मुश्किल वैश्विक हालात में घरेलू खपत बढ़े और अर्थव्यवस्था को सहारा मिले। विदेशी टैरिफ की अनिश्चितता के बीच ये बदलाव घरेलू मांग को मजबूत करने पर फोकस करते हैं। अब नजर कस्टम्स ड्यूटी को सरल बनाने और रेट कम करने पर है।

कम स्लैब और चीजें सस्ती

साल की सबसे बड़ी खबर रही जीएसटी में भारी बदलाव। 22 सितंबर से करीब 375 सामानों और सर्विसेज पर टैक्स रेट कम कर दिए गए। रोजमर्रा की चीजों पर बोझ कम हुआ और लंबे समय से चली आ रही इनवर्टेड ड्यूटी की समस्या भी काफी हद तक सुलझी। पहले जीएसटी में 5%, 12%, 18% और 28% के चार मुख्य स्लैब थे। अब इन्हें 5% और 18% के दो मुख्य रेट में समेट दिया गया है। हालांकि, तंबाकू, सिगरेट, सिगार, गुटखा, पान मसाला आदि पर 40% का हाई रेट रखा गया है। इस बदलाव से जीएसटी सिस्टम ज्यादा आसान और भरोसेमंद हो गया। सरकार का दावा है कि स्लैब कम होने से झगड़े कम होंगे और कंप्लायंस आसान। अप्रैल में जीएसटी कलेक्शन रिकॉर्ड 2.37 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचा था, जबकि पूरे साल औसतन 1.9 लाख करोड़ रुपये रहा। लेकिन रेट कटौती के बाद थोड़ा दबाव पड़ा और ग्रोथ धीमी हुई।

कलेक्शन वर्ष के सबसे निचले स्तर पर

नवंबर में कलेक्शन साल के सबसे निचले स्तर पर आ गया, जो 1.70 लाख करोड़ रुपये रहा। यह पिछले साल की तुलना में सिर्फ 0.7% की बढ़ोतरी थी। नवंबर वो पहला महीना था जब सितंबर की कटौती का पूरा असर दिखा। फिर भी ये सुधार लोगों के लिए फायदेमंद साबित हो रहे हैं। आम इस्तेमाल की चीजें सस्ती हुईं, जिससे खपत बढ़ने की उम्मीद है।

इनकम टैक्स में राहत

मिडिल क्लास को बड़ा तोहफा

डायरेक्ट टैक्स के मोर्चे पर भी सरकार ने हाथ खोले। इनकम टैक्स की छूट लिमिट बढ़ाकर मिडिल इनकम वालों को राहत दी गई। लोगों के पास ज्यादा डिस्पोजेबल इनकम आए, खासकर शहरों में रहने वाले परिवारों को बड़ा फायदा हुए। इससे खुद टैक्स देने की आदत भी मजबूत हुई। 2025 के बजट में नई टैक्स व्यवस्था में 12 लाख रुपये सालाना आय तक कोई इनकम टैक्स नहीं देने का ऐलान हुआ। ये वो व्यवस्था है जिसमें कम रेट हैं लेकिन छूट या डिडक्शन का फायदा नहीं मिलता।

नए रेट कुछ इस तरह

- 4 से 8 लाख रुपये तक 5%
- 8 से 12 लाख रुपये तक 10%
- 12 से 16 लाख रुपये तक 15%
- 16-20 लाख रुपये पर 20%
- 20-24 लाख रुपये पर 25%
- 24 लाख रुपये से ऊपर 30%

टैक्स कलेक्शन धीमा

इन कटौती से अप्रैल से दिसंबर मध्य तक नॉन-कॉर्पोरेट टैक्स कलेक्शन धीमा पड़ा। व्यक्तियों, एचयूएफ और फर्म्स का नेट टैक्स सिर्फ 6.37% बढ़कर 8.47 लाख करोड़ हुआ, जबकि कॉर्पोरेट टैक्स 10.54% बढ़कर 8.17 लाख करोड़ रुपये पहुंचा। इस साल रिफंड 14% घटकर 2.97 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा रहे। अगले साल से नया सिंपल इनकम टैक्स एक्ट 2025 लागू होगा, जो 1 अप्रैल से शुरू होकर पुराने 1961 के एक्ट की जगह लेगा। सिगरेट पर एक्स्ट्रा एक्साइज ड्यूटी और पान मसाला पर सेस लगाने के दो नए कानून भी सरकार जब चाहे लागू कर देगी।

कस्टम्स ड्यूटी पर अब फोकस

जीएसटी और इनकम टैक्स के बड़े सुधार हो जाने के बाद अब नजर कस्टम्स पर है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि कस्टम्स को सरल बनाना सरकार का अगला बड़ा सुधार होगा। इनकम टैक्स जैसी पारदर्शिता और फेसलेस असेसमेंट कस्टम्स में लाना जरूरी है। साथ ही ड्यूटी रेट को रेशनलाइज करना भी। पिछले दो साल में कस्टम्स ड्यूटी लगातार घटी है। लेकिन जहां रेट अभी भी ज्यादा हैं, उन्हें कम करना बाकी है। वित्त मंत्री ने कहा था, "कस्टम्स मेरा अगला बड़ा क्लीन-अप काम है।" 2025-26 बजट में इंडस्ट्रियल गुड्स पर सात अतिरिक्त टैरिफ रेट हटाने का प्रस्ताव था, जिससे कुल स्लैब आठ रह गए। पहले 2023-24 में भी सात टैरिफ हटाए गए थे। एक्सपर्ट्स का मानना है कि ट्रेड के बदलते पैटर्न, कंप्लायंस कॉस्ट और प्रोसीजर की दिक्कतों को देखते हुए कस्टम्स में सुधार जरूरी हैं।

एक बड़ी एफडी की सबसे बड़ी समस्या तब आती है, जब अचानक पैसों की जरूरत पड़े

सात लाख को ऐसे करें निवेश, मिलेगा बड़ा फायदा, एक एफडी में लगाएं पैसे या फिर कई सारी का विकल्प बेहतर

फिक्स्ड डिपॉजिट निवेश के सबसे भरोसेमंद तरीकों में से एक

बिजनेस डेस्क

पैसा कमाने के लिए मेहनत और अनुशासन दोनों चाहिए, लेकिन उसे समझदारी से कहां निवेश किया जाए, यह फैसला उतना ही अहम होता है। आज के दौर में सिर्फ पैसे बचाकर रखना न तो सुरक्षित भविष्य की गारंटी देता है और न ही महंगाई को मात दे पाता है। मजबूत फाइनेंशियल कुशल बनने के लिए जरूरी है कि निवेश आपके लक्ष्य, जोखिम लेने की क्षमता और समय के हिसाब से किया जाए। शेयर, इक्विटी म्यूचुअल फंड, पीपीएफ और सरकारी बचत योजनाओं जैसे कई विकल्प मौजूद हैं, लेकिन, इसके बावजूद बैंक फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) आज भी सुरक्षा और स्थिर रिटर्न चाहने वाले निवेशकों की पहली पसंद बने हुए हैं।

पैसा कमाने के लिए मेहनत और अनुशासन चाहिए

एफडी क्यों है सबसे भरोसेमंद विकल्प

भारत में फिक्स्ड डिपॉजिट को सबसे सुरक्षित निवेश विकल्पों में गिना जाता है। क्योंकि इसमें पूंजी सुरक्षित रहती है और रिटर्न पहले से तय होता है। एफडी की ब्याज दर पर बाजार के उतार-चढ़ाव का असर भी नहीं पड़ता। साथ ही, डीआईसीजीसी इंश्योरेंस के तहत 5 लाख रुपये तक की जमा रकम सुरक्षित रहती है। इससे निवेशकों को अतिरिक्त भरोसा मिलता है। बैंक और एनबीएफसी 7 दिन से लेकर 10 साल तक की अवधि के लिए एफडी की सुविधा देते हैं। हालांकि, एफडी से बेहतर रिटर्न पाने के लिए सिर्फ पैसा जमा करना काफी नहीं होता, बल्कि सही अवधि और सही स्ट्रक्चर चुनना भी जरूरी होता है।

एक एफडी या कई एफडी, किसमें फायदा

निवेशकों के मन में अक्सर यह उलझन रहती है कि पूरी रकम एक ही एफडी में लगाई जाए या उसे कई एफडी में बांटा जाए। अब मान लीजिए आपके पास 7 लाख रुपये हैं, तो क्या 7 लाख की एक एफडी बेहतर है या 1-1 लाख की सात एफडी। एक्सपर्ट्स बताते हैं कि अगर ब्याज दर समान है, तो मैच्योरिटी पर मिलने वाली कुल रकम दोनों ही मामलों में बराबर रहेगी। फर्क सिर्फ सुविधा, लचीलापन और जरूरत पड़ने पर पैसे निकालने की आसानी में होता है।

बड़ी एफडी के फायदे क्या हैं

एक बड़ी एफडी का सबसे बड़ा फायदा इसकी सादगी है। इसमें आपको सिर्फ एक ही डिपॉजिट करना होता है, एक ही मैच्योरिटी डेट होती है और ब्याज भी एक जगह ही जुड़ता है। निवेश को ट्रैक करना आसान रहता है, न तो कई एफडी रसीदें संभालने की झंझट होती है और न ही अलग-अलग मैच्योरिटी याद रखने की जरूरत पड़ती है। जो निवेशक 'लगाओ और भूल जाओ' वाला तरीका पसंद करते हैं, उनके लिए यह विकल्प काफी सुविधाजनक माना जाता है। लंबी अवधि के लिए पैसा लॉक करने से ब्याज दर स्थिर रहती है और निवेशक बिना किसी रुकावट के मैच्योरिटी तक बेहतर रिटर्न हासिल कर सकता है। खासकर रिटायर्ड लोग या ऐसे निवेशक, जिनके पास पहले से इमरजेंसी फंड मौजूद है, उनके लिए एक बड़ी एफडी मानसिक शांति देने वाला विकल्प बन सकती है।

एक बड़ी एफडी के नुकसान समझना जरूरी

एक बड़ी एफडी की सबसे बड़ी समस्या तब आती है, जब अचानक पैसों की जरूरत पड़ जाए। अगर आपको सिर्फ 50,000 रुपये चाहिए, तो आप आंशिक निकासी नहीं कर सकते। पूरी एफडी तोड़नी पड़ेगी, जिस पर पूरे अमाउंट पर पेनल्टी लगेगी और कुल रिटर्न घट जाएगा। इसके अलावा सुरक्षा का पहलू भी अहम है। भारत में डीआईसीजीसी नियमों के तहत एक बैंक में जमा राशि पर सिर्फ 5 लाख रुपये तक का ही इंश्योरेंस मिलता है। ऐसे में 7 लाख रुपये एक ही बैंक में रखने पर 2 लाख रुपये अनइंश्योर्ड रह जाते हैं। जरूरत पड़ने पर पूरी रकम नहीं, सिर्फ एक एफडी तोड़नी पड़ती है, जिससे बाकी पैसा ब्याज कमाता रहता है। प्रीमैच्योर विड्रॉल की पेनल्टी सिर्फ उसी एफडी पर लगती है, पूरी रकम पर नहीं।

Support me by Joining my Private channel 🏡

♦️I DON'T RUN ANY PUBLIC CHANNELS, I DON'T ASK FOR MONTHLY SUBSCRIPTION, IF YOU HAVE EITHER OF THEM THAT'S NOT MY CHANNEL

📚Indian Newspapers:

1) Times of India
2) Hindustan Times
3) Business line
4) The Indian Express
5) Economic Times
6) The Hindu
7) Live Mint
8) Financial Express
9) Business standard

+All Editorial PDFs

Uploding starts from 5AM

🎈Access to all this In Just 19 Rupees [lifetime Validity]

Click below to

Join

📚International Newspapers Channel

📚 Magazine Channel (National & International)

अपना-पराया का भाव मन को अशांत करता है

संगठन की शक्ति

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह ने लालकृष्ण आडवाणी और नरेन्द्र मोदी की एक पुरानी तस्वीर पोस्ट कर जिस तरह यह लिखा कि आरएसएस का एक स्वयंसेवक एवं भाजपा का जमीनी कार्यकर्ता जमीन पर बैठकर मुख्यमंत्री और फिर प्रधानमंत्री बना, उस पर चर्चा होना स्वाभाविक है। इसलिए और भी अधिक, क्योंकि उन्होंने इस फोटो के साथ अपने मन की बात उस समय साझा की, जब कांग्रेस कार्य समिति की बैठक चल रही थी। उन्होंने उक्त फोटो को प्रभावशाली बताते हुए उसे संगठन की शक्ति का परिचायक भी कहा। उल्लेखनीय केवल यह नहीं कि उन्हें संगठन की शक्ति बताने के लिए यही फोटो उपयुक्त लगी, बल्कि यह भी है कि उन्होंने अपनी पोस्ट को मल्लिकार्जुन खरगे, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी के साथ प्रधानमंत्री मोदी को भी टैग किया। हालांकि इस पोस्ट को लेकर चर्चा का बाजार गर्म होने पर उन्होंने सफाई दी कि मैंने केवल संगठन की तारीफ की है और मैं तो आरएसएस और मोदी जी का घोर विरोधी हूं, लेकिन उनकी बात से यह तो ध्वनित हो ही गया कि वे कांग्रेस की सांगठनिक कमजोरी से बेचैन हैं और यह चाहते हैं कि पार्टी नेतृत्व संगठन पर ध्यान दे। इसे चंद दिनों पहले की उनकी उस पोस्ट से और अच्छे से समझा जा सकता है, जिसमें उन्होंने राहुल गांधी को संबोधित करते हुए लिखा था कि कांग्रेस को सुधारों और विकेंद्रीकरण की जरूरत है। इस पोस्ट में उन्होंने यह अपेक्षा तो जताई थी कि राहुल ऐसा करेंगे, पर इसी के साथ यह भी कहा था कि समस्या यह है कि उन्हें सहमत करना कठिन है।

यह पहली बार नहीं, जब कांग्रेस के किसी नेता ने पार्टी की कमजोरियों को रेखांकित किया हो, लेकिन कहीं कोई बुनियादी बदलाव होता नहीं दिख रहा है। यह इसलिए नहीं हो रहा है, क्योंकि गांधी परिवार चाटुकार नेताओं से घिरा है। कांग्रेस में उसी की पूछ-परख है, जो परिवार का गुणगान करता है। एक समय गांधी परिवार कांग्रेस की ताकत हुआ करता था, लेकिन अब स्थिति बदल चुकी है। इंदिरा गांधी के समय तो तब भी गनीमत थी, लेकिन उनके निधन के बाद जब राजीव गांधी पीएम बना दिए गए तो चाटुकार नेताओं का महत्व बढ़ गया और कांग्रेस कमजोर होती चली गई। इंदिरा गांधी की हत्या से उपजी सहानुभूति के चलते 1984 में तो कांग्रेस ने प्रचंड जीत हासिल की, लेकिन उसके बाद से वह कभी बहुमत नहीं पा पाई। आज सोनिया और राहुल की कांग्रेस उन क्षेत्रीय दलों पर निर्भर है, जो उससे ही टूट कर बने हैं। कांग्रेस की कमान भले ही खरगे के हाथ में हो, लेकिन वास्तविक शक्ति गांधी परिवार के पास ही है और वह संगठन को मजबूत करने के बजाय अपनी नाकामियों का दोष मोदी सरकार और चुनाव आयोग पर मढ़ने में लगा हुआ है।

सख्ती जरूरी

दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी दिल्ली में पुलिस ने विशेष अभियान 'आपरेशन आघात' चलाकर बड़ी संख्या में असामाजिक तत्वों सहित अपराधियों को गिरफ्तार किया है। इस तरह की कार्रवाई आवश्यक है, क्योंकि दिल्ली में बढ़ रही आपराधिक घटनाएं चिंता का विषय हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली महिलाओं के लिए सबसे असुरक्षित शहर है। लगातार तीसरे वर्ष महिलाओं से संबंधित सबसे अधिक अपराध दिल्ली में दर्ज हुए हैं। कुछ माह पूर्व राष्ट्रीय महिला आयोग की रिपोर्ट में भी इसे महिलाओं के लिए सबसे असुरक्षित शहर बताया गया था। नाबालिग अपराधियों की संख्या भी बढ़ रही है। सड़कों पर बढ़ते अपराध के कारण लोग, विशेषकर महिलाएं स्वयं को असुरक्षित महसूस करती हैं। राजधानी की यह स्थिति किसी भी सूरत में स्वीकार्य नहीं हो सकती।

दिल्ली की सड़कों पर बढ़ते अपराध की स्थिति किसी सूरत में स्वीकार्य नहीं हो सकती, इसे रोकने को सख्ती जरूरी है

राजधानी में कानून-व्यवस्था सुधारने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए। इस दिशा में 'आपरेशन आघात' एक सही पहल है। इस तरह के विशेष अभियान के साथ-साथ नियमित रूप से भी अपराधियों के विरुद्ध कार्रवाई होनी चाहिए, जिससे उनमें कानून का भय पैदा हो सके। आम नागरिकों को भी सतर्क रहना होगा। उन्हें अपने आसपास होने वाली आपराधिक गतिविधियों की तत्काल सूचना पुलिस को देनी चाहिए। सभी के सहयोग से ही दिल्ली अपराधमुक्त बन सकती है।

कह के रहेंगे — माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या एयर प्यूरीफायर की जरूरत को देखते हुए उस पर लगने वाला जीएसटी कम किया जाना चाहिए?

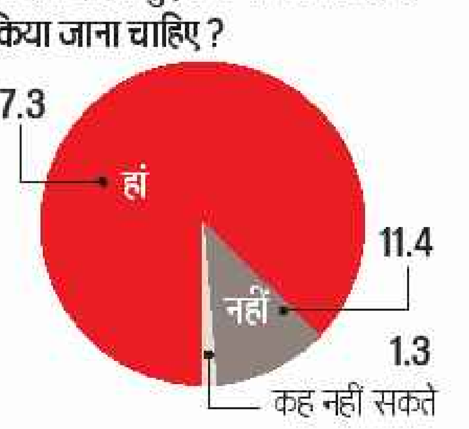

आज का सवाल
क्या भारत के आवाज उठाने से बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमले रुकेंगे?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

बांग्लादेश से सतर्क रहने का समय

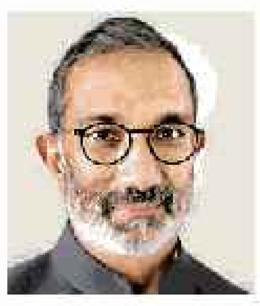

संजय गुप्त

भारत को बांग्लादेश के हालात पर गहरी निगाह रखने के साथ ही वहां चुनाव बाद बनने वाली किसी भी परिस्थिति के लिए अपने आप को तैयार रखना होगा

बांग्लादेश में पिछले वर्ष जुलाई में शेख हसीना सरकार के खिलाफ छेड़े गए छात्र आंदोलन से अशांति और अस्थिरता का जो दौर शुरू हुआ, वह खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। इस आंदोलन के चलते शेख हसीना को सत्ता से बाहर होना पड़ा और उन्हें जान बचाने के लिए भारत में शरण लेनी पड़ी। उनके तख्तापलट के बाद सेना के हस्तक्षेप से वहां बनी अंतरिम सरकार की कमान जब नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस ने संभाली तो माना यह गया था कि वे अशांति और अस्थिरता दूर कर वहां बन रहे भारत विरोधी माहौल पर भी लगाम लगाने का काम करेंगे, लेकिन उन्होंने ऐसा कुछ भी नहीं किया। 16 माह बाद भी बांग्लादेश अशांत एवं अस्थिर है और वहां भारत विरोधी तत्व भी बेलगाम हैं। पिछले दिनों वहां जब एक कट्टरपंथी छात्र नेता उस्मान हादी की हत्या कर दी गई तो यह अफवाह फैलाई गई कि उसका हत्यारा भारत भाग गया है। उसके साथ-साथ शेख हसीना को भी सौंपने की मांग कर वहां नए सिरे से भारत विरोधी माहौल बनाया जाने लगा। इसी माहौल में वहां एक हिंदू युवक की पीट-पीट कर हत्या कर दी गई और फिर उसके शव को सबके सामने जला दिया गया। इसके बाद पुलिस ने स्पष्ट किया कि छात्र नेता के हत्यारे के भारत भाग जाने की कहीं कोई सूचना नहीं। इसके बाद भी वहां भारत विरोधी तत्व उत्पात मचा रहे हैं। वे भारत के उच्चायोग को निशाना बनाने की कोशिश करने के साथ हिंदुओं पर हमले करने में लगे हुए हैं, जबकि हादी के भाई ने उसकी हत्या के लिए मोहम्मद यूनुस सरकार को ही कठघरे में खड़ा किया है। बीते दिनों वहां एक और हिंदू युवक की हत्या कर दी गई। इसके अलावा हिंदुओं के घरों में आगजनी की जा रही है। इसी तरह की घटनाएं तब भी हुई थीं, जब शेख हसीना का तख्तापलटा गया था।

भारत और बांग्लादेश के बीच बिगड़ते संबंधों के बीच वहां के सबसे बड़े राजनीतिक दल बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के कार्यवाहक अध्यक्ष तारिक रहमान जिया का 17 साल बाद लंदन से लौटना एक बड़ा घटनाक्रम है। वह पूर्व राष्ट्रपति जियाउर रहमान एवं पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया के बेटे हैं। इस समय खालिदा जिया गंभीर रूप से बीमार हैं और अस्पताल में हैं। यदि फरवरी में होने वाले आम चुनावों में बीएनपी जीत हासिल करती है तो तारिक रहमान देश की कमान संभाल सकते हैं, लेकिन इन चुनावों का स्वतंत्र एवं निष्पक्ष कहना कठिन है। इसका बड़ा कारण यह है कि अंतरिम सरकार ने शेख हसीना की पार्टी अवामी लीग को प्रतिबंधित कर उसे चुनाव लड़ने से रोक दिया है। इतना ही नहीं, उस जमाते इस्लामी को चुनाव लड़ने दिया जा रहा है, जिस पर शेख हसीना ने इसलिए प्रतिबंध लगा रखा था, क्योंकि वह पाकिस्तान समर्थक है। जमात ने बांग्लादेश की लड़ाई के समय पाकिस्तान का साथ दिया था। जमाते इस्लामी के साथ ही बांग्लादेश में अन्य ऐसे कट्टरपंथी तत्व बेलगाम हैं, जो भारत विरोध के साथ हिंदुओं पर दमन के लिए कुख्यात हैं। मोहम्मद यूनुस उन पर लगाम लगाने की कहीं कोई कोशिश करते दिख नहीं दिख रहे हैं।

बांग्लादेश का जन्म भारत की मदद से हुआ था। वहां लंबे समय सत्ता में रहीं शेख हसीना भारत की मित्र थीं। उनके समय में दोनों देशों के संबंधों में मजबूती आई, लेकिन अब वहां भारत विरोधी माहौल है। इसका बड़ा कारण मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली सरकार की ओर से भारत विरोधी तत्वों की अनदेखी किया जाना है। वे न तो कट्टरपंथी तत्वों पर लगाम लगाने में दिलचस्पी ले रहे हैं और न ही भारत से संबंध सुधारने में। ऐसा लगता है कि शेख हसीना के प्रति उनकी नाराजगी भारत विरोध में तब्दील हो गई है। वे भारत की चिंताओं का समाधान करने के बजाय उन्हें बढ़ाने का काम करते दिख रहे हैं। बांग्लादेश को लेकर भारत की चिंता इसलिए और बढ़ गई है, क्योंकि मोहम्मद यूनुस उस पाकिस्तान से संबंध बढ़ाने में लगे हुए हैं, जिसने वहां के लोगों पर कहर ढाया था। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि वे भारत को चिढ़ाने के लिए ही पाकिस्तान को अहमियत दे रहे हैं।

बांग्लादेश में केवल पाकिस्तान का ही हस्तक्षेप बढ़ता नहीं दिख रहा, चीन का प्रभाव भी बढ़ रहा है। मोहम्मद यूनुस पाकिस्तान के साथ चीन को भी प्राथमिकता दे रहे हैं। उनके रवैए से लगता है भारत से दोस्ती उन्हें पसंद नहीं। भारत से संबंध सुधारने में उनकी अनिच्छा से प्रतीति होती है कि वे बांग्लादेश में भारत के खिलाफ माहौल बनाने के लिए कुछ अन्य अंतरराष्ट्रीय ताकतों को भी अवसर दे रहे हैं। ध्यान रहे शेख हसीना सरकार के तख्तापलट के समय पश्चिमी ताकतों का हाथ देखा गया था। सच जो हो, भारत के लिए यह ठीक नहीं कि बांग्लादेश में पाकिस्तान के साथ अन्य अंतरराष्ट्रीय ताकतों की भी भूमिका बढ़ती दिख रही है।

भारत को न केवल बांग्लादेश में खतरे का सामना कर रहे हिंदुओं के बारे में सोचना होगा, बल्कि इस देश में अपने हितों की रक्षा के लिए भी कूटनीतिक कौशल दिखाना होगा। भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए यह आवश्यक है कि बांग्लादेश में पाकिस्तान की भूमिका बढ़ने न पाए। भारत को बांग्लादेश के हालात पर गहरी निगाह रखने के साथ वहां चुनाव बाद बनने वाली किसी भी परिस्थिति के लिए अपने आप को तैयार रखना होगा। कहना कठिन है कि चुनाव में क्या होगा, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि लोकतंत्र के मामले में बांग्लादेश पाकिस्तान की राह पर जाता हुआ दिख रहा है। जैसे वहां जो सत्ता में आ जाता है, वह अपने राजनीतिक विरोधियों के दमन में जुट जाता है, वैसे ही बांग्लादेश में भी होता है। पिछले चुनाव में शेख हसीना ने ऐसी परिस्थितियां पैदा कर दी थीं, जिससे खालिदा जिया को चुनावों का बहिष्कार करने के लिए लिए विवश होना पड़ा था। अब शेख हसीना की पार्टी चाह कर भी चुनाव नहीं लड़ सकती। इन स्थितियों में भारत को बांग्लादेश संबंधी अपनी कूटनीति पर नए सिरे से विचार करना होगा। वास्तव में बांग्लादेश हो या अन्य कोई देश, भारत को किसी एक पक्ष अथवा राजनीतिक ताकत के प्रति ही निर्भर रहने से बचना होगा। इसके अतिरिक्त यह भी ध्यान देना होगा कि उसके पड़ोस में लोकतांत्रिक शक्तियों को बल मिले।

response@jagran.com

अवधेश राजपूत

नव वर्ष के नाम एक जरूरी पत्र

हास्य-व्यंग्य

प्रिय आंग्ल नव वर्ष जी!

इस बार भी तुम्हारा स्वागत है। क्या करें मजबूरी है। हर साल तुम्हारा आना और हमारा बिना चूं-चपड़ किए तुम्हारा स्वागत करना एक परंपरा बन गई है। वैसे भी 'अतिथि देवो भव' हमारी परंपरा है। हम जानते हैं कि तुम ऐसे अतिथि हो, जो दो-चार दिन के लिए नहीं आते। पूरे साल टिक जाते हो। फिर भी हम तुम्हें भगाने के तरीके नहीं सोचते। तुम्हारा स्वागत करते हैं। वैसे ही जैसे पिछले दो हजार पच्चीस वर्षों से करते चले आ रहे हैं। यह भी विडंबना है कि तुम इतने वर्षों से आ रहे हो। फिर भी जब आते हो, तब नए ही कहलाते हो।

सच बात यह है कि यदि कैलेंडर बदलने की मजबूरी न होती तो ऐसे हाड़ कंपा देने वाले मौसम में तुम्हारा स्वागत कौन करता...हमारा ठेंगा...वह भी शायद दस्ताने पहनकर करता। तुमने यह भी न सोचा कि इस वक्त कहीं आया-जाया जाता है? अरे ये मौसम तो गरम बिस्तर में मुंह ढक कर सोने का होता है। गरमा-गरम चाय-काफी के दौर या लार्ज पैग बनाने का होता है। ऐसी ठंड में 'हैप्पी न्यू ईयर' बोलने में, मुंह से शब्द कम और धुआं ज्यादा निकलता है। अब जरा हमारे हिंदी नव वर्ष को देखो। चैत मास में आता है। हंसता, खेलता, मुस्कुराता हुआ। खुशगवार मौसम। खुशनुमा माहौल।

एक बात और। शायद तुम्हें पता न हो कि आजकल हमारे यहां एसआइआर का काम चल रहा है। सरल शब्दों में कहा जाए तो 'सघन मतदाता पुनरीक्षण'। और ज्यादा सरल भाषा में कहें तो घुसपैठियों की नींद उड़ाऊ कार्यवाही। इसलिए आने से पहले अपने सारे जरूरी कागज ध्यान से रख लेना। वरना ऐसा न हो कि कागज न दिखा पाने पर तुम वापस 2025 में धकेल दिए जाओ। यहां आने पर तुम्हारा सामना विपक्षी नेताओं से भी होगा। उन्हें आजकल हर काम में सरकार की साजिश नजर आती है। वे हर बात के सुबूत मांगते हैं। इसलिए संभव है कि विपक्ष तुम्हें स्वीकार न करे। ये कहकर कि इसमें सरकार का कोई स्वार्थ है। या हो सकता है कि तुमसे सुबूत मांगे कि तुम 2026 ही हो।

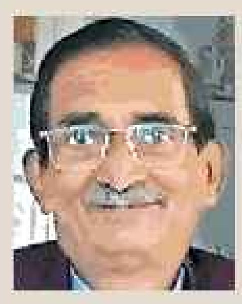

कमल किशोर सक्सेना

हे नव वर्ष, आने से पहले अपने सारे कागज ध्यान से रख लेना। वरना ऐसा न हो कि वापस 2025 में धकेल दिए जाओ

खैर! अगर तुमने आने की ठान ही ली है तो कौन रोक सकता है। मगर यह तो बताओ कि कैसे आ रहे हो। पैदल या किसी सवारी से। पैदल आना आसान नहीं है। रास्ते में लुटेरे, हत्यारे या आतंकवादी मिल सकते हैं। इनसे तुम्हारे अस्तित्व को खतरा हो सकता है। हो सकता है अपहरण ही हो जाए और सब नए साल के आने की राह ही देखते रहें। यदि बस से आ रहे हो तो भगवान मालिक। आजकल धुंध की वजह से हमारे यहां राजमार्गों पर बहुत दुर्घटनाएं हो रही हैं। ऐसा न हो कि सब तुम्हारा इंतजार ही करते रह जाएं और तुम्हारे पंचतत्व पोस्टमार्टम हाउस की शोभा बढ़ाने पहुंच जाएं। और रेल से। अव्वल तो उसमें कंफर्म टिकट मिलना मुश्किल। मिल भी गया तो समय से पहुंचने की गारंटी नहीं है। ट्रेनें बहुत विलंब से चल रही हैं। हो सकता है कि तुम एक जनवरी की जगह फरवरी, मार्च या अप्रैल तक आ पाओ। तब तक तो हमारा हिंदी का नव वर्ष भी आ जाएगा। उस सूरत में क्या तुम हमारी सनातनी संस्कृति से तालमेल बिठा पाओगे। बहुत घालमेल हो जाएगा।

अगर तुमने विमान से आने की सोच रखी है तो आजकल शरीफ लोगों के लिए विमान यात्रा रह ही नहीं गई है। एयरपोर्ट पर बहुत बेइज्जती होती है। वहां काउंटर तो बहुत हैं। किंतु फ्लाइट की जानकारी देने वाला कोई नहीं। यात्रियों के सामान का भी ठिकाना नहीं। कहां से कहां पहुंच जाए। या एयरपोर्ट पर भी रहे तो कोई नहीं जानता, कब मिले। इसके अलावा उड़ानों का भी कोई भरोसा नहीं। हो सकता है कि तुम 2026 की फ्लाइट में बैठो और तुमसे पहले 2027 या 28 यहां पहुंच जाएं। हमारी बातों को अन्यथा न लेना। हम तहे दिल से तुम्हारा स्वागत करते हैं।

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य | हाईवे के जरिये होने वाली टोल वसूली

(आंकड़े करोड़ रुपये में)

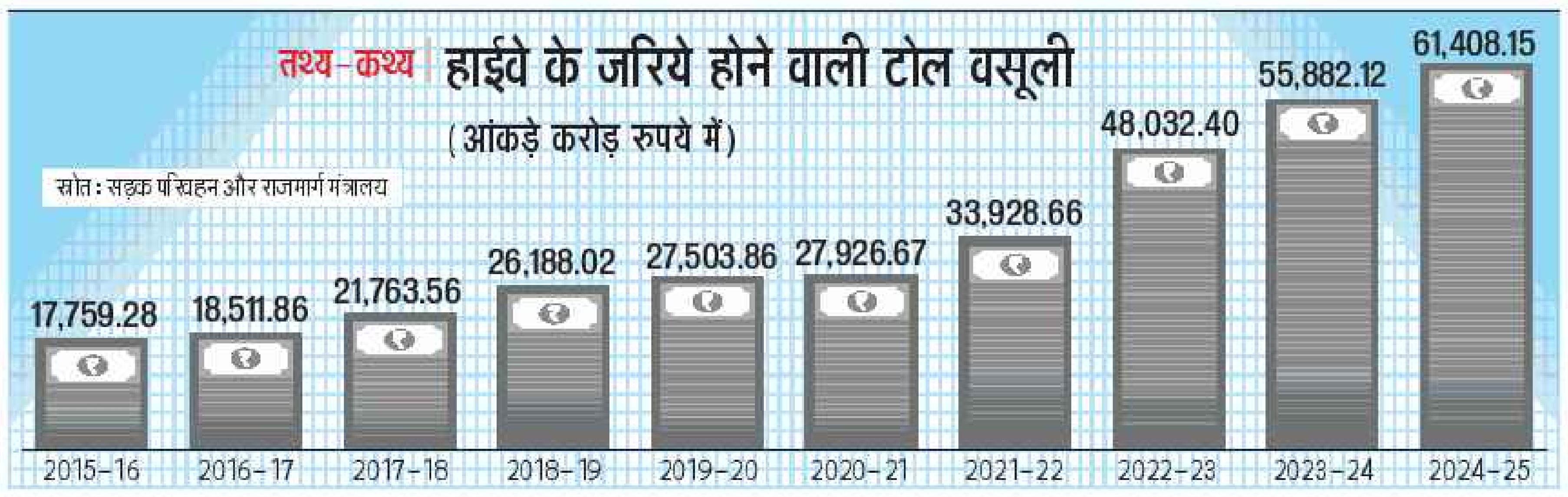

स्रोत : सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय

ऊर्जा

बलिदान

भारतीय संस्कृति में पूजा-पाठ, ध्यान, कथा और सत्संग की परंपरा अनादिकाल से चली आ रही है। यह हमारे पूर्वजों, ऋषियों, संतों और तपस्वियों की अमूल्य देन है। आमतौर पर पूजा-पाठ के क्रम में जीवों की बलि देने की क्रिया भी देखी जाती है। परमात्मा न्यायकारी, सर्वव्यापी, दुखहर्ता, करुणावतार, कृपासिंधु, दयानिधि और करुणानिधान हैं। क्या वे जीव-हत्या और बलि चढ़ाने से प्रसन्न हो सकते हैं? यह भक्तजनों की मनगढ़ंत प्रक्रिया है। जीवों की बलि देना अनैतिक है। बलिदान का अर्थ व्यक्ति ठीक से समझता ही नहीं। मनुष्य विवेकशील प्राणी है, फिर भी अज्ञानवश जीव-जंतुओं की हत्या करता है। भगवान की भक्ति में अभक्ष्य भोजन, लोभ, लालच, कामना, दिखावा और स्वार्थ की बलि दी जानी चाहिए। अपनी बुराइयों तथा तन-मन-धन को न्योछावर करना ही सच्चा बलिदान है। हमारे यहां अहिंसा को परम धर्म माना गया है, न कि जीवों की हत्या कर बलि देने को। शास्त्रों में कहा गया है- अहिंसा परमो धर्मः। कमजोर प्राणियों की बलि देना कायरता है।

पुराणों में वर्णन है कि राजा बलि के द्वार पर भगवान विष्णु वामन रूप में भिक्षा मांगने आए। बलि से भगवान ने तीन पग भूमि मांगी। वामन भगवान ने दो पग में पृथ्वी, आकाश और पाताल नाप लिया। तीसरे पग के लिए कुछ शेष न रहने पर बलि ने कहा-''प्रभु, तीसरा पग मेरे सिर पर रख दीजिए।'' इस प्रकार बलि ने स्वयं को भगवान को अर्पित कर दिया। सच्चे मन से तन-मन-धन का दान करने के कारण ही बलि का दान बलिदान कहलाया। बलि की दानवीरता का नाम ही बलिदान है। तीनों लोकों में राजा बलि जैसा दानी कोई नहीं हुआ। भक्तों को राजा बलि के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए, जिसमें त्याग और न्योछावर की सच्ची भावना थी। यह सुकृत्य और सत्कर्म है, जबकि जीवों की हत्या देश और संस्कृति को कलंकित करती है।

मुकेश ऋषि

चार का फेर

भाजपा के चाणक्य अमित शाह पश्चिम बंगाल के दौरे पर जाने वाले हैं। वहां वह संभवतः दो दिन रुकेंगे। ध्यान रहे कि वहां चुनाव अप्रैल में होने हैं। ठीक इसी तरह उन्होंने चार महीने पहले ही बिहार में भी बैठकों का दौर शुरू कर दिया था। उनकी रणनीति का पहला हिस्सा यह था कि माइक्रो मैनेजमेंट इस तरह हो कि जहां कम वोटों से जीते थे, वहां अंतर बढ़े और जहां कम वोटों से हारे थे, वहां जीत हासिल हो। इतने से ही बिहार बदल गया। अब वही फार्मूला पश्चिम बंगाल में दोहराने की कोशिश होगी। भाजपा के कार्यकर्ता तो फिलहाल चार महीने की तुलना से ही खुश हैं।

'नवीन' संभावनाएं

अप्रत्याशित अवश्य था, लेकिन अब तो जो सामने है, वही सच है। धीरे-धीरे भाजपा मुख्यालय में बैठे लगभग उन सभी नेताओं ने भी इस सच को स्वीकार कर लिया है, जिनकी नजर में स्वयं का 'दिल्ली वाला औरा' बिहार के नितिन नबीन से कहीं अधिक हुआ करता था। अब चूंकि अटकलें चल पड़ी हैं कि जल्द ही नई टीम भी बन सकती है, जिसमें युवाओं को अधिक जगह मिलने की संभावना है। ऐसे में खुद को 'वरिष्ठ' मानने वाले पदाधिकारी अब नए जतन कर 'नवीन संभावनाएं' तलाशने में जुट गए हैं। नए राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष के दफ्तर पहुंचते ही उनका स्वागत करने से लेकर स्थानीय दौरों में उनके साथ रहने तक की पूरी व्यवस्था कर दी गई है। साथ ही मौजूदा संगठनात्मक अधिकारों का प्रयोग कर नितिन नबीन का सुरक्षा घेरा इस तरह बुन दिया गया है कि उसे तोड़कर नए नेता नए कार्यकारी अध्यक्ष के सामने अपना चेहरा अधिक न चमका सकें, कान में कुछ फुसफुसा न सकें।

राजरंग

कितना बदल गया तालिबान

अफगानिस्तान की तालिबान सरकार के स्वास्थ्य मंत्री हाल ही में भारत यात्रा पर आए। उनका खूब स्वागत हुआ। वह स्वास्थ्य क्षेत्र में भारत से मदद मांगने आए थे। भारत ने इस बारे में जहां तक संभव हुआ मदद की और आगे भी ख्याल रखने का वादा किया, लेकिन तालिबान के मंत्री ने जिन-जिन भारतीय प्रतिनिधियों से बात की, वहां स्वास्थ्य सेक्टर से अधिक चर्चा पाकिस्तान की ओर से भारत और अफगानिस्तान के बीच संबंधों को खराब करने की कोशिशों पर होती रही। विदेश मंत्रालय के अधिकारी इस बात से थोड़े हतप्रभ भी थे, क्योंकि वे वैश्विक बिरादरी को यह संदेश नहीं देना चाहते थे कि मदद के बहाने भारत तालिबान के साथ मिलकर पाकिस्तान विरोधी अभियान चला रहा है। लिहाजा कई बार भारतीय अधिकारी स्वयं ही बातचीत की दिशा बदल देते थे।

विवाद की शक्ति

यूं तो कांग्रेस में हर उस व्यक्ति को थोड़ी आशंका के साथ ही देखा जाता है, जो सरकार के किसी काम की आलोचना से हिचकता हो, लेकिन दिग्विजय सिंह ने जो कर दिया, उसके बाद तो कोई भी संदेह के घेरे से बाहर नहीं रहा। उन्होंने तो उस आरएसएस की प्रशंसा कर दी, जो राहुल गांधी के निशाने पर सबसे ऊपर है। बहरहाल, कांग्रेस के अंदर भी नेताओं के बीच इस बात पर मंथन हो रहा है कि दिग्विजय सिंह ने ऐसा क्यों किया? कुछ दिन पहले ही राहुल गांधी की समझ पर भी उन्होंने परोक्ष रूप से सवाल खड़ा कर दिया था। एक सच तो यह है कि दिग्विजय सिंह अगले साल ही राज्यसभा से रिटायर हो रहे हैं। राज्य में उनकी उपयोगिता अब कांग्रेस नहीं मानती है। दूसरे राज्यों में भी वह विवादों के लिए ही जाने जाते हैं। ऐसे में यह नया विवाद कांग्रेस नेतृत्व को ही डराने के लिए तो नहीं है। उनमें इतनी शक्ति तो अभी बची हुई है ही।

पोस्ट

अब समय आ गया है कि भारत भी अमेरिका, बांग्लादेश, पाकिस्तान और पश्चिम के अन्य देशों में होने वाले धार्मिक और नस्लीय उत्पीड़न पर वार्षिक रिपोर्ट जारी करे। दुनिया का एकमात्र हिंदू-बहुल राष्ट्र होने के बावजूद हम अब तक अपनी विरासत और मूल्यों का समुचित मूल्यांकन और संरक्षण नहीं कर पाए हैं। धार्मिक असहिष्णुता के मुद्दे पर अब आईना दिखाने का वक्त आ गया है।
नवरूप सिंह@TheNavroopSingh

साल 2025 के आखिरी हफ्ते में दुनिया बारूद पर बैठी दिखाई दे रही है। रूस-यूक्रेन युद्ध अभी खत्म नहीं हुआ है। जार्डन सीरिया में एयरस्ट्राइक कर रहा है। सऊदी अरब यमन में बमबारी कर रहा है। इजरायल लेबनान में ठिकानों पर हमले कर रहा है। अमेरिका नाइजीरिया में एयरस्ट्राइक कर रहा है। कंबोडिया-थाईलैंड के बीच हमले जारी हैं। वेनेजुएला पर युद्ध का खतरा मंडरा रहा है।
मधुरेंद्र कुमार@Madhurendra13

जीवन है तो समस्याएं तो आएंगी। यह आप पर है कि आप उनका सामना हंस कर करें या रो कर।
रजत शर्मा@RajatSharmaLive

जनपथ

सीपीआई-संघ के पूर्ण हुए सौ साल,
राज कर रहा एक तो दूजा है बेहाल।
दूजा है बेहाल समय की देखो माया,
तिरुअनन्तपुर हार आखिरी किला गँवाया।
जो दल अपनी नीति बनाता हवा-हवाई,
होता उसका हाल हुई ज्यों सीपीआई!

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय :0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 163

****

कांग्रेस का मनरेगा बचाओ अभियान पांच जनवरी से

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कांग्रेस पार्टी मनरेगा की जगह जी राम जी लागू करने के विरुद्ध पांच जनवरी से देशभर में अभियान शुरू करेगी। कांग्रेस कार्यसमिति की शनिवार को बुलाई गई बैठक में यह फैसला लिया गया। पार्टी ने सरकार के इस फैसले को गरीबों का हक छीनने वाला बताया है। साथ ही कहा है कि सरकार ने जैसे विपक्षी दलों और किसानों के दबाव में तीन काले कृषि कानूनों को वापस लिया था, ठीक वैसे ही वह मनरेगा को लेकर लिए गए फैसले को भी बदलने के लिए सरकार को मजबूर करेगी।

कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक के बाद पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि सरकार शायद यह बात भूल रही है कि यदि मनरेगा नहीं होता, तो कोरोना काल में लाखों लोग मर गए होते। इसके तहत लोगों को गारंटी के साथ रोजगार मुहैया कराया गया। वहीं इससे गांवों से पलायन रोकने में मदद मिली है। लेकिन, सरकार ने अब गरीबों का हक छीनने का प्रयास किया है।

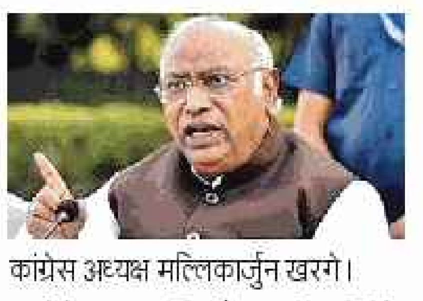
कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे।

उन्होंने बताया कि बैठक में पार्टी के सभी नेताओं ने इस बात की शपथ भी ली कि वह किसी भी कीमत पर मनरेगा की रक्षा करेंगे।

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने भी मनरेगा खत्म करने के सरकार के फैसले को संघीय ढांचे व पंचायती राज व्यवस्था को कमजोर करने का कदम बताया। बैठक में एसआइआर, वोट चोरी और अरावली संरक्षण के मुद्दे पर भी चर्चा हुई। बांग्लादेश में हिंदुओं की हत्या पर कार्यसमिति ने चिंता जताई। बैठक में पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी, हिप्र के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू, तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी, पार्टी महासचिव केसी वेणुगोपाल, जयराम रमेश, शशि थरूर, दिग्विजय सिंह शामिल थे।

विदेश नीति पर थरूर के बयान को भाजपा का समर्थन, कांग्रेस बौखलाई

नई दिल्ली, आइएएनएस: कांग्रेस सांसद शशि थरूर अपने बयानों को लेकर फिर राजनीतिक तूफान से घिर गए हैं। एक मीडिया कार्यक्रम में उन्होंने राहुल गांधी और उनके भारत विरोधी प्रचार की आलोचना करते हुए कहा था कि विदेश नीति किसी पार्टी की नहीं, बल्कि देश की होती है। उनके इस बयान का भाजपा और जदयू ने ये कहते हुए समर्थन किया कि वैश्विक मंच पर राष्ट्रीय एकता को उभारने की जरूरत है, जबकि विपक्ष प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी निशाना बनाता रहता है। वहीं कांग्रेस ने थरूर के बयान की आलोचना करते हुए सवाल भी उठाए और कहा कि उन्हें नेहरू के अपमान पर भी बोलना चाहिए।

बता दें कि शशि थरूर ने मीडिया कार्यक्रम में कहा था कि अगर एक प्रधानमंत्री की हार पर कोई राजनीतिक व्यक्ति खुशी मनाता है, तो वह एक तरह से भारत की हार का जश्न मना रहा होता है। थरूर ने देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के कथन का भी उदाहरण दिया, जिसमें उन्होंने कहा था कि अगर भारत मर गया, तो फिर जीवित कौन बचेगा।

थरूर ने राहुल गांधी के विदेश में दिए बयानों पर की थी टिप्पणी, कांग्रेस नेताओं ने दी सलाह, पीएम के गुलाम-चाटुकार न बनें

महाराष्ट्र भाजपा विधायक राम कदम ने कहा कि थरूर का बयान सच्चाई से भरा है कि प्रधानमंत्री किसी पार्टी का नेता नहीं होता, बल्कि पूरे देश का नेता होता है।

कांग्रेस संगठन की कमजोरी पर भी मुखर दिखे दिग्विजय

- कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में दिग्विजय के रुख से असहज दिखे पार्टी के वरिष्ठ नेता।
- अहमदाबाद, रायपुर व जयपुर की मंथन बैठकों के निर्णयों पर अमल न होने का मामला उठाया

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कांग्रेस कार्यसमिति (सीडब्लूसी) की बैठक शनिवार को वैसे तो मनरेगा की जगह जी रामजी शुरू करने के विरोध में देशव्यापी अभियान शुरू करने के लिए बुलाई गई, लेकिन पार्टी के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह ने जिस तरह से बैठक से पहले और बैठक के भीतर पार्टी संगठन की केंद्रीयकृत व्यवस्था पर सवाल खड़े किए, उससे न सिर्फ पार्टी के वरिष्ठ नेता असहज दिखे बल्कि सोनिया और राहुल गांधी के नेतृत्व पर भी सवाल खड़े हुए। पार्टी के वरिष्ठ नेता ने कहा कि जब तक पार्टी को निचले स्तर पर सशक्त नहीं बनाया जाएगा, तब तक पार्टी का भला नहीं हो सकता। उन्होंने अहमदाबाद, रायपुर और जयपुर में हुई मंथन बैठकों में पार्टी संगठन में बदलाव को लेकर लिए गए फैसलों पर अमल न होने का मामला उठाया।

दिग्विजय सिंह ने बैठक से पहले आरएसएस और भाजपा के संगठन की प्रशंसा की थी।

दिग्विजय सिंह

बैठक के भीतर उन्होंने कहा कि पार्टी ने राज्य व जिला स्तर के नीचे भी कमेटी गठन करने का फैसला लिया था। लेकिन अब तक यह कमेटी नहीं गठित हो पाई। साथ ही पार्टी की ओर से चुनाव प्रबंधन समिति भी बनाने का एक फैसला लिया गया था, जिस पर पार्टी का शीर्ष नेतृत्व अब चुप है। सूत्रों के अनुसार, दिग्विजय सिंह ने बैठक में इशारों-इशारों में यह भी कह दिया कि केंद्रीय स्तर पर बैठे लोग ही इसे आगे नहीं बढ़ाना चाहते। वह चाहते हैं कि पहले जैसी केंद्रीयकृत व्यवस्था बनी रहे। बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने भी पार्टी नेताओं से कहा कि 2027 में जिन राज्यों में चुनाव होने हैं, वे अभी से उन राज्यों में काम पर लग जाएं। कार्यकर्ताओं के साथ बैठकें करें। एसआइआर में यदि किसी का गलत तरीके से नाम कट गया है तो आपत्ति दर्ज कराएं। गौरतलब है कि पहले भी कई नेताओं व सदस्यों की ओर से इस तरह के सवाल खड़े किए जाते रहे हैं। लेकिन पार्टी में स्थिति जस की तस बरकरार है। अब कांग्रेस कार्यसमिति में उठे सवाल के बाद नेतृत्व पर ज्यादा दबाव होगा।

पित्रोदा के बयान पर भाजपा का कांग्रेस पर निशाना

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष सैम पित्रोदा के एक बयान ने राजनीतिक बवाल मचा दिया है। भाजपा ने दावा किया है कि सैम पित्रोदा ने साक्षात्कार में दिए बयान से कांग्रेस को बेनकाब कर दिया है, जिसमें स्वीकारोक्ति की गई है कि कांग्रेस पार्टी ग्लोबल प्रोग्रेसिव एलायंस का हिस्सा है और राहुल गांधी उस एलायंस में अध्यक्षीय पीठ के सदस्य हैं। भाजपा सांसद व राष्ट्रीय प्रवक्ता डा. सुधांशु त्रिवेदी ने आरोप लगाया है कि यह ग्लोबल प्रोग्रेसिव एलायंस भारत विरोधी वैश्विक संगठनों का नेटवर्क है। कहा कि कांग्रेस या पित्रोदा बताएं कि लोकतंत्र की आड़ में यह किन देशों का समूह है, जिनके माध्यम से भारत के लोकतंत्र को आघात पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने पित्रोदा के उस बयान का उल्लेख किया, जिसमें उन्होंने जार्ज सोरोस के लोगों से संबंधों के प्रश्न पर कहाकि 'मुझे कोई परवाह नहीं।' उन्होंने याद दिलाया कि सोनिया गांधी भी जार्ज सोरोस से वित्तीय सहायता पाने वाले फोरम फार डेमोक्रेटिक लिबर्टी की को-चेयरपर्सन हैं।

एक नजर में

नैनीताल जाने वाले वाहनों के लिए 31 तक रूट डायवर्ट

रुद्रपुर (ऊधम सिंह नगर): ऊधम सिंह नगर से नैनीताल की ओर जाने वाले दूसरे राज्यों के वाहनों के लिए 31 दिसंबर की मध्यरात्रि तक रूट डायवर्ट रहेंगे। दिल्ली-हरिद्वार से आने वाले वाहनों को टांडा तिराहा हल्द्वानी मोड़ से डायवर्ट कर नाला बाइपास तिराहा, पंतनगर से लालकुआं होते हुए नैनीताल की ओर भेजा जाएगा। खटीमा-पीलीभीत से आने वाले वाहनों को महाराणा प्रताप चौक सितारगंज से चोरगलिया होते हुए डायवर्ट किया गया है। हरिद्वार-बिजनौर और मुरादाबाद से आने वाले वाहनों को बाजपुर-बन्नाखेड़ा से कालाढूंगी होते हुए नैनीताल की ओर भेजा जाएगा। (जासं)

पुलिस की अपील, घायल माओवादियों को न दें शरण

भुवनेश्वर : ओडिशा पुलिस ने कंधमाल जिले के जंगलों में माओवादियों के खिलाफ अभियान तेज कर दिया है। पुलिस ने लोगों से अपील की है कि वे घायल माओवादियों को शरण न दें। अतिरिक्त डीजीपी (एंटी-नक्सल आपरेशन) संजीव पांडा ने बताया कि गुरुवार को हुई मुठभेड़ में 1.2 करोड़ रुपये का इनामी माओवादी गणेश उइके समेत अन्य मारे गए। घायल हुए कुछ माओवादियों के फरार होने की सूचना है, जिन्हें पकड़ने के लिए सर्च जारी है। (जासं)

हुमायूं की पार्टी अब बंगाल में 182 सीटों पर लड़ेगी चुनाव

कोलकाता : तृणमूल कांग्रेस से निलंबित विधायक और जनता उन्नयन पार्टी (जेयूपी) के संस्थापक हुमायूं कबीर ने विधानसभा चुनाव के लिए अपनी रणनीति और आक्रामक कर दी है। शनिवार को कबीर ने घोषणा की कि उनकी पार्टी अब 135 के बजाय राज्य की 182 विस सीटों पर चुनाव लड़ेगी। हुमायूं का उद्देश्य भाजपा को रोकना और तृणमूल कांग्रेस को चुनौती देना है। (राब्यू)

तेजप्रताप ने पार्टी पदाधिकारी पर दर्ज कराई प्राथमिकी

पटना : जनशक्ति जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष तेजप्रताप यादव ने अपनी पार्टी के एक पदाधिकारी के खिलाफ पटना के सचिवालय थाने में केस दर्ज कराया है। उन्होंने शिकायत में पदाधिकारी पर पार्टी की विचारधारा से अलग कार्य करने, धमकी देने और मानसिक उत्पीड़न इत्यादि का आरोप लगाया है। (जासं)

बंगाल में एसआइआर संबंधी 3,234 केंद्रों पर 4,500 सूक्ष्म पर्यवेक्षकों के निरीक्षण में शनिवार को शुरू हुई सुनवाई

बंगाल के मुख्य चुनाव अधिकारी को 'वाई प्लस' सुरक्षा

राज्य ब्यूरो, जागरण • कोलकाता : बंगाल में शनिवार से मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) के तहत सुनवाई की प्रक्रिया शुरू होते ही राज्य के मुख्य चुनाव अधिकारी (सीईओ) मनोज अग्रवाल को केंद्रीय सुरक्षा प्रदान की गई है। गृह मंत्रालय ने उन्हें 'वाई प्लस' श्रेणी की सुरक्षा दी है। सीईओ कार्यालय के सामने भी केंद्रीय बल की तैनाती कर दी गई है। मालूम हो कि तृणमूल पंथी बूथ स्तरीय अधिकारियों (बीएलओ) द्वारा पिछले कुछ दिनों से एसआइआर के विरोध में सीईओ कार्यालय के समक्ष प्रदर्शन किया जा रहा है। शनिवार सुबह 11 बजे से राज्य के कुल 3,234 केंद्रों पर करीब 4,500 सूक्ष्म पर्यवेक्षकों के निरीक्षण में सुनवाई शुरू हुई। सुनवाई केंद्रों के अंदर सूक्ष्म पर्यवेक्षकों के अलावा सिर्फ बीएलओ, चुनाव पंजीकरण अधिकारियों व सहायक चुनाव पंजीकरण अधिकारियों को प्रवेश की अनुमति थी। सुनवाई के लिए उन 32 लाख लोगों को बुलाया जा रहा है, जिनके नाम 2002 की मतदाता सूची में दर्ज नहीं है और उससे उनका कोई लिंक नहीं मिला है। 16 दिसंबर को मसौदा मतदाता सूची जारी हुई थी। सूची से 58 लाख से अधिक मृत, स्थानांतरित व फर्जी मतदाताओं के नाम हटाए गए थे।

मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) के तहत शुरू की गई सुनवाई के दौरान बंगाल के नदिया जिले के एक सेंटर पर पहुंचे लोग • पीटीआइ

अब सीएए प्रमाणपत्र भी किया जाएगा स्वीकार

बंगाल में एसआइआर से संबंधित मामलों पर शनिवार से सुनवाई शुरू होने से ठीक पहले चुनाव आयोग ने बड़ा फैसला लिया। आवश्यक दस्तावेजों के रूप में नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के तहत जारी प्रमाणपत्र को भी स्वीकार करने की घोषणा की गई है। आयोग के इस कदम से विशेषकर शरणार्थी मतुआ समुदाय के लोगों को बड़ी राहत मिलेगी। मालूम हो कि पहले आयोग द्वारा एसआइआर के लिए मांगे गए आवश्यक दस्तावेजों की सूची में सीएए प्रमाणपत्र शामिल नहीं था।

तृणमूल सांसद के परिवार को नोटिस : बारासात से तृणमूल कांग्रेस सांसद काकुली घोष दस्तीदार के परिवार के चार सदस्यों को एसआइआर संबंधी सुनवाई का नोटिस मिला है। काकुली ने आयोग पर उनके परिवार को परेशान करने का आरोप लगाया है। कहा-'मैं चार बार की सांसद हूं। मेरे दोनों बेटे सरकारी कर्मचारी हैं। उनके पिता स्वर्गीय सुदर्शन घोष दस्तीदार राज्य मंत्रिमंडल के सदस्य रहे हैं। इसके बावजूद मेरे परिवार के सदस्यों को सुनवाई के लिए बुलाया गया है। यह सिर्फ लोगों को परेशान करने की प्रक्रिया है।'

सीईओ कार्यालय की ओर से स्पष्ट किया गया कि तृणमूल सांसद के परिवार के चारों सदस्यों द्वारा भरे गए गणना प्रपत्रों के विवरण की जांच पर उनका 2002 की मतदाता सूची से लिंक नहीं मिला इसलिए सुनवाई के लिए बुलाया गया है।

डोमिसाइल के बाद अब जन्म व जाति प्रमाणपत्र भी जांच के घेरे में

राज्य ब्यूरो, जागरण • कोलकाता : बंगाल में जारी डोमिसाइल (घोषणा-पत्र) प्रमाणपत्रों के बाद अब चुनाव आयोग की जांच के घेरे में जाति और जन्म प्रमाणपत्र भी आ गए हैं। आयोग ने जाति व जन्म प्रमाणपत्र जारी करने की प्रक्रिया पर निगरानी बढ़ा दी है। मुख्य चुनाव अधिकारी (सीईओ) के कार्यालय ने राज्य सरकार से वर्ष 2011 के बाद से रद किए गए ओबीसी प्रमाणपत्रों की सूची तलब करने के साथ ही अब जिला प्रशासनों को एक महत्वपूर्ण निर्देश जारी किया है। आयोग ने विशेष रूप से उन एससी, एसटी, ओबीसी और जन्म प्रमाणपत्रों का ब्योरा मांगा है, जो बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण की घोषणा के बाद से जारी किए गए हैं।

आयोग ने सभी जिलाधिकारियों को लिखित आदेश दिया है कि इस वर्ष 24 जून से 25 दिसंबर के बीच जारी किए गए सभी दस्तावेजों का डाटा विधानसभा क्षेत्र, माह और तारीख के अनुसार तैयार करके उसे भेजा जाए।

उप्र में एसआइआर ने तोड़ी किसकी पतवार, किसका होगा बेड़ा पार

दिलीप शर्मा • जागरण

- योगी ने भाजपा के वोट कटने को लेकर किया था सचेत
- योगी के बयान के सहारे प्रदेश में माहौल बना रही सपा

लखनऊ : उत्तर प्रदेश में वर्ष 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) में गणना प्रपत्र जमा करने की अवधि पूरी होने के बाद सामने आए आंकड़ों ने दलों की धड़कनें तेज कर दी हैं। जिन 2.89 करोड़ मतदाताओं के नाम कटने जा रहे हैं, वे किसके समर्थक हैं या उनमें सबसे ज्यादा संख्या किसकी है? इन वोटों के कम होने से चुनावी वैतरणी में किसकी पतवार टूटेगी और किसका बेड़ा पार होगा, यह प्रश्न सबके मन में है। जब एसआइआर की प्रक्रिया शुरू हुई थी, तब उत्तर प्रदेश में 15.44 करोड़ मतदाता थे। आयोग के अनुसार एसआइआर में 2.89 करोड़ मतदाता अनुपस्थित, स्थानांतरित, मृत व डुप्लीकेट श्रेणी के मिले हैं। 14 दिसंबर को भाजपा के कार्यक्रम में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश में करीब चार करोड़ मतदाताओं के नाम कटने की आशंका जताते हुए कहा था कि इनमें से 80 से 85 प्रतिशत भाजपा समर्थक हैं। भाजपा को ज्यादा नुकसान होने की आशंका को इससे भी बल मिल रहा है कि जिन जिलों में सबसे ज्यादा नाम कटने का अनुमान है, उनमें से अधिकांश में भाजपा का प्रदर्शन बेहतर रहा है। योगी के बयान के सहारे सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव भी माहौल बना रहे हैं। मुख्यमंत्री पर तंज करते हुए, उन्होंने एक्स पर लिखा, बकौल 'एक वर्ग शेष' उप्र के मुख्यमंत्री जी, इसमें से 85-90 प्रतिशत उनके अपने वोटर कटे हैं। 2.89 करोड़ का अगर केवल 85 प्रतिशत भी मान लिया जाए तो उस हिसाब से प्रत्येक सीट पर 61 हजार वोट का आंकड़ा आएगा। भाजपा यदि प्रत्येक सीट पर औसतन इतने कम वोट पाएगी तो ऐसे में वह सरकार क्या बनाएगी। दहाई का अंक भी पार नहीं कर पाएगी।

गुरु गोबिंद सिंह साहस और बलिदान के प्रतीक : मोदी

प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली, प्रेट्र : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को कहा कि गुरु गोबिंद सिंह साहस, करुणा और बलिदान के प्रतीक हैं। उनका जीवन और शिक्षाएं, सभी को सत्य, न्याय, धर्म और मानव गरिमा की रक्षा के लिए प्रेरित करती हैं। प्रधानमंत्री ने एक्स पर पोस्ट कर गुरु गोबिंद सिंह जी के पवित्र प्रकाशोत्सव के अवसर पर उन्हें नमन किया। प्रधानमंत्री ने तख्त श्री हरिमंदिर पटना साहिब की अपनी यात्रा की कुछ तस्वीरें भी साझा कीं, जहां उन्होंने गुरु गोबिंद सिंह और माता साहिब कौर के पवित्र 'जोड़े साहिब' (चरण पादुका) के 'दर्शन' किए थे।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने भी गुरु गोबिंद सिंह के प्रकाश पर्व पर शुभकामनाएं दीं। उन्होंने पोस्ट किया, गुरु गोबिंद सिंह बलिदान के प्रतीक हैं। एकता, करुणा और सभी के प्रति सम्मान पर आधारित सामंजस्यपूर्ण समाज के निर्माण के लिए उनकी शिक्षाएं मानवता का मार्गदर्शन करती रहें।

मुस्लिमों के घरों पर चला बुलडोजर कर्नाटक-केरल सरकार में तकरार

बेंगलुरु, जेएनएन : कांग्रेस नीत कर्नाटक सरकार ने बुलडोजर कार्रवाई की है। बेंगलुरु में 200 से अधिक घरों को ध्वस्त करने के बाद कर्नाटक सरकार आलोचनाओं के घेरे में आ गई है। 22 दिसंबर की सुबह चार बजे कोगिलु गांव के फकीर कालोनी और वसीम लेआउट में हुई इस तोड़फोड़ से 400 लोग बेघर हो गए, जिनमें अधिकतर मुस्लिम समुदाय के हैं। बेंगलुरु सालिड वेस्ट मैनेजमेंट लिमिटेड ने यह अभियान चलाया। इस पर केरल के मुख्यमंत्री पी. विजयन ने कहा था कि कर्नाटक सरकार बेंगलुरु में मुसलमानों को बेदखल करने के लिए उत्तर प्रदेश की तर्ज पर बुलडोजर माडल का इस्तेमाल कर रही है। इस पर कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री ने शनिवार को कहा, ''यह सब एक राजनीतिक बयानबाजी है। विजयन को तथ्यों को जाने बिना हमारे राज्य के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।''

जमात-ए-इस्लामी के मुद्दे पर भाजपा का कांग्रेस-यूडीएफ पर तीखा हमला

तिरुअनंतपुरम, प्रेट्र : केरल में सत्तारूढ़ माकपा के बाद अब भाजपा ने कांग्रेस-नेतृत्व वाले यूडीएफ पर जमात-ए-इस्लामी और उसकी राजनीतिक इकाई वेलफेयर पार्टी से कथित नजदीकी को लेकर हमला बोला है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष राजीव चंद्रशेखर ने कहा कि कांग्रेस और यूडीएफ ऐसे गठजोड़ देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को खतरे में डाल रहे हैं।

भाजपा 20 जनवरी तक नवीन को नया राष्ट्रीय अध्यक्ष चुनने के लिए तैयार

- देश भर के राज्य भाजपा अध्यक्षों को 15 जनवरी के बाद बुलाया जा सकता है राजधानी दिल्ली
- राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में कार्यकाल जनवरी 2026 से 2029 तक होने की संभावना

नितिन नवीन

नई दिल्ली, एएनआइ : देश भर के राज्य भाजपा अध्यक्षों को 15 जनवरी के बाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव के लिए दिल्ली बुलाया जा सकता है। सूत्रों के अनुसार, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव की प्रक्रिया 18 से 20 जनवरी के बीच पूरी होने की उम्मीद है। नितिन नवीन को भाजपा के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किए जाने की घोषणा 20 जनवरी तक होने की संभावना है।

भाजपा शासित राज्यों में से आधे से अधिक में संगठनात्मक चुनाव प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। इन राज्यों के अध्यक्ष राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के लिए नवीन की उम्मीदवारी का समर्थन करते हुए नामांकन पत्रों का एक सेट प्रस्तुत करेंगे। दूसरा सेट भाजपा की राष्ट्रीय परिषद के सदस्यों द्वारा दाखिल किया जाएगा। सूत्रों ने बताया कि नितिन नवीन के समर्थन में प्रस्तुत नामांकन पत्रों पर प्रधानमंत्री मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के हस्ताक्षर भी होंगे।

चूंकि नितिन नवीन एकमात्र ऐसे उम्मीदवार हैं जिनके नामांकन पत्र दाखिल करने की उम्मीद है, इसलिए भाजपा के मुख्य चुनाव अधिकारी के. लक्ष्मण द्वारा नामांकन पत्रों की जांच के बाद जल्द ही उनके राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने जाने की आधिकारिक घोषणा कर दी जाएगी। भाजपा शासित राज्यों के सभी मुख्यमंत्रियों और राज्य अध्यक्षों को इस अवसर पर दिल्ली में उपस्थित रहने के निर्देश दिए गए हैं। सूत्रों ने कहा कि नितिन नवीन का राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में कार्यकाल जनवरी 2026 से जनवरी 2029 तक होगा। 2029 में लोकसभा चुनाव होने के कारण, कार्यकाल बढ़ाया जा सकता है।

समान अवसर मिलने पर महिलाएं करती हैं बेहतर प्रदर्शन : राजनाथ

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गुजरात के वलसाड जिले में श्रीमद् राजचंद्र सर्वमंगल महिला उत्कृष्टता केंद्र का किया उद्घाटन

वलसाड, प्रेट्र : रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि महिलाओं ने सिद्ध कर दिया है कि जब भी उन्हें समान अवसर मिलते हैं, तो वे पुरुषों के बराबर या उनसे भी अच्छा प्रदर्शन करती हैं। गुजरात के वलसाड जिले के धरमपुर में श्रीमद राजचंद्र सर्वमंगल महिला उत्कृष्टता केंद्र का उद्घाटन करने के बाद उन्होंने कहा कि जैन आध्यात्मिक गुरु श्रीमद् राजचंद्रजी ने अपने छोटे से जीवन में जो विरासत छोड़ी है, वह सदियों तक लोगों का मार्गदर्शन करती रहेगी। 2022 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्चुअल ढंग से केंद्र की आधारशिला रखी थी। यह 11 एकड़ में फैला है। यह महिलाओं को कौशल विकास और आजीविका में सुधार में सहायता करता है।

श्रीमद् राजचंद्र एक जैन मुनि, कवि और एक प्रमुख सुधारक थे।

कार्यक्रम में बोलते रक्षा मंत्री • एएनआइ

उनके भक्त गुरुदेव श्री राकेशजी ने एक आध्यात्मिक संगठन श्रीमद् राजचंद्र मिशन धरमपुर की स्थापना की। राजनाथ सिंह ने कहा कि मेरा मानना है कि जो महिलाएं यहां काम करेंगी, वे न केवल सशक्त होंगी बल्कि आत्मनिर्भर भी बनेंगी।

चीन ने किया जेट की रफ्तार से दौड़ने वाली ट्रेन का परीक्षण

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: चीन ने जेट विमान की रफ्तार से दौड़नेवाली ट्रेन का परीक्षण किया है। दावा है कि इस ट्रेन ने दो सेकेंड में ही 700 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार पकड़ ली। ये कुछ ऐसा है, जैसे दिल्ली से पटना की दूरी डेढ़ घंटे से भी कम समय में पूरी कर ली जाए। परीक्षण का वीडियो सामने आने के बाद यह प्रयोग दुनियाभर में चर्चा का विषय बन गया है। वीडियो में ट्रेन इतनी तेज नजर आती है कि वह पलक झपकते आंखों से ओझल होती प्रतीत होती है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, चीन की नेशनल यूनिवर्सिटी आफ डिफेंस टेक्नोलाजी के शोधकर्ताओं ने 400 मीटर लंबे विशेष मैगलेव ट्रैक पर लगभग एक टन वजनी सुपरकंडक्टिंग इलेक्ट्रिक मैगलेव वाहन का परीक्षण किया। इसे उच्चतम रफ्तार पर पहुंचाने के बाद नियंत्रित ढंग से रोका गया। शोधकर्ताओं के मुताबिक, इसमें इलेक्ट्रोमैग्नेटिक एक्सीलरेशन प्रणाली का इस्तेमाल किया गया है। परियोजना से जुड़े प्रोफेसर ली जी ने कहा कि यह उपलब्धि चीन में अल्ट्रा-हाई-स्पीड मैगलेव परिवहन के अनुसंधान और विकास को नई गति देगी।

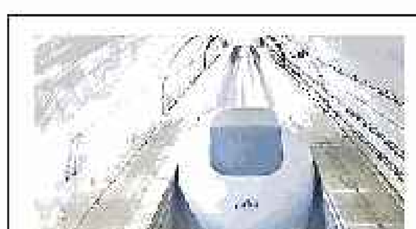
प्रतीकात्मक फोटो

- 400 मीटर ट्रैक पर परीक्षण, दो सेकेंड में पकड़ी 700 किमी प्रति घंटा की गति सुपरकंडक्टिंग मैग्नेट से मिली रफ्तार
- भविष्य के हाइपरलूप और अंतरिक्ष प्रक्षेपण तकनीक को मिल सकती है नई दिशा

अचानक कैसे इतनी रफ्तार पकड़ती है ट्रेन

मैगलेव ट्रेन की स्पीड को बढ़ाने के लिए उपयोग की जाने वाली तकनीक को इलेक्ट्रोमैग्नेटिक एक्सीलरेशन कहा जाता है। इस परीक्षण में हासिल किया गया इलेक्ट्रोमैग्नेटिक एक्सीलरेशन लगभग 97 मीटर प्रति सेकंड स्क्वायर था, जो लगभग 9.9जी बल के बराबर है। इतना अधिक बल इंसान की सहन क्षमता से परे माना जाता है। यहां तक कि लड़ाकू विमानों के पायलटों को भी 9जी तक की ही ट्रेनिंग कराई जाती है और वह भी बेहद कम समय के लिए। बताया जा रहा है कि इस ट्रेन का एक्सीलरेशन इतना ज्यादा पावरफुल है कि यह राकेट को भी लांच करने की क्षमता रखता है। इससे ईंधन की खपत कम होती है और लागत भी घटती है।

हवा से बातें करती है मैगलेव तकनीक

मैगलेव तकनीक में ट्रेन सुपरकंडक्टिंग मैग्नेट का इस्तेमाल करके ट्रैक के ऊपर तैरती है, जो इसको बिना पटरियों को छुए ऊपर उठाती है और आगे धकेलती है। घर्षण लगभग शून्य हो जाता है। इसी कारण यह पारंपरिक ट्रेनों की तुलना में कहीं अधिक तेज, शांत और किफायती मानी जाती है। सुपरकंडक्टिंग मैग्नेट बेहद कम तापमान पर काम करते हैं और बहुत मजबूत चुंबकीय क्षेत्र पैदा करते हैं, जिससे उच्च गति संभव होती है।

दुनिया में इन देशों के पास है मैगलेव तकनीक

मैगलेव तकनीक पर चीन, जापान और जर्मनी अग्रणी देश माने जाते हैं। चीन ने शंघाई में पहले ही वाणिज्यिक मैगलेव ट्रेन चला रखी है और अब अल्ट्रा-हाई-स्पीड श्रेणी में बढ़त बना रहा है। जापान की एल0 सीरीज मैगलेव ने 600 किमी प्रति घंटा से अधिक की गति का रिकार्ड बनाया है और टोक्यो-नागोया रूट पर परियोजना निर्माणाधीन है। जर्मनी ने ट्रांसरैपिड तकनीक विकसित की थी, हालांकि वहां फिलहाल व्यावसायिक संचालन सीमित है। दक्षिण कोरिया और अमेरिका भी अनुसंधान के स्तर पर इस तकनीक पर काम कर रहे हैं।

हाइपरलूप परिवहन को भी मिलेगा बल, 1000 किमी प्रति घंटा से चल सकेंगी ट्रेनें

विशेषज्ञों का मानना है कि इतनी तेज गति वाली मैगलेव तकनीक से भविष्य में दूर-दराज के शहरों को कुछ ही मिनटों में जोड़ा जा सकेगा। यह तकनीक हाइपरलूप जैसी अवधारणाओं को भी व्यावहारिक रूप देने में सहायक हो सकती है, जहां वैक्यूम ट्यूब के भीतर ट्रेनें अत्यंत तेज गति (1000 किमी प्रति घंटा) से चलेंगी। इलेक्ट्रोमैग्नेटिक एक्सीलरेशन का उपयोग राकेट व विमानों के प्रक्षेपण में किया जा सकता है, जिससे लागत कम होने की संभावना है।

स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली 'कवच' शुरू करने में दूसरी बार चूका रेलवे

- नई दिल्ली-मुंबई और नई दिल्ली-हावड़ा मार्गों पर इसके 2026 में पूरा होने की उम्मीद
- 'कवच' लोको पायलटों को निर्धारित गति सीमा के भीतर ट्रेन चलाने में मदद करती है

नई दिल्ली, प्रेट्र : रेल मंत्रालय दिसंबर, 2025 तक नई दिल्ली-मुंबई और नई दिल्ली-हावड़ा मार्गों पर स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली 'कवच' शुरू करने की दूसरी समय सीमा भी चूक गया है। हालांकि, अधिकारी 2026 तक इस प्रणाली को शुरू करने की उम्मीद कर रहे हैं। 'कवच' स्वदेशी रूप से विकसित एक स्वचालित ट्रेन सुरक्षा (एटीपी) प्रणाली है, जो तकनीकी रूप से अत्यंत उन्नत है। यह प्रणाली लोको पायलटों को निर्धारित गति सीमा के भीतर ट्रेन चलाने में मदद करती है क्योंकि यदि वे ऐसा करने में विफल रहते हैं तो यह स्वचालित रूप से ब्रेक लगा देती है।

अधिकारियों के अनुसार, लगभग 25 प्रतिशत काम पूरा हो चुका है। शेष भागों में अधिकांश पुर्जे और उपकरण लगा दिए गए हैं। अधिकारियों ने कहा, ''हम मुंबई-दिल्ली और दिल्ली-हावड़ा मार्गों पर 'कवच' प्रणाली को शुरू करने के लिए अपनी पूरी कोशिश कर रहे हैं। उम्मीद है कि यह 2026 तक हासिल हो जाएगा।''

रेल मंत्रालय ने सात अगस्त, 2024 को कहा था कि उक्त मार्ग पर 'कवच' का काम मार्च, 2025 तक पूरा हो जाएगा। एक फरवरी, 2025 को मंत्रालय ने समय सीमा को मार्च से बढ़ाकर दिसंबर, 2025 करने की घोषणा की थी। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने 17 दिसंबर को लोकसभा में 'कवच' प्रणाली शुरू किए जाने की प्रगति पर जानकारी दी थी। कांग्रेस सांसद मल्लु रवि ने दिल्ली-मुंबई और दिल्ली-हावड़ा के व्यस्ततम मार्गों पर 'कवच' 4.0 शुरू करने के लिए दिसंबर 2025 की संशोधित समय सीमा के विशिष्ट कारणों के बारे में पूछा था।

वैष्णव ने कहा, '' कवच वर्जन 4.0 को दिल्ली-मुंबई मार्ग पर पलवल-मथुरा-नागदा खंड (633 किमी) और दिल्ली-हावड़ा मार्ग पर हावड़ा-बर्दवान खंड (105 किमी) पर चालू कर दिया गया है। दिल्ली-मुंबई और दिल्ली-हावड़ा कोरिडोर के शेष हिस्सों में 'कवच' को लागू करने का काम शुरू कर दिया है।''

****

नई दिल्ली, रविवार, 28 दिसंबर, 2025

जागरण सिटी

दैनिक जागरण

दिल्ली/दक्षिणी दिल्ली

www.jagran.com

छात्रों के लिए सुविधाएं बढ़ाने का करेंगे काम : डा. ओपी शर्मा

अरुणोदय समारोह में दिखी दशममहाविद्या की महिमा

चाणक्यपुरी स्थित कथक केंद्र में शनिवार को आयोजित अरुणोदय कार्यक्रम में नृत्य की प्रस्तुति देतीं कलाकार। • हरीश कुमार

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: चाणक्यपुरी स्थित कथक केंद्र का स्वामी विवेकानंद सभागार शनिवार को शास्त्रीय नृत्य और घुंघरुओं की गूंज से सराबोर हो उठा। अवसर था भारतीय नृत्य जगत की प्रतिष्ठित ईयरबुक अटेनडांस के 25 गौरवशाली वर्ष पूरे होने का और सोच स्कूल आफ क्रिएटिव हैंड्स के सहयोग से आयोजित वार्षिक उत्सव 'अरुणोदय: अ कल्चरल सागा' का।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण ओडिसी नृत्य की भावपूर्ण प्रस्तुति रही। नर्तकों ने अपनी सधी हुई मुद्राओं और जीवंत अभिनय के माध्यम से दशमहाविद्या को मंच पर उतारा। देवी के दस रूपों के इस चित्रण ने सभागार में मौजूद दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस कलात्मक शाम का सफल निर्देशन प्रसिद्ध ओडिसी नर्तक राहुल वार्ष्णेय ने किया।

समारोह के दौरान नृत्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देने वाली विभूतियों को अटेनडांस वार्षिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डा. भूपेंद्र सचदेव, पं. हरिश गंगानी और राहुल वार्ष्णेय को यह पुरस्कार मिला। वरिष्ठ नृत्य आलोचक प्रो. आशीष मोहन खोखर ने इस अवसर पर अटेनडांस की यात्रा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह पत्रिका पिछले ढाई दशकों से भारतीय नृत्य परंपरा का सबसे विश्वसनीय दस्तावेजीकरण कर रही है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों के रूप में गुरु गीतांजलि लाल, गुरु अंबिका पणिकर और दीवाकर दास सहित अन्य गणमान्य उपस्थित रहे।

23 को आएगी नर्सरी में प्रवेश की पहली सूची

16 जनवरी को प्वाइंट सिस्टम के आधार पर बच्चों को मिले अंक पोर्टल पर जारी करेंगे स्कूल

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: राजधानी के निजी स्कूलों में नर्सरी कक्षा में प्रवेश के लिए शुरू हुई आवेदन प्रक्रिया शनिवार को समाप्त हो गई। शिक्षा निदेशालय के अनुसार इस वर्ष 1700 से अधिक निजी स्कूलों ने नर्सरी में प्रवेश के लिए आवेदन मांगे थे। आवेदन प्रक्रिया चार दिसंबर से शुरू हुई थी, जिसमें बड़ी संख्या में अभिभावकों ने अपने बच्चों के लिए आवेदन किया। दाखिला प्रक्रिया के तहत नौ जनवरी को स्कूलों द्वारा आवेदन करने वाले बच्चों का विवरण आनलाइन अपलोड किया जाएगा। इसके बाद 16 जनवरी को प्वाइंट सिस्टम के आधार पर बच्चों को मिले अंकों की जानकारी संबंधित स्कूल अपनी वेबसाइट पर जारी करेंगे। 23 जनवरी को पहली चयन सूची के साथ वेटिंग लिस्ट भी जारी की जाएगी। यदि अभिभावकों को स्कूलों द्वारा दिए गए अंकों पर कोई आपत्ति या स्पष्टीकरण देना होगा, तो इसके लिए 24 जनवरी से तीन फरवरी तक का समय तय किया गया है। दूसरी चयन सूची और वेटिंग लिस्ट नौ फरवरी को जारी की जाएगी। वहीं, दूसरी सूची को लेकर अभिभावकों की आपत्तियों के लिए 10-16 फरवरी तक का समय दिया जाएगा।

माउंट आबू स्कूल में 120 सीटों के लिए करीब 1000 आवेदन आए, जबकि मयूर विहार स्थित एक स्कूल में 80 सीटों के लिए लगभग 400 आवेदन प्राप्त हुए। हालांकि कई स्कूलों का मानना है कि बीते वर्ष की तुलना में इस बार कुल आवेदनों की संख्या कुछ कम रही है। यदि दूसरी सूची के बाद भी सीटें खाली रहती हैं, तो पांच मार्च 2026 को स्कूल शेष सीटों के लिए अंतिम सूची जारी करेंगे। शिक्षा निदेशालय ने अभिभावकों से तय समय-सारिणी का पालन करने और स्कूलों की वेबसाइट पर नियमित रूप से जानकारी देखने की अपील की है।

॥ प्रणाम ॥

प्रदर्शनी

- एकल प्रदर्शनी 'छोटी-छोटी खुशियां' का आयोजन। त्रिवेणी कला संगम। सुबह 11 बजे से शाम आठ बजे तक।

साहित्योत्सव

- जश्न-ए-अदब साहित्योत्सव का आयोजन। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र। दोपहर एक बजे।

सम्मान समारोह

- इफको साहित्य सम्मान समारोह का आयोजन। कमानी सभागार। सुबह 10.30 बजे।

दैनिक जागरण कार्यालय

स्थानीय ब्यूरो
प्यारे लाल भवन, बहादुरशाह जफर मार्ग, आइटीओ, दिल्ली

दक्षिणी दिल्ली
50, ओखला इंडस्ट्रीयल एस्टेट, फेज-3, नई दिल्ली-20

प्रिय पाठकगण,
आप एक जागरूक शहरी के रूप में दैनिक जागरण अखबार व अपने समाज की आंख व कान बन सकते हैं। अपने शहर की जिन समस्याओं, मुद्दों व बातों को जिम्मेदार लोगों तक पहुंचाना चाहते हैं, हमें बताएं। हम समाचार पत्र के माध्यम से आपकी आवाज को उन लोगों तक ले जाएंगे जो इसके लिए जिम्मेदार हैं।

संपर्क करें : 9811696820, 9305783384
ईमेल: reporter@nda.jagran.com

अगर आपको अपना प्रिय समाचार पत्र दैनिक जागरण मिलने में कोई परेशानी हो रही है तो कृपया हमें जरूर बताएं।
9773644277
8076941298

सुविधाएं देने के प्रयास नाकाफी, अब भी बहुत कुछ करना बाकी

वर्ष 2025 बीतने में अब चंद दिन ही बचे, नहीं दूर हुईं सफाई, अतिक्रमण, खस्ताहाल पार्कों, बेसहारा पशुओं व आवारा कुत्तों की समस्याएं

वर्षांत 2025 नागरिक सुविधाएं

राजधानी दिल्ली में नागरिक सुविधाओं के लिहाज से बीता वर्ष मिला-जुला रहा। वर्ष के अंत में सरकार ने 45 नई अटल कैंटीन शुरू करके निम्न वर्ग के लोगों को बड़ी राहत दी, लेकिन साफ-सफाई से लेकर सार्वजनिक शौचालयों की खराब स्थित, पार्कों की खस्ता हालत, डलाव घरों में गंदगी, बेसहारा पशुओं और आवारा कुत्तों की समस्या अब भी बनी हुई है। आवारा कुत्तों को लेकर सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद भी दिल्ली में लोगों इस समस्या से निजात नहीं मिल पाई है। वहीं, बेसहारा पशुओं का मामला खुद मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने उठाया था, लेकिन गोशालाओं की क्षमता कम होने से अब भी इन गायों व अन्य पशुओं को सड़कों से हटाना मुश्किल हो गया है। पेश है निहाल सिंह की रिपोर्ट।

कई इलाकों में स्वच्छता अभियान का नहीं दिखा असर : दिल्ली में नई सरकार आने के बाद दो माह का विशेष स्वच्छता अभियान चलाया गया। अगस्त-सितंबर और दो अक्टूबर को चले इस अभियान के दौरान प्रतिदिन 14 हजार मीट्रिक टन कचरा उठाया गया। कई इलाकों में इस अभियान का असर भी हुआ। इस अभियान में दिल्ली सरकार से लेकर नगर निगम की टीम भी उतरी, लेकिन आज भी सड़कों की हालत पहले जैसी है। आज भी सड़कों के किनारे धूल जमा रहती हैं, जो वायु प्रदूषण की वजह बनती हैं। इसके अलावा कई इलाके इससे अछूते रहे। यहां गलियों में अब भी नियमित कचरा नहीं उठता है। जगह-जगह कचरे के ढेर जमा रहते हैं। गार्बेज वर्नेबल प्वाइंट (जीवीपी) हटाने की बात हुई। कहा गया कि प्रतिदिन इन प्वाइंट पर जाकर अधिकारी निरीक्षण करेंगे। कुछ दिनों तक निरीक्षण भी चला, लेकिन हालात खास नहीं सुधरे।

ओखला फेज-टू में सड़क पर फैला कचरा और वहां घूमते बेसहारा गोवंश • जागरण

जीटी करनाल रोड पर आजादपुर मंडी के बाहर बदहाल फुटपाथ • हरीश कुमार

बंदरों, आवारा कुत्तों और बेसहारा पशुओं की समस्या बरकरार : दिल्ली में आवारा कुत्तों से लेकर बंदरों और बेसहारा पशुओं की समस्या बहुत बड़ी है। बंदरों की समस्याओं को लेकर तो अब तक स्थिति स्पष्ट नहीं है, क्योंकि दिल्ली सरकार और नगर निगम में विवाद है कि आखिर इनको कौन पकड़ेगा। बंदरों को रिहायशी इलाकों से हटाने के लिए निगम ने स्वयंसेवी संगठनों की तैनाती तो कर रखी है, लेकिन प्रतिदिन वन क्षेत्रों के आसपास के इलाकों में अब भी यह समस्या बनी हुई है। इसी प्रकार की स्थिति बेसहारा पशुओं को लेकर है। दिल्ली के अधिकांश इलाकों में सड़कों पर जगह-जगह गायों के झुंड जमा रहते हैं। इनकी वजह से दुर्घटनाएं होती हैं। गंदगी भी फैलती है। इसी तरह सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद भी आवारा कुत्तों की समस्या भी बनी हुई है।

अतिक्रमण से नहीं मिली निजात : दिल्ली में अतिक्रमण के कारण जहां जाम की समस्या पेश आती है वहीं, यह सड़क हादसों की वजह भी बनता है। कई स्थानों पर अतिक्रमण के कारण तय समय पर आपातकालीन वाहन अब भी नहीं पहुंच पाते हैं। चांदनी चौक, सदर बाजार, लक्ष्मी नगर, उत्तम नगर, कश्मीरी गेट, आजादपुर, ओखला, सीलमपुर, मुस्तफाबाद, करावल नगर, शिव विहार जगतपुरी और लाजपत नगर, सरोजनी नगर, कनाट प्लेस जैसे कई इलाके अतिक्रमण की जद में हैं। अतिक्रमणरोधी अभियान चलाए गए, लेकिन लोगों को इससे राहत नहीं मिली। अतिक्रमण के कारण ही लाल किला धमाके में ज्यादा जानमाल का नुकसान हुआ, क्योंकि वहां पर भागने तक की जगह नहीं थी।

एमसीडी ने शुरू की दो नई पार्किंग, फिर भी सड़कों पर खड़ी होती हैं गाड़ियां

एमसीडी ने इस वर्ष ग्रेटर कैलाश और पंजाबी बाग में बहुमंजिला पार्किंग की शुरुआत की, लेकिन दिल्ली में पार्किंग की समस्या अब भी बररकार है। ऐसे में अधिकांश इलाकों में अवैध रूप से लोग सड़कों के किनारे गाड़ियां खड़ी करते हैं। वहीं, रिहायशी इलाकों में एमसीडी की तरफ से पार्किंग की समस्या का अब तक निदान नहीं निकाला जा सका है। ऐसे में लोग या तो घर से दो-तीन किलोमीटर दूर अधिकृत पार्किंग में या सड़कों के किनारे अपने वाहन खड़े करने पर मजबूर हैं। इससे जाम भी लगता है। राजधानी में लगातार बढ़ती वाहनों की संख्या के अनुरूप सरकार को पार्किंग बनाने पर ध्यान देना होगा।

सार्वजनिक शौचालयों और पार्कों की हालत में खास सुधार नहीं

दिल्ली में स्वच्छता अभियान चलाने के बाद भी सार्वजनिक शौचालयों की हालत में खास सुधार नहीं हुआ है। कई इलाकों में ऐसे शौचालय गंदगी से भरे हैं। ऐसे में लोगों को इनका लाभ नहीं मिल पाता है। लुटियंस दिल्ली को छोड़ एमसीडी इलाके के अधिकांश सार्वजनिक शौचालयों की हालत बहुत खराब है। यूरिनल भी टूटे पड़े हैं। वहां पानी और लाइटिंग की पर्याप्त व्यवस्था तक नहीं है। पार्कों में भी सुधार के काफी कार्य लंबित हैं। फंड के अभाव में एमसीडी पार्कों का रखरखाव नहीं कर पा रहा है। काफी समय से लंबित एमसीडी के अनुबंध आधार पर कर्मियों की नियुक्ति हुई, लेकिन वह भी अभी पर्याप्त नहीं है। एक अनुमान के मुताबिक 15 हजार पार्कों में से एमसीडी के 3000 पार्कों की हालत काफी खराब है।

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के पास शौचालय के बाहर अतिक्रमण • जागरण

'समस्याओं के समाधान के लिए नागरिकों और निकाय को मिलकर करना होगा काम'

श्याम सुंदर अग्रवाल

यह बात सही है सफाई से लेकर बेसहारा पशुओं व आवारा कुत्तों की तरह कई समस्याएं हैं। इसके लिए नागरिक और निकाय को साथ मिलकर कार्य करना पड़ेगा। कई बार यह होता है कि संसाधन तो हैं निगम के पास लेकिन उनकी निगरानी और सदुपयोग नहीं हो रहा है। इसलिए निगम अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों को इस दिशा में गंभीरता से कार्य करना चाहिए। पशुओं को उठाने वाले वाहनों की बात पर विभाग के कर्मी अक्सर इस बात को कहते नजर आते हैं कि उनके पास वाहन नहीं है, लेकिन ऐसा नहीं है। वाहन हैं पर उनका उपयोग नहीं हो रहा है। ऐसे में विभाग को चाहिए कि वह प्रतिदिन अपनी रिपोर्ट सार्वजनिक करे कि उसने प्रतिदिन कितने बेसहारा पशु या आवारा कुत्तों को उठाया है। इससे निगरानी प्रणाली मजबूत होगी। इंदौर स्वच्छता में नंबर वन है। वह इसलिए है कि वहां नागरिक और निकाय के अधिकारियों के साथ जन प्रतिनिधि मिलकर काम करते हैं। यहां भी चाहिए कि जनता सफाई में सहयोग करें। गीला-सूखा कूड़ा अलग-अलग करें और इधर-उधर न फेंकें। निगम को भी चाहिए कि जो लोग स्वच्छता को बढ़ावा दे रहे हैं उनको प्रोत्साहित करे और जो गंदगी फैलाते हैं, उन्हें जागरूक करने के साथ जरूरत होने पर जुर्माना लगाकर दंडित भी करे। पार्किंग की समस्या बड़ी है। इसके लिए नागरिकों को भी सहयोग करना होगा। लोगों के घर में पार्किंग की सुविधा है, लेकिन देखने में आता है कि लोग सड़क पर गाड़ी खड़ी करते हैं।

-श्याम सुंदर अग्रवाल, पूर्व महापौर, दिल्ली

कल के वर्षांत में पढ़ें- वर्ष 2025 में कैसा रहा उद्योग-कारोबार का हाल।

दिल्ली को बदलने में डीडीए कर्मियों ने निभाई शिल्पकार की भूमिका : एलजी

सराय काले खां स्थित बांसेरा पार्क में डीडीए के स्थापना दिवस समारोह का दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ करते उपराज्यपाल वीके सक्सेना • सौ. उपराज्यपाल कार्यालय

जागरण संवाददाता, दक्षिणी दिल्ली : सराय काले खां स्थित बांसेरा पार्क में शनिवार को दिल्ली विकास प्राधिकरण के 69वें स्थापना दिवस समारोह का आयोजन किया गया। बतौर मुख्य अतिथि उप राज्यपाल वीके सक्सेना ने शिल्पकारों, दस्तकारों और कारीगरों के लिए अस्थायी बाजार का उद्घाटन किया। समारोह के तहत सांस्कृतिक संध्या का भी आयोजन किया गया। अलग-अलग राज्यों के कलाकारों ने लोकनृत्य की प्रस्तुति से मन मोह लिया।

उपराज्यपाल ने कहा कि डीडीए की बीते दशकों की यात्रा वस्तुतः दिल्ली के विकास की यात्रा रही है। विशेषकर पिछले कुछ वर्षों में डीडीए और उसके कर्मियों ने बदलती हुई दिल्ली के शिल्पकार के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने यमुना किनारे असिता, बांसेरा, वासुदेव घाट और यमुना वाटिका जैसे उद्यान बनाए। संजय वन, महरौली पुरातत्व पार्क, शालीमार बाग और सेंट जेम्स चर्च जैसी ऐतिहासिक विरासतों का पुनरुद्धार किया। डीडीए निरंतर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'विकसित भारत' एवं 'विकसित दिल्ली' के दृष्टिकोण के अनुरूप कार्य कर रहा है। संस्था के अध्यक्ष के रूप में मेरे लिए इससे अधिक गर्व का विषय और क्या हो सकता है कि जहां अब तक डीडीए अपना स्थापना दिवस अन्य संस्थानों या विभागों के परिसरों में आयोजित करता रहा है(वहीं इस वर्ष यह आयोजन स्वयं डीडीए द्वारा विकसित सुंदर बांसेरा उद्यान में संपन्न हुआ।

स्कूली बच्चों को कैंसर के बारे में जागरूक कर स्वस्थ भविष्य की रखी जा रही नींव

- जागरूकता फैलाने में अहम भूमिका निभा रहा डीएससीआइ
- 'कैंसर अस्पताल @ स्कूल विद पंख' नाम से चल रहा अभियान

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : स्वस्थ समाज के निर्माण और बेहतर कल की परिकल्पना के साथ दिल्ली स्टेट कैंसर इंस्टीट्यूट (डीएससीआइ) स्कूली बच्चों के बीच कैंसर के प्रति जागरूकता फैलाने की दिशा में अहम भूमिका निभा रहा है।

इसके तहत 'कैंसर अस्पताल @ स्कूल विद पंख' नामक जनजागरूकता कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इसके माध्यम से स्कूलों तक सीधे पहुंच बनाकर छात्रों को कैंसर से जुड़ी आवश्यक जानकारियां दी जा रही हैं। एक वर्ष पूर्व शुरू हुई इस पहल के अंतर्गत अब तक दिल्ली के एक दर्जन से अधिक सरकारी स्कूलों में हजारों विद्यार्थियों को जागरूक किया जा चुका है। यह कार्यक्रम कक्षा छह से 12 तक के छात्रों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, ताकि कम उम्र से ही उन्हें कैंसर की रोकथाम, प्रारंभिक पहचान और स्वस्थ जीवनशैली के महत्व को समझाया जा सके।

डीएससीआइ के निदेशक डा. विनोद कुमार के अनुसार यह एक अभिनव प्रयास है, जिसके जरिये अस्पताल स्कूलों तक पहुंचकर स्वस्थ और जागरूक पीढ़ी तैयार करने में योगदान दे रहा है। कार्यक्रम में जीवनशैली से जुड़े परिवर्तनीय जोखिम कारकों पर विशेष जोर दिया जाता है। छात्रों को गर्भाशय ग्रीवा, सिर व गर्दन, स्तन, फेफड़े और यकृत कैंसर की रोकथाम से जुड़ी जानकारी दी जाती है। प्रत्येक सत्र में संवादात्मक प्रश्नोत्तर के माध्यम से विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया जाता है। दिल्ली स्टेट कैंसर इंस्टीट्यूट का लक्ष्य इस पहल को और विस्तार देते हुए प्रति वर्ष 25 से 30 नए स्कूलों तक पहुंचाना है, ताकि शिक्षा के माध्यम से कैंसर की रोकथाम और स्वस्थ भारत की दिशा में ठोस कदम उठाए जा सकें।

कक्षा में बच्चों को कैंसर के बारे में बताते डीएससीआइ के अधिकारी • सौ. डीएससीआइ

'पंख' का अर्थ और उद्देश्य : 'कैंसर अस्पताल @ स्कूल विद पंख' नामक जनजागरूकता शामिल 'पंख' शब्द पांच प्रमुख स्तंभों पर आधारित है-रोकथाम, जागरूकता, पोषण, ज्ञान और आशा। इस पहल की परिकल्पना दिल्ली स्टेट कैंसर इंस्टीट्यूट में पाचन तंत्र रोग विभाग के सहायक प्राध्यापक डा. पंकज त्यागी ने की है। कार्यक्रम का समन्वय जनसंपर्क कार्यकारी अधिकारी रंजना कुमारी द्वारा किया जाता है, जो स्कूलों और चिकित्सकों के बीच समन्वय स्थापित कर सत्रों को सफल बनाती हैं।

ग्रेप के कारण बढ़ी गोल मार्केट संग्रहालय निर्माण की अवधि

40 प्रतिशत संग्रहालय का सिविल कार्य हो चुका है पूरा

2026 मई तक बढ़ा दी गई निर्माण की समय सीमा

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: ग्रेप के कारण बार-बार निर्माण गतिविधियों पर लग रही रोक का हवाल देते हुए नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) ने अपनी गोल मार्केट संग्रहालय की समय-सीमा बढ़ा दी है। अब इसका काम मई 2026 तक पूरा हो पाएगा। एनडीएमसी के अनुसार 40 प्रतिशत सिविल कार्य पूरा हो चुका है। उल्लेखनीय है कि एनडीएमसी ने गोल मार्केट की 100 वर्ष से अधिक पुरानी मार्केट का जीर्णोद्धार करने के लिए देश की प्रगति में योगदान देने वाली महिलाओं का संग्रहालय बनाने का कार्य अक्टूबर 2023 में शुरू किया था। इसे पहले अक्टूबर 2025 में पूरा होना था। कई कारणों से इसे मार्च 2026 तक ले जाया गया। अब मई 2026 तक कर दिया है। इसमें सब-वे का काम भी हो रहा है। संग्रहालय में प्रवेश यहीं से मिलेगा।

रसरंग

अब आप रसरंग के सभी आर्टिकल DB एप पर हर रविवार पढ़ सकते हैं। डाउनलोड करें DB एप

मुझे भय है कि तकनीक मानवीय संवाद को खत्म कर देगी और इससे दुनिया मूर्खों से भर जाएगी।
- अल्बर्ट आइंस्टीन

सोशल मीडिया और एआई के दौर में रिश्तों की परिभाषा भी बदल रही है। इसीलिए कैम्ब्रिज डिक्शनरी ने 'पैरासोशल' शब्द को 'वर्ड ऑफ ईयर' चुना है, **जो इसी बदलाव की ओर इशारा करता है।**

पैरासोशल: असल लगते आभासी रिश्ते!

कवर स्टोरी

डॉ. अनामिका पापड़ीवाल
सामाजिक विमर्शकार
एवं वरिष्ठ मनोवैज्ञानिक

साल 2025 को खत्म होने में अब सिर्फ चार दिन बाकी हैं। साल बीतने के साथ अनेक लोगों को 'वर्ड ऑफ ईयर' यानी 'वर्ष का शब्द' का इंतजार रहता है। तीन डिक्शनरियां (कैम्ब्रिज डिक्शनरी, ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी और मेरियम वेबस्टर) अपने-अपने 'वर्ड ऑफ ईयर' चुनती हैं। दरअसल, ये शब्द जाते हुए साल में जो कुछ हुआ, उसका आईना होते हैं। इस बार कैम्ब्रिज डिक्शनरी ने जिस शब्द को चुना है, वह सोशल मीडिया और मनोवैज्ञानिकों के बीच चर्चा का विषय बन गया है। शब्द है -'पैरासोशल'। यह शब्द सोशल मीडिया युग में एकतरफा भावनात्मक जुड़ाव को दर्शाता है। लेकिन चर्चा में केवल शब्द नहीं है। बहस इस बात को लेकर भी हो रही है कि इस एकतरफा भावनात्मक जुड़ाव का खामियाजा किस तरह से भुगतना पड़ सकता है।

क्या है इसका मतलब?

आखिर 'पैरासोशल' या पैरासोशल रिलेशनशिप के मायने क्या हैं? इसकी आधिकारिक व्याख्या स्वयं कैम्ब्रिज की तरफ से आई है। यूनिवर्सिटी ऑफ कैम्ब्रिज में एक्सपेरिमेंटल सोशल साइकोलॉजी विभाग की प्रो. सिमॉन स्नैल कहती हैं कि यह रियल रिलेशनशिप से एकदम अलग है। इसमें रिश्ता सोशल मीडिया, खासकर सेलेब्स के साथ जुड़ता है, वह भी आसक्ति के रूप में। आसान शब्दों में कहें तो पैरासोशल ऐसा रिश्ता है, जो केवल दिल में होता है, सामने वाले की जिंदगी में नहीं। यानी घोर काल्पनिक रिश्ता होता है और सामने वाले को तो पता ही नहीं होता कि आप उसके प्रति आसक्त हैं।

क्या यह कोई नई चीज है?

नहीं। 'पैरासोशल' शब्द की जड़ें वर्ष 1956 से जुड़ी हैं, जब अमेरिकी समाजशास्त्री रिचर्ड वोल्ह और डोनाल्ड हॉर्टन ने इसे गढ़ा था। उन्होंने सेलेब्स के साथ टीवी दर्शकों के एकतरफा संबंधों को 'पैरासोशल रिलेशनशिप' नाम दिया था। कैम्ब्रिज की प्रो. सिमॉन स्नैल भी कहती हैं कि किसी न किसी रूप में पैरासोशल रिश्ते हमेशा से मौजूद रहे हैं, क्योंकि हम हमेशा कुछ लोगों को आदर्श मानते और उन्हें फॉलो करते आए हैं। लेकिन समय के साथ इसका स्वरूप बदल गया है। आज पैरासोशल रिश्तों का सबसे चरम रूप एआई चैटबॉट्स के साथ दिखता है, जहां वास्तविक सामाजिक संबंध लगभग पूरी तरह खत्म हो जाते हैं और उनकी जगह ऐसे छद्म सामाजिक रिश्ते ले लेते हैं, जिन्हें लोग किसी हद तक सार्थक मानने लगते हैं।

50% से ज्यादा लोग सोशल मीडिया कॉन्टेंट से भावनात्मक जुड़ाव महसूस करते हैं न्यूयॉर्क पोस्ट के अनुसार।

36% लोगों ने कहा कि उन्हें कोई यूट्यूबर 'करीबी' जैसा महसूस होता है, न्यूयॉर्क पोस्ट के अनुसार।

61% किशोरों ने कहा कि वे अपने पसंदीदा सेलेब को करीबी रिश्तेदार जैसा मानते हैं, पबमेड की स्टडी के अनुसार

पैरासोशल रिलेशनशिप कितनी नुकसानदेह? और क्या हैं इसकी अच्छाइयां?

सिक्के की तरह हर चीज के दो पहलू होते हैं। पैरासोशल रिलेशनशिप भी कोई अपवाद नहीं है। विशेषज्ञ इसे खराब तो मानते हैं, लेकिन साथ ही इसके कुछ फायदे भी गिनाते हैं। **जानते हैं कि आखिर यह कितनी खराब हो सकती है और साथ ही कितनी मददगार भी:**

नकारात्मक पहलू

1. असल रिश्तों से होता है अलगाव
नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन के अनुसार पैरासोशल रिश्ते एकतरफा होते हैं। जैसे-जैसे व्यक्ति इनमें डूबता जाता है, वह वास्तविक दुनियावी रिश्तों से धीरे-धीरे कटाव महसूस करने लगता है और सामाजिक दूरी बढ़ने लगती है। ऐसे एकतरफा संबंधों पर अत्यधिक निर्भरता व्यक्ति के भीतर अकेलेपन, भावनात्मक खालीपन और सामाजिक असंतुलन को और गहरा कर सकती है।

2. आत्मसम्मान में आ सकती है गिरावट
अमेरिकी विद्वान रिचर्ड पर्लोफ की स्टडी के अनुसार चूंकि इससे ग्रस्त व्यक्ति प्रभावशाली शख्सियत के प्रति आसक्त होता है। ऐसे में लोग कभी-कभी अपने जीवन की तुलना किसी सेलिब्रिटी की 'परफेक्ट लाइफ' से कर बैठते हैं, जिससे वे खुद को कमतर महसूस कर सकते हैं। यह उनके आत्मसम्मान को गिरा सकता है।

3. कम हो सकती है प्रोडक्टिविटी
जर्नल ऑफ पॉजिटिव साइकोलॉजी एंड वेलबीइंग के अनुसार कई लोग पैरासोशल संबंधों को असल जिंदगी की कठिनाइयों से बचने का आसान जरिया बना लेते हैं। इससे असल जीवन की चुनौतियों से निपटने की क्षमता कमजोर हो सकती है। नतीजतन, ऐसे लोगों की प्रोडक्टिविटी भी कम होने लगती है।

सकारात्मक पहलू

1. पूर्वग्रह कम करने में मदद मिलती है
पबमेड सेंट्रल में प्रकाशित अन्ना मार्टिन और फर्नांडीज के एक अध्ययन के अनुसार यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म पर अपने अनुभव साझा करने वाले क्रिएटर के साथ पैरासोशल बंधन बनने से किसी समुदाय विशेष के प्रति पूर्वग्रह कम हुए। उदाहरण के लिए जब कोई क्रिएटर इस तरह की कहानी साझा करता है जो किसी वंचित तबके के बारे में होती है तो इससे दर्शकों में समझ और स्वीकार्यता की भावना बढ़ती है।

2. भावनात्मक जरूरतों की होती है पूर्ति
शबा लॉट्न के 'नेचर' में प्रकाशित अध्ययन में पाया गया है कि पैरासोशल रिश्ते लोगों की भावनाओं को समझने में उनकी मदद कर सकते हैं, खासकर जब वे रियल वर्ल्ड के दोस्तों या नजदीकी रिश्तों के साथ सहजता महसूस न कर पाए। अध्ययन में इस स्थिति को 'इमोशनल रेगुलेशन' से परिभाषित किया गया है।

3. पैदा होती है सामूहिकता की भावना
पैरासोशल रिश्ते उन लोगों को मेंटली राहत दे सकते हैं जिन्हें असल जीवन में कम्युनिकेशन के लिए पर्याप्त लोग नहीं मिलते। जब कई लोग एक ही सेलेब, चैनल या शो के प्रशंसक बनते हैं तो उस साझा अनुभव से सामूहिकता की भावना पैदा होती है। यह सामाजिक बातचीत और दोस्ती को बढ़ावा दे सकता है।

एआई चैटबॉट के साथ पैरासोशल रिलेशनशिप!

अब तक पैरासोशल रिश्तों की चर्चा सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर या सेलिब्रिटी तक सीमित थी, लेकिन एआई के आने के बाद यह रिश्ता नए मोड़ पर पहुंच गया है। प्रो. सिमॉन स्नैल के शब्दों में कहें तो एआई चैटबॉट्स आज पैरासोशल रिश्तों का सबसे चरम और जटिल रूप बन चुके हैं। एआई चैटबॉट्स यूजर से बात करते हैं, सहानुभूति दिखाते हैं और हर समय उपलब्ध रहते हैं। यही गुण उन्हें सामान्य पैरासोशल रिश्तों से अलग और ज्यादा प्रभावशाली बनाता है। लेकिन विशेषज्ञों के अनुसार एआई चैटबॉट्स के साथ बन रहे भावनात्मक रिश्ते भविष्य की बड़ी सामाजिक चुनौती बन सकते हैं, क्योंकि यहां व्यक्ति को न तो अस्वीकृति का डर होता है, न आलोचना का। हर जवाब सहमति और सहानुभूति से भरा होता है। यही बात इसे आकर्षक भी बनाती है और घातक भी।

हर हफ्ते खेलिए

भास्कर फैमिली क्विज

*हर रविवार **रसरंग** में खेलिए भास्कर फैमिली क्विज। इसमें भाग लेने के लिए यहां दिए गए **क्यूआर कोड** को स्कैन करें। वहां आपको मिलेंगे पांच सवाल।*

*या आप **8770592563** नंबर पर QUIZ टाइप करके वॉट्सअप भी भेज सकते हैं। इस पर मिले लिंक को ओपन करके दीजिए सवालों के जवाब। पांचों सवालों के सही जवाब देकर आप बन सकते हैं लकी विनर और जीत सकते हैं 2100 रु. तक के उपहार।*

भास्कर फैमिली क्विज-162 के सवाल

Q-1. इनमें से कौन सा वेद आधा गद्य और आधा पद्य में है?
(A) सामवेद (B) अथर्ववेद
(C) ऋग्वेद (D) यजुर्वेद

Q-2. मिडनाइट सन के नाम से कौन सा देश मशहूर है?
(A) फिनलैंड (B) स्वीडन
(C) डेनमार्क (D) नॉर्वे

Q-3. पौराणिक ग्रंथों के अनुसार रामायण में वर्णित जामवंत के पिता कौन हैं?
(A) शिव (B) ब्रह्मा
(C) कृष्ण (D) विष्णु

Q-4. प्रसिद्ध पुस्तक 'लहरों के राजहंस' के लेखक इनमें से कौन हैं?
(A) राजेंद्र यादव (B) मोहन राकेश
(C) निर्मल वर्मा (D) रवींद्र कालिया

Q-5. प्रसिद्ध नाबाकलेबर त्योहार इनमें से किस प्रदेश से संबंधित है?
(A) महाराष्ट्र (B) राजस्थान
(C) ओडिशा (D) मध्य प्रदेश

भास्कर फैमिली क्विज-161 के जवाब

प्रश्न 1 - सही जवाब : (B) वाल्मीकि, प्रश्न 2: (C) बेतवा, प्रश्न 3: (D) फ्रांस, प्रश्न 4: (D) गौतम, 5: (C) भरतनाट्यम।

... और लकी विनर्स

विजेंदर बेनिवाल (XXXXX37598), अरविंद बघेल (XXXXX66861), राजरंग कुमार (XXXXX96262), देवेंद्र यादव (XXXXX78015), धर्मेंद्र कुमार कौशिक (XXXXX79286), जस्मीत सिंह आवल (XXXXX26979), प्रमोद कुमार चंदोलिया (XXXXX98858), रामनरेश (XXXXX90624), संजय कुमार मिश्रा (XXXXX66712), सतीश कुमार (XXXXX67876)।

(लकी विनर्स से दैनिक भास्कर की टीम संपर्क करेगी)

हमारी दार्शनिक धारणाएं इस तरह पहुंचीं अरब

मायथोलॉजी

देवदत्त पट्टनायक

भारत और अरब के बीच व्यापार का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। लगभग चार हजार वर्ष पहले हड़प्पा सभ्यता और अरब के बीच समुद्री व्यापार होता था। उस समय नाविक पक्षियों की उड़ान के आधार पर समुद्रतट की दिशा और उससे दूरी का अनुमान लगाते थे तथा जहाजों को तट के पास रखते हुए यात्रा करते थे। इसका प्रमाण हमें हड़प्पा की मुहरों से मिलता है।

लगभग दो हजार वर्ष पहले मानसूनी हवाओं की खोज हुई। इन हवाओं की मदद से अरब व्यापारी गर्मियों में भारत और उससे आगे दक्षिण-पूर्वी एशिया तक जाते और सर्दियों में हवा की दिशा बदलने पर अरब लौट आते थे। इस समुद्री मार्ग पर यमन के सोकोत्रा द्वीप के आसपास की यात्रा अत्यंत जोखिमपूर्ण मानी जाती थी। इसी कारण समय के साथ गुजरात के समुद्रतट पर वाहनवती सिकोतर माता की पूजा प्रचलित हुई, जिन्हें जहाजों की रक्षा करने वाली देवी माना गया।

लगभग चौदह सौ वर्ष पहले अरब में एक महत्वपूर्ण घटना घटी। मक्का के एक व्यापारी ने घोषणा की कि अल्लाह ने मानवता तक अपना अंतिम संदेश पहुंचाने के लिए उन्हें अंतिम पैगंबर चुना है। वे मुहम्मद पैगंबर कहलाए। अरब समाज में अनेक महत्वपूर्ण व्यापारी महिलाएं भी होती थीं। मुहम्मद पैगंबर की पहली पत्नी भी एक सफल व्यापारी थीं।

अरब से बाहर की यात्राएं मुख्यतः पुरुष करते थे। जो नाविक केरल जाकर वहां की महिलाओं से विवाह करते, उन्हें मापलई कहा जाता था। इन नाविकों के माध्यम से भारत का पहली बार ऐसे ईश्वर की अवधारणा से परिचय हुआ, जो निराकार है और जिसका पैगाम केवल अरबी भाषा में प्राप्त होता है। यह धारणा भारतीय धार्मिक सोच से बिल्कुल भिन्न थी, जहां देवत्व अनेक रूपों में प्रकट होता है और मंदिरों में पूजा जाता है।

भारत से केवल सूती वस्त्र ही नहीं, बल्कि चीनी भी अरब देशों को निर्यात की जाती थी। वस्तुओं के साथ-साथ विचारों का भी आदान-प्रदान हुआ। पंचतंत्र और जातक कथाओं के साथ-साथ शून्य और अनंत जैसी गणितीय और दार्शनिक धारणाएं भी अरब पहुंचीं। दसवीं शताब्दी के बाद शून्य की अवधारणा अरबी व्यापारियों के माध्यम से पहली बार यूरोप तक पहुंची।

गुजरात स्थित वाहनवती सिकोतर माता का मंदिर। गुजरात के समुद्रतट पर इनकी पूजा प्रचलित हुई, जिन्हें जहाजों की रक्षा करने वाली देवी माना गया।

'अरेबियन नाइट्स' में व्यापारियों से जुड़ी अनेक कहानियां मिलती हैं, जिनमें सिंदबाद की कथा प्रमुख है। इसी संग्रह में अलादीन और उसके जादुई चिराग की कहानी भी है, जिसमें चिराग से निकलने वाला जिन्न उसकी इच्छाएं पूरी कर उसे अमीर बना देता है। ऐसी ही कथाओं में सुल्तान सुलैमान के लिए एक जिन्न पत्थर के विशाल नगरों का निर्माण करता है। सुलैमान भी अल्लाह के एक पैगंबर माने जाते थे और अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध थे। भारत में भी ऐसी ही कथाएं मिलती हैं। सुलैमान की तरह राजा विक्रमादित्य को भी बुद्धिमान, साहसी और उदार शासक माना गया है। उनके पास जादुई सिंहासन था और वेताल नामक रहस्यमय पात्र उन्हें परामर्श देता था।

ये कथाएं मध्य एशिया और पश्चिम एशिया में फैलती गईं। अरबी और फारसी संस्कृतियों के संगम से एक विशाल व्यापारिक नेटवर्क विकसित हुआ, जिसका केंद्र बगदाद था। यह नेटवर्क रोमन काल और कांस्य युग के व्यापारिक तंत्र जितना ही महत्वपूर्ण था।

प्रारंभ में व्यापारी वर्ग ने इस्लाम स्वीकार किया। उनके कारवां अक्सर लुटेरों के हमलों का शिकार होते थे जिससे उन्हें योद्धा की भूमिका भी निभानी पड़ी। समय के साथ उन्होंने स्वयं युद्ध करने के बजाय सैनिकों को भाड़े पर रखना शुरू किया। यूरेशिया के युवाओं को गुलाम बनाकर मिस्र, लेवांत, मेसोपोटामिया, फारस और मध्य एशिया के व्यापारियों को बेचा जाता था। इन योद्धाओं को मामलुक कहा जाता था। इसी प्रक्रिया से सैनिकों को भाड़े पर रखने की व्यवस्था विकसित हुई।

• devdutthindi@gmail.com

इस कॉलम को मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

हमने देखी हैं इस बदलती सदी की आखिरी मांएं!

हिन्दवी से खास

प्रणव मिश्र 'तेजस'
युवा लेखक

मैं खुद को 'मिलेनियल' या 'जनरेशन वाई' कहने का दंभ भर सकता हूं। इस हिसाब से हम दो सदियों को जोड़ने वाली वे कड़ियां हैं, जिन्होंने पैसेंजर ट्रेन में सफर किया है, छत के ऐंटीने से फ्रीक्वेंसी मिलाई है, स्नेक गेम में हाई स्कोर बनाया है, बरगदों पर लटके हैं और खून निकलने पर मिट्टी को ऐंटीसेप्टिक की तरह इस्तेमाल किया है। इतनी भाग्यशाली आंखों ने कुछ ऐसा भी देखा है जो जेनेरेशन जेड और उसके बाद वालों के लिए 'वावनुमा' हो सकता है। हमने बदलती सदी की आखिरी मांएं देखी हैं।

अम्मा, सदैव घर में कैद रहने वाली वह महिला हैं, जिन्होंने कभी आजादी के लिए कोई आंदोलन नहीं किया। सहनशीलता, इस पीढ़ी की औरतों की सबसे बड़ी विरासत है। ये औरतें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आते-आते खुद अपनी मां जैसी हो जाती हैं। प्रेम-भरी आंखों से देखने पर इनके चेहरों की बनावट भी एक-सी नजर आती है। मुझे मेरे मित्रों की मांओं ने भी उतना ही प्रेम किया है, जितना मेरी मां ने मुझसे किया, क्योंकि संबंधों में नाप-तौल की पद्धति तो इस सदी के बाद आई है। इन्होंने रोटियां तक कभी गिनकर नहीं बनाईं। कोई अतिथि इनके घर से कभी भूखा नहीं गया।

प्रगतिशील समाज ने स्त्रियों के मान-सम्मान के लिए न जाने कितने विमर्श खड़े किए लेकिन प्रगतिशीलता का वह स्तर अब तक नहीं छू पाए, जिसे हमारी अम्मा की अम्मा या उनकी सास ने वर्षों पहले ही जी लिया था।

वस्तु-हस्तांतरण भाई-बहनों के बीच हमेशा से होता रहा है। मैंने अपनी बड़ी बहन से मिली साइकिल कुछ दिनों तक चलाई है। वस्तु-हस्तांतरण, मध्यवर्गीय परिवारों की एक किफायती युक्ति है। इस युक्ति से हमारी सदी की मांएं भी अछूती नहीं रहीं। मेरी अम्मा आज भी मेरा चार-पांच साल पुराना मोबाइल बड़े चाव से चलाती हैं। मैंने कई दफा उन्हें नया दिलाने की कोशिश भी की, लेकिन नहीं। उन्हें आज भी वह पुराना, नया ही लगता है। सोचता हूं, इन्हीं मांओं को देखकर ही क्या वह वाक्य प्रचलित हुआ होगा, जिसमें कहा गया है कि 'एक कामयाब आदमी के पीछे एक औरत का हाथ होता है'। मुझे उस सहारे में इन मांओं का छिपा त्याग नजर आता है। परिवार को कम से कम में चलाने का हुनर इन्होंने ही भावी पिताओं को दिया था। इन्हीं मांओं ने अपनी इच्छाओं का गला घोंटकर न जाने कितने बेटे-बेटियों को विदेश में नौकरी दिला दी और जब भी उनके महंगे उपहारों ने इनके जीवन का बोझ और बढ़ाने की कोशिश की, तब-तब उन्होंने उन उपहारों को किसी फकीर के मानिंद बांट दिया।

सुबह सूरज को उठाकर उठना और जुगनुओं को सुलाकर सोना यही इनकी दिनचर्या का आदि और अंत है। हमें जब-जब अपनी मांएं याद आईं, वे किसी न किसी काम में लगी हुई ही याद आईं। मांओं को उनके काम से पृथक नहीं किया जा सकता। ज़िम्मेदारियों का भार ये अस्पताल के बिस्तर तक ले जाती हैं। हमारी सदी की मांओं को डिप्रेशन जैसी बीमारियां कभी छू भी नहीं पाईं। छुएं भी कैसे? मांओं के पास इस सब के लिए समय ही कहां है?

दिल्ली में अम्मा के आने पर मेरा थोड़ा-बहुत खर्च हो गया, वह भी उतना नहीं जितना किट्टी-पार्टीज में होता है। अम्मा किसी पर बोझ नहीं बनना चाहतीं। चलते-चलते उन्होंने अपने सीने से चिपकी पर्स से कुछ पैसे निकालकर मुझे देने की कोशिश की। मैंने लेने से साफ इंकार किया तो रुंधे गले से कुछ कहने की कोशिश में रोने लगीं। बहुत देर तक मेरा हाथ पकड़े रहीं। ये हाथ संसार के सबसे सुरक्षित हाथ हैं। इन्हीं हाथों की उंगलियों ने कभी हमें सहारा दिया था, चलना सिखाया था। हमारी पीढ़ी को इस बात का भी दंभ है कि हमारी परवरिश किसी नैनी ने नहीं की। हम जब भी गिरे, हमें अपना सब काम छोड़कर, उठाने के लिए हमारी मांओं ने हाथ बढ़ाया। हमने डायपर नहीं पहने। हमें कलेजे से लगाया गया और हमेशा सूखे में सुलाया गया। हमारी बीमारियों पर रात-दिन प्रार्थनाएं की गईं। मुझे लगता है हम सब इसलिए भी मौत के मुंह से बार-बार निकल आते हैं, क्योंकि हमारी मांओं ने हमारे लिए प्रार्थनाएं की हैं। मांएं अलग-अलग रूपों में बार-बार यमराज से टकराती हैं।

हिमालय-सा विशाल हृदय, धरती सदृश धैर्य, हवा समान बहाव, प्रकृति जैसी स्नेहदात्री, सदी की आखिरी मांओं के गुण हैं। अगर हमारी मांएं बहस करतीं तो रिश्तों की नींव में दीमक लग जाते।

▪ हिन्दवी के साथ विशेष अनुबंध के तहत।

मैं एक ऐसा लीडर हूं, जो हर हाल में टीम का साथ देता है। यही मेरा तरीका है, जो बहुत काम आता है।

इंस्पायरिंग **श्रेयस अय्यर**, क्रिकेटर (चोट के बाद अब फिर मैदान में वापसी को लेकर चर्चा में हैं)

तरीका आपका हो सकता है, लेकिन जज्बा टीम का हो तभी जीत मुमकिन है

मैं मानता हूं कि मैदान पर ही नहीं, कई बार मैदान के बाहर भी असली फैसले कप्तान और कोच ही लेते हैं। वजह साफ है कि टीम का हर खिलाड़ी खुश रहे, फोकस्ड रहे और उसका ध्यान सिर्फ एक चीज पर हो, वो है टीम को जिताना। जिम्मेदारी कभी एक की नहीं होती, सबकी बराबर होती है। हम एक-दूसरे पर दोष नहीं डाल सकते। आजादी देनी होगी और भरोसा भी करना होगा।

आजादी के साथ जिम्मेदारी भी आती है। अगर आप आगे बढ़कर कह सकें कि हां, गलती मेरी थी... या मैं इसकी जिम्मेदारी लेता हूं, तो हर लीडर आपको और अधिक सपोर्ट करेगा। लीडर को ऐसे लोग पसंद होते हैं जो अपनी गलती मानना जानते हैं। कुछ करने निकले हैं, तो गलतियां होंगी ही। फर्क इतना है कि जो शांत रहते हैं, वो कम गलती करते हैं और वही लंबे समय तक टिकते हैं। एक अच्छा लीडर यही शांति टीम के हर मेंबर तक पहुंचाता है।

मैं खिलाड़ियों को खुली आजादी देता हूं। मेरा कोई फेवरेट ग्रुप नहीं होता, जिनके साथ मैं अलग से बैठूं। कई बार मैं अकेले रहना पसंद करता हूं क्योंकि मैं नहीं चाहता कि बाहर से ऐसा लगे कि मैं कुछ खास खिलाड़ियों पर ध्यान देता हूं। खिलाड़ी जैसे हैं, वैसे ही मुझे पसंद हैं। मैदान के बाहर आप जैसे चाहें रहें, लेकिन मैदान पर सबका माइंडसेट एक होना चाहिए... जीत और टीम के लिए पूरी तरह समर्पित। इसके अलावा मुझे कुछ नहीं चाहिए।

जब आप टीम को इतनी आजादी देते हैं, तो वो भी समझते हैं कि लीडर हमारे साथ खड़ा है। मैं ऐसा लीडर हूं जो चाहे जैसे हालात हों, टीम का साथ देता है। मैं इन्सटिंक्ट पर फैसले लेता हूं... कई बार ऐसे आउट-ऑफ-द-बॉक्स फैसले भी जिनकी कोई कल्पना नहीं कर सकता। यही मेरा तरीका है, जो काम आता है।

मैं फैसले खुद लेना पसंद करता हूं, लेकिन सबके साथ खूब विचार भी करता हूं। सबकी राय सुनता हूं क्योंकि टीम की कामयाबी में हर किसी का इनपुट जरूरी है। दूसरों की सोच से मुझे बहुत सीखने को मिलता है। अगर किसी की बात सही लगती है, तो मैं उसे मैदान पर लागू करता हूं। आखिर में बात टीम की होती है, आपकी नहीं। आप हर बार क्रेडिट नहीं ले सकते। सभी लोग जब एक ही सोच में काम करते हैं, तो नतीजे अपने आप आते हैं। मेरे लिए बस एक बात मायने रखती है, आप मैदान पर 110% दे रहे हैं या नहीं। अगर दे रहे हैं, तो तरीका आपका हो सकता है, लेकिन जज्बा टीम का होना चाहिए।

(तमाम इंटरव्यूज में)

जीवन में डिसिप्लिन और रूटीन बहुत जरूरी हैं

अगर आप टीम में डिसिप्लिन लेकर आते हैं तो यही एक मजबूत सेटअप बनाता है। डिसिप्लिन बहुत जरूरी है। अगर सुबह नौ बजे मैच है, तो आपको पता होना चाहिए कि रात को कब सोना है। देर से सोएंगे, तो शरीर साथ नहीं देगा। शुरू में शायद ये बातें समझ नहीं आतीं, लेकिन अनुभव के साथ आपको एहसास होता है कि क्या मदद करता है और क्या नहीं। मेरे लिए रूटीन और डिसिप्लिन ने बहुत फर्क पैदा किया है।

इस प्रस्तुति को मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

लेसन्स फ्रॉम ग्रेट थिंकर्स

अतीत को जीवन का शिक्षक मानकर अपनाएं

रॉबिन शर्मा

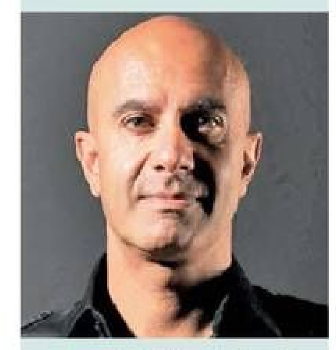

• **जन्म :** 16 जून 1964

कनाडाई लेखक हैं, जो अपनी पुस्तक 'द मॉन्क हू सोल्ड हिज फेरारी' के लिए सबसे अधिक जाने जाते हैं। 25 वर्ष की आयु तक एक वकील के रूप में भी काम किया।

- जो आप सबसे अधिक वापस पाना चाहते हैं, उसे निःस्वार्थ भाव से देना सीखिए।
- **हर चीज दो बार बनती है। पहले मन में, फिर वास्तविकता में।**
- हम सभी किसी विशेष उद्देश्य के लिए यहां हैं। अपने अतीत के कैदी न बनें, अपने भविष्य के शिल्पकार बनें।
- सबसे छोटा किया गया कार्य भी सबसे महान इरादे से बेहतर होता है।
- **मन सेवक तो बहुत अच्छा है, पर मालिक के रूप में बहुत बुरा है।**
- परिवर्तन की शुरुआत सबसे कठिन होती है, बीच का दौर सबसे उलझा हुआ होता है, अंत सबसे सुंदर होता है।
- अपने अतीत पर कभी पछतावा न करें, उसे अपने जीवन का शिक्षक मानकर अपनाएं।
- **बाहरी सफलता का कोई अर्थ नहीं, यदि भीतर सफल महसूस न करें।**
- चिंता मन की शक्ति को खत्म करती है।

सेल्फ-हेल्प : किताबों से

हर बात पर प्रतिक्रिया जरूरी नहीं होती

द आर्ट ऑफ लिविंग

विचारों पर नियंत्रण रखना ही स्वतंत्रता है

हम अकसर यह मान लेते हैं कि हमारी बेचैनी की वजह लोग या परिस्थितियां हैं। हमें परेशान घटनाएं नहीं करतीं, उन घटनाओं के बारे में हमारी सोच करती है। यदि कोई आपको अपमानित करता है, तो अपमान शब्दों में नहीं, उनको लेकर आपकी स्वीकृति में है। हर बात पर प्रतिक्रिया देना जरूरी नहीं, मानसिक स्वतंत्रता की ओर बढ़ें। **• शेरॉन लेबेल**

द इनर सिटाडेल

सच्ची शक्ति स्वयं को संतुलित रखने में है

दुनिया आपके अनुसार नहीं चलेगी। लोग आपकी निंदा करेंगे, परिस्थितियां विपरीत होंगी, योजनाएं असफल होंगी। जब आप बाहरी हालात पर नियंत्रण नहीं रख सकते, तब अपनी प्रतिक्रिया पर नियंत्रण रखें। जो अपने चरित्र को मजबूत बनाता है, वह हर तूफान में स्थिर रहता है। सच्ची शक्ति स्वयं को संतुलित रखने में है। **• पियरे हडोट**

सेल्फ कम्पैशन

स्वयं को समझना किसलिए जरूरी है

हम अकसर स्वयं से वैसा व्यवहार नहीं करते, जैसा हम अपने प्रिय लोगों से करते हैं। स्वयं के प्रति उदार होना कमजोरी नहीं, भावनात्मक परिपक्वता है। जब आप अपनी कमियों को स्वीकारते हैं, तब उनसे सीख पाते हैं। आत्म-करुणा सिखाती है कि आप अपूर्ण होकर भी मूल्यवान हैं। स्वयं को समझें और स्वीकारें। **• क्रिस्टिन नेफ**

यू आर नॉट योर थॉट्स... अपने मन को ज्यादा गंभीरता से नहीं लेना चाहिए

हमारे मन में हर दिन हजारों विचार आते हैं। लेकिन हर विचार सच नहीं होता। फिर भी हम उसे सच मान लेते हैं। 'मैं योग्य नहीं हूं', 'मैं असफल हो जाऊंगा', 'लोग मेरा मजाक उड़ाएंगे'- ये केवल विचार हैं, तथ्य नहीं। समस्या तब शुरू होती है जब हम इन विचारों को अपनी पहचान बना लेते हैं। जब आप यह समझ लेते हैं कि आप अपने विचार नहीं हैं, उन्हें देखने वाले हैं, तब डर की पकड़ ढीली पड़ती है। मन को शांत करने का सबसे सरल तरीका है उसे ज्यादा गंभीरता से न लें। **• एमी जॉनसन**

टिप्स निगेटिव फीडबैक के पीछे छिपे सच को पहचानना हम सभी के लिए जरूरी है...

कठोर आलोचना का सामना कैसे करें

हार्वर्ड बिज़नेस रिव्यू

Harvard Business Review

हममें से अधिकांश ने अपने जीवन में कभी न कभी 'फीडस्मैक' का अनुभव किया है। किसी मीटिंग के बीच, गलियारे में यूं ही चलते समय या परफॉर्मेंस रिव्यू के दौरान कोई व्यक्ति अचानक ऐसे शब्द कह देता है, जो हमारे मानसिक संतुलन को हिला देते हैं। कई लोग आज भी वर्षों पहले मिली किसी कठोर टिप्पणी से प्रभावित रहते हैं। निगेटिव फीडबैक चाहे जिस तरीके से दिया गया हो, उसमें छिपे सत्य को पहचानना हम सभी के लिए जरूरी है। जब अगली बार कठोर प्रतिक्रिया आपको अचानक चौंका दे, तो ये चार कदम आजमाएं :

1) स्वयं को संभालें और मूल भावनाओं से समझें

गहरी और धीमी सांसें लेना आपको यह याद दिलाता है कि आप पूरी तरह से सुरक्षित हैं। अपनी भावनाओं पर ध्यान दें। क्या आप आहत महसूस कर रहे हैं, डरे हुए हैं, शर्मिंदा हैं या लज्जित महसूस कर रहे हैं? जितना आप इन मूल भावनाओं को समझेंगे, उतना ही कम आप गुस्सा, बचाव की भावना या डर जैसी प्रतिक्रियाओं में कभी उलझेंगे। अभी से ही स्वयं को संभालना शुरू करें।

2) बात समझने की कोशिश करें, सवाल पूछें

जिज्ञासु बने रहें। हमेशा सवाल पूछें और उदाहरण भी मांगें। उसके बाद केवल सुनें। कही जा रही बातों से स्वयं को पूरी तरह अलग रखें। उसमें खुद को उलझा न लें। इससे आप तुरंत ही मूल्यांकन करने की जरूरत से भी बच सकते हैं। जो बोला जा रहा है उसे समझने की कोशिश करें। लेकिन उसे अपने आप पर हावी मत होने दें। सवाल पूछना बंद न करें। हर हाल में सवाल पूछना जरूरी है।

3) प्रतिक्रिया न दें, खुद को संभलने का समय दें

फीडबैक मिलने के बाद उस बातचीत से पूरी तरह बाहर निकल जाएं। हो सके तो यह स्पष्ट करें कि आपको सोचने के लिए कुछ समय चाहिए होगा। इसके बाद आप खुद को संभलने की अनुमति भी दें। सरल शब्दों में कहें कि मेरे लिए यह बहुत जरूरी है कि मैं इसे सही तरीके से समझूं। मुझे थोड़ा समय और चाहिए। मैं थोड़ा सोच-विचार कर आपको अपनी स्पष्ट प्रतिक्रिया बता सकता हूं।

4) कमियां निकालने के बजाय सच्चाई खोजें

जो कहा गया, उस पर विचार करें। फीडबैक में कमियां ढूंढने के बजाय सच्चाई खोजें। संदेश को ध्यान से परखें, जब तक उसमें छिपा सच न मिले। उस व्यक्ति से दोबारा बात करें। यह स्वीकार करते हुए कि आपने क्या सुना, क्या स्वीकार किया और आगे क्या करना है। जब आप सामने वाले की स्वीकृति की चाह के बिना अपनी बात रखेंगे, तो आपको बचाव की जरूरत नहीं पड़ेगी।

रसरंग

अभिनेता सलमान खान ने शनिवार को पूरे किए अपने जीवन के 60 वसंत

सावन कुमार के संकटमोचक बने थे सलमान

मेरे हिस्से के किस्से

रूमी जाफरी
बॉलीवुड फिल्मों के लेखक, निर्देशक

कल सलमान खान की सालगिरह थी। तो मुझे उनके साथ पिछले तीस सालों का सफर याद आने लगा। बहुत-सी बातें, बहुत से किस्से मन में उमड़ने लगे तो सोचा कि कुछ आपसे भी साझा करूं।

एक बार मैं और सलमान घर पर बैठे थे। मैं उठकर जाने लगा तो सलमान ने कहा, 'रूमी भाई, रुको।' उन्होंने एक हीरो का नाम लिया (जिसका नाम लिखना मैं उचित नहीं समझता) और कहा कि वह आने वाला है। मैंने कहा, 'ठीक है, फिर आप उसके साथ बैठो, मैं जाता हूं।' वो बोले, 'नहीं नहीं, आप बैठो। मुझे नहीं पता कि वह किस बात के लिए आ रहा है। आप भी सुनो कि किस काम से आ रहा है।' खैर, मैं रुक गया।

थोड़ी देर में वह हीरो आया। आकर मिला, बैठा और सलमान से बोला, 'ब्रदर, मुझे तुमसे एक एडवाइस चाहिए। मैं बहुत टेंशन में हूं।' सलमान ने कहा, 'बोलो, क्या टेंशन है?' वह बोला, 'मेरी पिछली दो चार फिल्में नहीं चलीं। मैं डर गया हूं, इसलिए पिछले आठ महीने से मैंने कोई फिल्म साइन नहीं की।' सलमान ने पूछा, 'मुझसे क्या चाहते हो?' वह बोला, 'बस इतना बता दो कि तुम फिल्में कैसे चुनते हों, ताकि मैं भी साइन करते वक्त उस बात का ध्यान रखूं।'

सलमान बोले, 'देखो, एक फिल्म साइन करते वक्त कभी दिल बोलता है कि अरे कर लो यार, इतना पुराना दोस्त है, इतना अच्छा आदमी है, कर लो यार। आप फिल्म कर लेते हो और वह फ्लॉप हो जाती है। फिर एक फिल्म के लिए दिमाग बोलता है कि प्रोड्यूसर की पिछली दो तीन फिल्में ब्लॉकबस्टर हैं, डायरेक्टर बहुत बड़ा है, म्यूजिक कमाल का होगा, मेकिंग जबरदस्त होगी, कैमरामैन बड़ा है, हीरोइन बड़ी है, सब चीजें अच्छी हैं, यह फिल्म तो साइन करनी ही चाहिए। आप फिल्म साइन करते हो और वह भी फ्लॉप हो जाती है। इसलिए ज्यादा सोचना नहीं चाहिए, ज्यादा दिमाग नहीं लगाना चाहिए। जो दिल बोले, जो काम आए, वही करते रहना चाहिए।'

'मुझसे शादी करोगी' फिल्म के मशहूर गाने 'जीने के हैं चार दिन, बाकी हैं बेकार दिन...' में सलमान खान।

वह हीरो खामोशी से सलमान को देखता रहा। फिर सलमान उठकर बाथरूम चले गए। वह हीरो मेरे पास आया और बोला, 'यह मुझे गाइडेंस दे रहे थे या मेरी खिंचाई कर रहे थे?' मैंने कहा, 'नहीं, वह बिल्कुल सही बात कर रहे थे, क्योंकि सलमान ऐसे ही फिल्म करते हैं।'

इसकी मैं आपको एक और मिसाल देता हूं। एक बार मैं, सलमान और उनके एक दोस्त गार्डन में बैठे थे। तभी सलमान की फर्स्ट फ्लोर वाली बालकनी से सावन कुमार जी नजर आए। उन्होंने सलमान को देखा और हाथ हिलाया। सलमान ने उन्हें अपने पास बुला लिया। मैंने सलमान से पूछा, 'ये क्यों आए हैं?' वह बोले, 'ये एक नए लड़के को लेकर फिल्म बना रहे हैं। कह रहे हैं कि तुम इसमें पांच-छह दिन का काम कर लो तो फिल्म बिक जाएगी, वरना उनका ऑफिस बिक जाएगा।' साथ बैठे दोस्त ने मना करते हुए कहा, 'भाई, किसी भी तरह इस फिल्म को टाल देना। यह आपके लिए सही नहीं रहेगी।' यह कहकर वह दोस्त चला गया।

सावन जी आ गए। सलमान और मैं खड़े हो गए। सलमान उनके गले मिले और बोले, 'सावन जी, मुझसे छोटा सा रोल करवा लोगे तो आपकी फिल्म तो बिक जाएगी। लेकिन आप एक काम और कर सकते हैं। एक गाना भी मुझसे करवा लीजिए तो आपका म्यूजिक और अच्छे दाम में बिक जाएगा।' मैं और सावन जी सलमान को देखते रह गए। सलमान एहसान भी ऐसे करते कि किसी को अहसास तक नहीं होता कि उन्होंने किसी पर एहसान किया है। इसी बात पर मुझे कैसर-उल-जाफरी का एक शेर याद आ रहा है :

जो डूबना है तो इतने सुकून से डूबो
कि आस-पास की लहरों को भी पता न लगे

मैंने सलमान खान के साथ बारह फिल्में की हैं। मेरी पहली फिल्म बतौर डायरेक्टर भी सलमान के साथ ही थी। मेरा उनसे और उनके परिवार से रिश्ता काम से ज्यादा पारिवारिक रहा है। मैं सलमान को बहुत करीब से जानता हूं। इतना बड़ा सुपरस्टार होने के बाद भी सलमान ने कभी अपनी पर्सनल लाइफ में, घर में या बाहर यह अहसास नहीं होने दिया कि वो इतने बड़े सुपरस्टार हैं। सच कहूं तो सलमान का पूरा फिल्मी सफर आपके सामने है। उन्होंने कभी फायदा-नुकसान, छोटा-बड़ा देखकर फिल्म नहीं की। हमेशा दिल की सुनी। शायद इसी वजह से आज वो पूरी दुनिया के दिलों पर राज कर रहे हैं। कल सलमान साठ साल के हो गए, लेकिन आज भी वे इतने फिट हैं, इतने जवान दिखते हैं कि अच्छे-अच्छे यंग हीरो उनके सामने फीके लगते हैं।

इसी बात पर आप मेरी और सलमान की फिल्म 'मुझसे शादी करोगी' का यह गाना सुनिए, अपना खयाल रखिए और खुश रहिए : *जीने के हैं चार दिन, बाकी हैं बेकार दिन...*

• rumyjafrywrites@gmail.com

लेखक-प्रकाशक के पास सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित पूर्वानुमति के बिना इस लेख के किसी भी हिस्से को ना तो पुनः प्रकाशित किया जा सकता है, ना ही किसी तरह का व्यावसायिक इस्तेमाल कियाजासकताहै।

'मेरे हिस्से के किस्से' कॉलम को अपने मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

सर्दियों में फायदा करेगी ये गोल्डन एनर्जी बार

रीडर रेसिपी कॉन्टेस्ट

मंजुला गंगराडे
फ्रीलांस राइटर
नई दिल्ली

भेजिए रेसिपी और जीतिए 5,100 रु. का गिफ्ट

इस कॉलम में आप भी अपनी रेसिपी भेजकर हर सप्ताह जीत सकते हैं **5,100 रु.** मूल्य का गिफ्ट। इसके लिए **QR कोड** को स्कैन कीजिए और लिख भेजिए अपनी रेसिपी। साथ में अपना नाम, प्रोफेशन, फोटो, डिश की तस्वीर जरूर भेजें।

सर्दियों में अक्सर कुछ मीठा खाने का मन करता है। ऐसा मीठा जो स्वादिष्ट हो, स्वास्थ्यवर्धक हो और जिसे रोज बनाने की मेहनत न करनी पड़े। बस एक बार बनाकर रख दिया जाए और प्रतिदिन सेवन किया जा सके। तो आइए आज कुछ ऐसी ही एनर्जी बार बनाते हैं।

बनाने की सामग्री :

गुड़ 500 ग्राम, गोंद 50 ग्राम, बादाम 100 ग्राम, छुआरे 100 ग्राम, कसा हुआ सूखा नारियल 50 ग्राम, देसी घी 150 ग्राम, खसखस 20 ग्राम, सोंठ 1 छोटा चम्मच, अजवाइन 2 छोटे चम्मच, सफेद तिल 2 बड़े चम्मच।

बनाने की विधि :

- गोंद को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ लीजिए। इसी तरह बादाम के भी छोटे टुकड़े कर लीजिए। छुआरों के बीज निकालकर उन्हें भी छोटे टुकड़ों में काट लीजिए। गुड़ को बारीक काट लीजिए। एक थाली पहले से घी लगाकर तैयार कर लीजिए।
- अब एक कड़ाही में थोड़ा-सा घी गर्म करें। सबसे पहले बादाम के टुकड़ों को हल्की आंच पर भूनकर निकाल लीजिए। अब बाकी घी कड़ाही में डालकर आंच तेज कर दीजिए। थोड़ा-थोड़ा करके इसमें गोंद के टुकड़े डालकर उन्हें अच्छी तरह फूलने दीजिए। इसी तरह सारे टुकड़े घी में फुलाकर और निकालकर अलग रख लीजिए।
- कड़ाही में बचे हुए घी में बारीक कटा हुआ गुड़ डालिए। आंच को मध्यम रखें। जैसे ही गुड़ पिघलने लगे और छोटे बुलबुले उठने लगे, उसमें खसखस, सोंठ, तिल और अजवाइन डालकर मिला लीजिए। साथ ही बादाम, गोंद, कसा हुआ नारियल और छुआरे भी डाल दीजिए। गैस बंद कर दीजिए।
- सारे मिश्रण को जल्दी से अच्छी तरह मिला लीजिए और पहले से घी लगी हुई थाली में तुरंत फैला दीजिए। लगभग 15 मिनट बाद तेज धार वाले चाकू से मनचाहे आकार के टुकड़ों में काट लीजिए। इन्हें स्टोर करके इनका रोज सेवन किया जा सकता है।

तारे-सितारे

मनीष शर्मा
ज्योतिषाचार्य

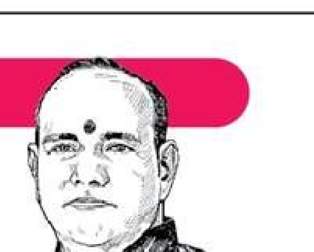

यह इस वर्ष का अंतिम सप्ताह रहेगा। नए वर्ष ज्येष्ठ का अधिक मास आएगा। अंक ज्योतिष के अनुसार इस वर्ष के स्वामी सूर्य रहेंगे, अत: इस वर्ष कोई बड़ी जनहानि होने की संभावना नहीं है। यह सप्ताह व्यापारियों के लिए उत्तम रहेगा।

• jyotish.sansar@gmail.com

मेष

रविवार को मानसिक परेशानी रहेगी। सोम एवं मंगल को प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। सफलताएं मिलेंगी एवं आय में भी वृद्धि होगी। बुध एवं गुरुवार को भाग्य मजबूत रहेगा। शुक्र एवं शनिवार से धन की प्राप्ति सुगम होगी।

वृषभ

प्रथम दिन समस्याओं का अंत होगा। सोमवार की शाम से व्यय की अधिकता होगी। बुध से लेकर शुक्रवार तक सफलतादायक समय रहेगा। आय वृद्धि के साथ सहयोग प्राप्त होगा। शनिवार का दिन भी पक्ष का रहेगा।

मिथुन

रविवार को दशम चंद्र से धन की आवक अच्छी बनी रहेगी। सोमवार की शाम से धन की प्राप्ति होगी। बुध की शाम से शुक्रवार की शाम तक परेशानियां आ सकती हैं। शनिवार सुखमय रहेगा। सहयोग मिलेगा।

कर्क

आज आय तो प्राप्त होगी, किंतु परेशानियां कम नहीं हो पाएंगी। सोम एवं मंगलवार को कार्य की अधिकता होगी। बुध एवं गुरुवार को शत्रु नाकाम होंगे। शुक्र एवं शनिवार को चिंता, अपमान एवं भय बना रहेगा।

सिंह

रविवार को आय संबंधी व्यवधान होंगे। सोम एवं मंगलवार से इसमें सुधार दिखाई देगा। बुध एवं गुरुवार को सफलता प्राप्त होगी। आय में वृद्धि एवं कार्य में तेजी रहेगी। शुक्र एवं शनिवार को धन प्राप्ति का योग है।

कन्या

आज अटके धन की प्राप्ति होगी। सोम एवं मंगलवार को मित्रों से संभलकर रहें। धन की कमी रहेगी। बुध एवं गुरुवार को भाग्य अनुकूल रहेगा। शुक्र एवं शनिवार का दिन भी अच्छा रहेगा। धन की प्राप्ति होगी।

तुला

रविवार को चिंताएं अधिक होंगी। योजनाएं खराब हो सकती हैं। सोम एवं मंगलवार को समय पक्ष का रहेगा। बुध एवं गुरुवार को पुनः संभलकर रहना होगा। शुक्रवार एवं शनिवार को दिन अच्छा व्यतीत होगा।

वृश्चिक

आय उत्तम बनेगी। मंगल एवं बुधवार को परिवार में किसी से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। गुरु एवं शुक्रवार को योजनाएं सफल होंगी। आय में वृद्धि होगी। शनिवार को सतर्क रहें। कीमती सामान की रक्षा करें।

धनु

रविवार को चतुर्थ चंद्र होने से उत्साह में कमी रहेगी। सोम एवं मंगलवार से आय में वृद्धि होने की संभावना है। बुध एवं गुरुवार को चिंताएं रहेंगी। शुक्र एवं शनिवार को खुशी का समाचार मिलेगा। धनागमन होगा।

मकर

आज समस्याओं का निदान होगा। सोम एवं मंगलवार को मन खिन्न रहेगा। बुध एवं गुरुवार को विवादों में विजय प्राप्त होगी। शुक्र एवं शनिवार को आरोप लग सकते हैं। अनावश्यक परेशानियां आ सकती हैं।

कुंभ

रविवार को आत्मविश्वास बढ़ेगा। सोम एवं मंगल को सैर पर जाने का मौका मिलेगा। बुध एवं गुरुवार को कुछ परेशानियां रह सकती हैं। आय में कमी हो सकती है। शनिवार उत्तम दिन रहेगा। सहयोग मिलेगा।

मीन

रविवार को आरंभ जोरदार होगा। सोम एवं मंगलवार भी अनुकूल रहेंगे। बुध एवं गुरुवार को स्वयं के प्रयासों से सफलता प्राप्त करेंगे। शुक्र एवं शनिवार को आय में कमजोरी आ सकती है। परिवार में एकता रहेगी।